श्रीः ।

दुर्गासप्तशती ।

(कवचार्गलाकीलकप्रयोगविधिसहिता)

लघुजवणायचाग्रामनिवासिश्रीमत्पण्डितबदरीप्रसाद-
शास्त्रितनूजनिपण्डितमश्रीरामशास्त्रिविरचितया

शान्तनवीटीकानुसारिण्या भाषाटीकया

समलंकृता ।

Sa2Sk DUR/M49

सेयं

खेमराज श्रीकृष्णदासइत्यनेन

मुंबय्यां

स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणालये

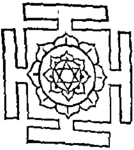
मुद्रयित्वा प्रकाशिता ।

संवद् १९५० शके १८१५

अस्य ग्रंथस्य पुनर्मुद्रणादयोऽधिकाराः १८६७ तमवार्षिक२५
तमराजनियमानुसारेण प्रकाशकाधीनाःसति ।

अथ भुवनेश्वरी।





पुस्तकमिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास.

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापखाना-मुंबई.

श्रीः ।

अथ सप्तशतीस्थविषयानुक्रमणिका ।

शप्तशतीप्रारंभः ।

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता।

पुस्तकमिलनेकाठिकाना–

खेमराज श्रीकृष्णदास

श्रीवेंकटेश्वर छापाखाना (मुंबई.)

श्रीः।

अथ प्रयोगविधिः।

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ प्रयोगान्तराणि कात्यायनीतन्त्रोक्तानि ॥ प्रतिश्लोकमाद्यन्तयोः प्रणवंजपेन्मन्त्रसिद्धिः ॥ १ ॥ अग्रे सर्वत्र श्लोकपदं मन्त्रोपलक्षणं ॥ सप्रणवमनुलोमव्याहृतित्रयमादौ अन्तेतुविलोमंतदित्येवं प्रतिश्लोकं कृत्वा शतावृत्तपाठेऽतिशीघ्रं सिद्धिः ॥ २ ॥ प्रतिश्लोकमादौजातवेदस इत्यृचंपठेत्सर्वकामसिद्धिः ॥ ३ ॥ अपमृत्युवारणाय त्र्यंबकमन्त्रंपठेत्॥ आदावन्तेचशतमित्यर्थः॥प्रतिश्लोकंतन्मन्त्रजपइत्यन्यत्र ॥४॥ प्रतिश्लोकंशूलेनपाहिनो देवीतिपाठादपमृत्युनाशः अस्यकेवलस्यापि श्लोकस्यलक्षमयुतंसहस्रंशतं वाजपे अपमृत्युवारणम् ॥ ५ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ अथ प्रयोगान्तराणाङ्कात्यायनीतन्त्रोक्तानाम्भाषाटीकेयम् ॥ सप्तशतीके पाठ करनेमें मन्त्रमन्त्रके आदि अन्तमें जो ॐकार पढे तो जिसमन्त्रकी सिद्धिचाहै उसी मन्त्रकी सिद्धिहोय ॥ १ ॥ और जो भूर्भुवः स्वः इसप्रकार सुलटे क्रमसे ॐकारसहित तीन व्याहृति मन्त्रमन्त्रके आदिमें पढे और अन्तमें स्वःभुवर्भूः इसप्रकार उलटे क्रमसे पढे ऐसे सप्तशतीके शत १०० पाठ करनेसे तत्काल कार्य्यकी सिद्धिहोय ॥ २ ॥ और जो सप्तशतीके पाठ करनेमें मन्त्रमन्त्रके आदिअन्तमें जातवेदसे इस ऋचाको पढे तो सब काम सिद्धहोय ॥ ३ ॥ और अकाल मृत्यु हटानेके लिये सप्तशती पाठके आदि अन्तमें त्र्यम्बकंयजामहे इस मन्त्रको शत १०० शत १०० जप करे अथवा मन्त्रमन्त्रके प्रति पढे तो अकालमृत्यु हटे ॥ ४ ॥ और जो सप्तशती पाठमें मन्त्रमन्त्रके प्रति शूलेनपाहिनोदेवि इस मन्त्रको पढे अथवा इस केवल मन्त्रका लक्ष १००००० अथवा दशहजार १०००० अथवा हजार१००० अथवा शत १०० जपकरे तौभी अकाल मृत्यु हटताहै॥५॥

प्रतिश्लोकं शरणागतदीनार्त्तेति श्लोकंपठेत्सर्वकार्यसिद्धिः ॥६॥ प्रतिश्लोकंकरोतुसानः शुभेत्यर्द्धंपठेत्सर्वकार्य्यसिद्धिः ॥ ७ ॥ स्वाभीष्टवरप्राप्तये एवंदेव्यावरंलब्ध्वेति श्लोकंपठेत् ॥८॥ सर्वापत्तिवारणायप्रतिश्लोकंदुर्गेस्मृतेतिपठेत् ॥अस्यकेवलस्यापिश्लोकस्यकार्य्यानुसारेण लक्षमयुतंसहस्रंशतंवाजपः ॥ ९ ॥ सर्वाबाधेत्यस्यलक्षजपेप्रतिश्लोकपाठेवाश्लोकोक्तम्फलम् ॥ १०

टीका—और जो सप्तशतीके पाठ करनेमें मन्त्रमन्त्रके प्रति शरणागत दीनार्त्त इस मन्त्रको पढे तो सम्पूर्ण कार्य सिद्धिहोय ॥ ६ ॥ और जो करोतुसानःशुभहेतुरीश्वरीशुभानिभद्राण्यभिहन्तुचापदः इस अर्द्धमन्त्रको सप्तशतीपाठमें मन्त्रमन्त्रके प्रति पढे तो सम्पूर्ण कार्य्यकी सिद्धिहोय ॥ ७ ॥ और मनोवांछित वरकी प्राप्तिके लिये मन्त्रमन्त्रके प्रति एवं देव्यावरंलब्ध्वा इस मन्त्रको पढे ॥ ८ ॥ और सम्पूर्ण आपत्तिनिवारणके लिये मन्त्रमन्त्रके प्रति दुर्गेस्मृता इस मन्त्रको पढे अथवा इस केवल मन्त्रका जैसा कार्य्य होय तिसके अनुसार लक्ष १००००० अथवा दशहजार १०००० अथवा हजार १००० अथवा शत १०० जपकरना उचितहै ॥ ९ ॥ और सर्वाबाधाविनिर्मुक्त इस मन्त्रका लक्ष १००००० जप करनेसे अथवा इसको सप्तशतीके पाठमें मन्त्रमन्त्रके प्रति पढनेसे धन धान्य पुत्र इनकरिके युक्त मनुष्य होताहै ॥ १० ॥

इत्थंयदायदाबाधेति प्रतिश्लोकजपेमहामारीशान्तिः ॥ ११ ॥ ततोवव्रेनृपोराज्यमिति मन्त्रस्यजपेपुनःस्वराज्यलाभः॥१२॥ हिनस्तिदैत्यतेजांसि इत्यनेनसदीपबलिदाने घण्टाबन्धने च बालग्रहशान्तिः ॥ १३ ॥ आद्यावृत्तिमनुलोमेनपठित्वा ततोविपरीतक्रमेण द्वितीयामनुलोमेन ॥ तृतीयामित्येवमावृत्तित्रयेण शीघ्रङ्कार्य्यसिद्धिः ॥ १४ ॥ सर्वापत्तिवारणाय दुर्गेस्मृतेत्यर्द्धंततोयदंतियच्च दूरकेइत्यृचं तदन्तेदारिद्र्यदुःखेत्यर्द्धमेवङ्कार्यानुसारेणलक्षमयुतंसहस्रंशतंवाजपः ॥ १५ ॥

टीका—और सप्तशतीके पाठमें मन्त्र मन्त्रके प्रति इत्थंयदायदाबाधादानवोत्थाभविष्यति इस मन्त्रको पढनेसे महामारी शांत होय ॥ ११ ॥ और सप्तशतीके पाठमें जो मन्त्र मन्त्रके प्रति 'ततोवव्रेनृपोराज्यम्०' इस मन्त्रको जपे तो गयाहुवा अपना राज्य फिर मिले ॥ १२ ॥ और 'हिनस्तिदैत्यतेजांसि' इस मन्त्रकरिके भगवतीके अर्थ दीपक सहित बलिदान देनेसे और भगवतीके मंदिरमें घण्टा बांधनेसे बालग्रहोंकी शांति होय ॥ १३ ॥ और जो पहिले सप्तशतीका सुलटे क्रमसे पाठ करै और दूसरे उलटी रीतिसे फिर तीसरे सुलटे क्रमसे पाठ करे इस प्रकार तीन पाठ करनेसे तत्काल कार्य्यकी सिद्धि होय ॥ १४ ॥ सम्पूर्ण आपत्ति निवारणके लिये 'दुर्गेस्मृताहरसिभीतिमशेषजन्तोः' इस अर्द्धमन्त्रको पढकर तिसके अन्तमें 'यदन्तियच्चदूरके' इस ऋचाको पढे फिर तिसके अन्तमें दारिद्यदुःख इस अर्द्धमन्त्रको पढे इस प्रकार जैसा कार्य्य हो तिसके अनुसार लक्ष १००००० अथवा दशहजार १०००० अथवा हजार १००० अथवा शत १०० इसका जप करना उचित है ॥ १५ ॥

कांसोस्मीत्यृचं प्रतिश्लोकं पठेल्लक्ष्मीप्राप्तिः ॥ १६ ॥ प्रतिश्लोकमनृणाअस्मिन्नित्यृचं पठेदृणपरिहारः ॥ १७ ॥ मारणार्थमेवमुक्त्वासमुत्पत्त्येतिश्लोकंप्रतिश्लोकंपठेन्मारणोक्तावृत्तिभिः फलसिद्धिः ॥ १८ ॥ ज्ञानिनामपि चेतांसि इतिश्लोकजपमात्रेण सद्योमोहनमित्यनुभवसिद्धम् ॥ प्रतिश्लोकं तच्छ्लोकपाठेत्ववश्यम् ॥ १९ ॥ रोगानशेषानिति श्लोकस्य प्रतिश्लोकंपाठेसकलरोगनाशः ॥ तन्मात्रजपेपिसः ॥ २० ॥

टीका—और जो सप्तशतीके पाठमें मन्त्र मन्त्रके प्रति 'कांसोस्मि' इस ऋचाको पढे तो लक्ष्मीकी प्राप्ति होय ॥ १६ ॥ और जो मन्त्र मन्त्रके प्रति 'अनृणाअस्मिन्' इस ऋचाको पढे तो ऋण उतरे ॥ १७ ॥ और मारणके लिये 'एवमुक्त्वासमुत्पत्य' इस मन्त्रको मन्त्र मन्त्रके प्रति पढे और मारणमें

जितनी कात्यायनी आदि तन्त्रोंमें सप्तशतीकी आवृत्ति वर्णन करी हैं तिन आवृत्तियोंके करनेसे मारणरूप फलकी सिद्धि होती है ॥ १८ ॥ और 'ज्ञानिनामपिचेतांसि' इस मन्त्रके जप मात्र करने करके तत्काल वशीकरण होय यह अनुभव किया हुवा है अथवा मन्त्र मन्त्रके प्रति इस मन्त्रको पढे तोभी वशीकरण सिद्ध होय ॥१९॥ और 'रोगानशेपान्' इस मन्त्रको मन्त्र मन्त्रके प्रति पढनेसे सम्पूर्ण रोगका नाश होय अथवा तिस केवल मन्त्रके जपमात्रसेभी सम्पूर्ण रोगका नाश होता है ॥ २० ॥

इत्युक्तासातदादेवी गंभीरेतिश्लोकस्यप्रतिश्लोकंपाठे पृथग्जपेवा विद्याप्राप्तिर्वाग्वैकृतनाशश्च ॥ २१ ॥ भगवत्याकृतं सर्वं मित्यादिद्वादशोत्तरशताक्षरोमन्त्रः सर्वकामदः ॥ सर्वापत्तिवारणश्च ॥ २२ ॥ देविप्रपन्नार्त्तिहरे इतिश्लोकस्ययथाकार्य्यं लक्षायुतसहस्रशतान्यतमसंख्यजपे प्रतिश्लोकं पाठेवासर्वापन्निवृत्तिः सर्वकामाप्तिश्च ॥ एषुप्रयोगेषु प्रतिश्लोकंदीपाग्रेकेवलमेव नमस्करणेऽतिशीघ्रंसिद्धिः ॥ प्रतिश्लोकंकामबीजसम्पुटितस्थयैकचत्वारिंशद्दिनंत्रिरावृत्तौ सर्वकामसिद्धिः ॥ २३ ॥ एकविंशतिदिनपर्य्यन्तमुक्तरीत्याप्रत्यहं द्वादशावृत्तौवशीकणम् ॥ २४ ॥ मायाबीजसम्पुटितस्य फट्पल्लवसहितस्यसप्तदिनपर्य्यन्तं त्रयोदशावृत्तावुच्चाटनसिद्धिः ॥ २५ ॥

टीका–और इत्युक्तासातदेवी इस मन्त्रको मन्त्रमन्त्रकेप्रति पठनकरनेसे अथवा अलग केवलको जपकरनेसे विद्याकी प्राप्तिहोय और वाणीमें जो गद्गदपना आदि विकार होय तिसको नाशहोय ॥२१॥ और भगवत्याकृतं सर्वम् इससे आदिलेकर यह एक सौ १२ बारह अक्षरका मन्त्रहै सो सम्पूर्ण कामना देनेवालाहै और सम्पूर्ण आपत्तिका दूर करनेवालाहै इस केवल मन्त्रको जपे अथवा सप्तशतीपाठमें मन्त्रमन्त्रके प्रतिपढे ॥ २२ ॥ और जैसा कार्यहो तिसमाफिक देविप्रपन्नार्त्तिहरेप्रसीद इसमन्त्रको जप लक्ष १०००००

अथवा दशहजार १०००० अथवा हजार १००० अथवाशत १००इसमे से एकसंख्या जपकरनेसें अथवा इसमन्त्रको सप्तशतीपाठमें मन्त्रमन्त्रके पढनेसे सम्पूर्ण आपत्ति दूरहोय और सम्पूर्ण कामना पूर्णहोय और इन प्रयोगोमें प्रतिमन्त्र दीपके आगे केवल नमस्कार करनेसे अतिशीघ्र फलकी सिद्धि होय और प्रतिमन्त्र काम बीजसम्पुटित अर्थात् क्लीं इस करके सम्पुटित सप्तशतीको इकतालीस दिनतक नित्यप्रति तीन आवृत्तिकरनेसे सम्पूर्ण कामकी सिद्धिहोय ॥२३॥ और जो इक्कीसदिनतक उसी कामबीजसम्पुटित सप्तशतीकी बारह आवृत्ति नित्यप्रतिकरनेसे वशीकारण सिद्धहोताहै ॥ २४ ॥ और जो ह्रीं इस मायाबीजकरके प्रतिमन्त्र सम्पुटितफट् पल्लव करके सहित सप्तशती पाठकी सप्तदिनतक नित्यप्रति त्रयोदश आवृत्तिकरनेसे उच्चाटन सिद्धहोय ॥ २५ ॥

तादृश्यामेव दिनचतुष्टयमेकादशावृत्तौ सर्वोपद्रवनाशः ॥ ॥२६॥ एकोनपञ्चाशद्दिनपर्य्यन्तम्प्रतिश्लोकंश्रीबीजसम्पुटितस्यपञ्चदशावृत्तौलक्ष्मीप्राप्तिः ॥ २७ ॥ प्रतिश्लोकं वाग्बीज सम्पुटितस्यशतावृत्त्याविद्याप्राप्तिः ॥ २८ ॥ इति ॥

टीका—और चार दिनतक नित्यप्रति एकादश आवृत्ति करनेसे सम्पूर्ण उपद्रवका नाश होय ॥ २६ ॥ और उणंचास दिनतक प्रति मन्त्र श्रीबीज सम्पुटित सप्तशती पाठकी पंदरह आवृत्तिकरनेसे लक्ष्मीकी प्राप्तिहोय ॥ २७ ॥ और प्रतिमन्त्र ऐं इस वाग्बीजसम्पुटित सप्तशतीकी शत १०० आवृत्ति करनेसे विद्याकी प्राप्ति होय ॥ २८ ॥ इति तन्त्रोक्तप्रयोगान्तराणि ॥

इति प्रयोगविधिः समाप्तः ।

अथस्वरूपिणि ॥ पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते ॥ त्रिपुरां त्रिपुसे [?]रां त्रिवर्णां ज्ञानरूपिणीम् ॥ त्रैलोक्यवन्दितां देवीं त्रिमूर्त्तिं पूजयाम्यहम् ॥ [?]त्मिकां कलातीतां कारुण्यहृदयां शिवाम् ॥ कल्याणजननीं देवीं क[?]णीं पूजयाम्यहम् ॥ अणिमादिगुणाधारामकाराद्यक्षरात्मिकां ॥ अनन्त[?]कां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम् ॥ कामचारीं शुभां कान्तां कालचक्रस्वरूपिणीम् ॥ कामदां करुणोदारां कालिकां पूजयाम्यहम् ॥ चंडवीरां चंडमा[?]चण्डमुण्डप्रभंजनीम् ॥ पूजयामि सदादेवींचंडिकांचंडविक्रमाम् ॥ सदानंद[?]शांतांसर्वदेवनमस्कृताम् ॥ सर्वभूतात्मिकांलक्ष्मींशांभवींपूजयाम्यहम् ॥ [?]मेदुस्तरेकार्येभवदुःखविनाशिनीम् ॥ पूजयामिसदाभक्त्यादुर्गांदुर्गार्तिना[?]नीम्॥सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायिनीम् ॥ सुभद्रजननीं देवींसुभ[?]पूजयाम्यहम् ॥ एतैर्मंत्रैःपुराणोक्तैस्तांतांकन्यांसमर्चयेत् ॥ इतिपूजनंकु[?]रिकाणाम् ॥ वेद्यांविरचितेरम्येसर्वतोभद्रमंडले ॥ घटंसंस्थाप्यविधिनातत्रा[?]ह्यार्चयेच्छिवाम् ॥ तदग्रेकन्यकाश्चापिपूजयेद्ब्राह्मणानपि ॥ उपचारैस्तुवि[?]धैर्नवार्णावरणान्यपि ॥ ॐकारःप्रथमंपीठंपूर्णपीठमतःपरम् ॥ तृतीयंकाम[?]ठंचपूजयेत्संप्रदायतः ॥ पूर्वादिदिक्षुपीठस्यगणेशादिचतुष्टयम् ॥ गणेशक्षेत्र[?]लौचपादुकेवटुकास्त्रयः ॥ आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षुपूज्यंदेवीचतुष्टयम् ॥ जया चविजयाचैवजयंतीचापराजिता ॥ पूर्वोक्तयंत्रेपूर्वेकोणेसरस्वतीसहितोब्रह्मा श्रीसहितोविष्णुर्नैर्ऋत्यामुमयाशिवोवायव्यांपट्कोणेचक्रमध्यस्थमध्यबीजेश्री-महालक्ष्मीः ॥ ह्रींमहाकालीऐंमहासरस्वतीदक्षिणवामयोः ॥ उदक्सिंहोदक्षिणेमहिषः ॥ षट्कोणेपुनंदजा रक्तदंतिका शाकंभरीदुर्गाभीमाभ्रामर्य्यः ॥ सबिंदुनामाद्यवर्णताराद्याश्चासांनाममंत्राःपूजादौ ॥ तारःप्रणवः ॥ अष्टत्रयेपु ब्रह्माणीमाहेश्वरीकौमारीवैष्णवीवाराहीनारसिंही ऐंद्रीचामुण्डाउक्तरीत्यानाम-मन्त्रैः पूज्याः ततोविष्णुमायादिचतुर्विंशतिदेवताः प्रागादिक्रमेणकेसरेषुपूज्याः प्रतिपत्रंचकेसरत्रयम् ॥ ताश्चविष्णुमाया१ चेतना२बुद्धि३निद्रा४क्षुधा५छाया ६ शक्ति ७ तृष्णा ८ क्षांति ९ जाति १० लज्जा ११ शान्ति १२ श्रद्धा

१३ कान्ति १४ लक्ष्मी १५ धृति १६ वृत्ति १७ स्मृति १८ दया १९ तुष्टि २० पुष्टि २१ मातृ २२ भ्रांति २३ चिति २४ रूपा एतावत्यः सप्तशतीस्तवेपंचमेध्यायेआसांचतुर्विंशतीनांनपाठ इतिनभ्रमितव्यम् ॥ कात्यायनीतंत्रविरोधात् ॥ नालमूलेतुसंपूज्यमाधवादिचतुष्टयम् ॥ आधारःकूर्मशेषौ च चतुर्थीपृथिवीनृप ॥ गृहकोणेषुगणेशःक्षेत्रपालोबटुकोयोगिन्यः ॥ प्रागादिदिक्षुइंद्राद्याश्चेति ॥ एवंचतुर्दिनंकुर्यात् ॥ तत्रप्रथमेन्हिएकावृत्तिर्द्वितीये द्वेतृतीयेतिस्रश्चतुर्थेचतस्रइति ॥ पंचमेहोमः ॥ होमद्रव्याणि ॥ पायसान्नैस्त्रिमध्वक्तैर्द्राक्षारंभाफलादिभिः ॥ मातुलिंगैरिक्षुखंडैर्नालिकेरयुतैस्तिलैः ॥ जातीफलैराम्रफलैरन्यैर्मधुरवस्तुभिरिति ॥ सप्तशत्यादशावृत्त्याप्रतिमन्त्रंहुतंचरेत्॥ अयुतंचनवार्णेनस्थापितेऽग्नौविधानतः ॥ कृत्वावरणदेवानांहोमंतन्नामभन्त्रतः ॥ कृत्वापूर्णाहुतिंसम्यग्देवमग्निंविसृज्यच ॥ अभिषिंचेद्यष्टारंविप्रौघः कलशोदकैः ॥ निष्कं सुवर्णमथवाप्रत्येकं दक्षिणांदिशेत् ॥ भोजयेच्चशतंविप्रान् भक्ष्यभोज्यैः पृथग्विधैः ॥ तेभ्योपिदक्षिणांदत्वागृह्णीयादाशिषस्तथा ॥ एवंकृतेजगद्वश्यंसर्वेनश्यंत्युपद्रवाः ॥इतिशतचण्डीविधिः॥श्रीजगदंबाप्रसादोस्तु॥

अथ संकल्पः ।

अद्येत्यादि० श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताप्रीत्यर्थं चंडीसप्तशतीपाठाख्यंकर्मकरिष्ये ॥तदंगत्वेनादौकवचार्गलाकीलकपठनमाद्यंतयोरष्टोत्तरशतसंख्यनवार्णजपपूर्वकंक्रमेणरात्रिसूक्तदेवीसूक्तपठनमंतेरहस्यत्रयपठनंचकरिष्ये ॥ ॥ इतिसंकल्प्य ॥ प्रथमं नमोदेव्यैमहादेव्यैशिवायैसततंनमः ॥ नमःप्रकृत्यैभद्रायैनियताःप्रणताःस्मताम् ॥ इतिमंत्रेणपंचोपचारैःपुस्तकपूजांकुर्यात्॥ श्रीरस्तु ॥

इतिसंकल्पः ।

श्रीः ।

अथ सप्तशतीकवचं

भाषाटीकासमन्वितम् ।

ॐनमश्चण्डिकायै ॥ मार्कण्डेयउवाच ॥ ॐयद्गुह्यंपरमंलोकेसर्वरक्षाकरंनृणाम् ॥ यन्नकस्यचिदाख्यातंतन्मेब्रूहिपितामह ॥ १॥ ब्रह्मोवाच ॥अस्तिगुह्यतमंविप्रसर्वभूतोपकारकम्॥ देव्यास्तुकवचंपुण्यंतच्छृणुष्वमहामुने ॥ २ ॥ प्रथमंशैलपुत्रीतिद्वितीयंब्रह्मचारिणी ॥ तृतीयंचन्द्रघण्टेतिकूष्माण्डेतिचतुर्थकम् ॥ ३ ॥ पंचमंस्कंदमातेतिषष्ठंकात्यायनीतिच ॥ सप्तमंकालरात्रीतिमहागौरीतिचाष्टमम् ॥ ४ ॥ नवमं सिद्धिदात्रीचनवदुर्गाःप्रकीर्तिताः ॥ उक्तान्येतानिनामानि ब्रह्मणैवमहात्मना ॥ ५ ॥

श्रीगणेशायनमः॥नत्वाहमीशं जगदेकनाथं वर्म्मार्गलाकीलकसंयुतायाः॥करोमि भाषामबुधोपकृत्यै चिन्मग्गिरामःखलु सप्तशत्याः॥

टीका—ॐ नमश्चण्डिकायै ॥ एक समय मार्कण्डेय ऋषि ब्रह्मासे इसप्रकार प्रश्न कर्ते भये कि हे ब्रह्मन् जो लोकके विषे अत्यंत गुप्त है और सब मनुष्योंकी रक्षा करनेवाली और किसी अन्यको नहीं उपदेश दईहो सो वस्तु हमको उपदेश करो ॥ १ ॥ तब ब्रह्माजी बोले कि हे विप्र हे महामुने सब मनुष्योंका उपकार करनेवाली और अत्यंत गुप्त ऐसा देवीका कवच है ताहि तुम श्रवण करो ॥ २ ॥ प्रथम तो शैलपुत्री और दूसरे ब्रह्मचारिणी तीसरे चन्द्रघण्टा चौथे कुष्मांडा ॥ ३ ॥ पाचवे स्कंदमाता छठे कात्यायनी सातवे कालरात्रि आठवे महागौरी ॥ ४ ॥ नवमें सिद्धिदात्री ये नवदुर्गा वर्णन करी है येनाम ब्रह्मा मैनेही वर्णन किये है ॥ ५ ॥

अग्निनादह्यमानस्तुशत्रुमध्येगतोरणे ॥ विषमेदुर्गमेचैवभया

तांश्शरणंगताः ॥ ६ ॥ नतेषांजायतेकिंचिदशुभंरणसंकटे॥ नापदंतस्यपश्यामिशोकदुःखभयंनहि ॥ ७ ॥ यैस्तुभक्त्या स्मृतानूनंतेषांसिद्धिःप्रजायते॥येत्वांस्मरन्तिदेवेशिरक्षसेतान्न संशयः ॥ ८ ॥ प्रेतसंस्थातुचामुण्डावाराहीमहिषासना ॥ ऐन्द्रीगजसमारूढा वैष्णवी गरुडासना ॥ ९ ॥ माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखिवाहना ॥ लक्ष्मीःपद्मासनादेवीपद्म-हस्ताहरिप्रिया ॥ १० ॥

टीका—जो मनुष्य अग्नि करके दग्ध होताहुवा और जो संग्रामके विषे शत्रुओंके मध्यमें रुकाहुवा और जो मनुष्य विकट दुर्गके विषे रुकाहुवा और जे इन आदि भयार्त्त मनुष्य इन ब्रह्मोक्त दुर्गाके नामोंका उच्चारण कर्त्ते हैं ॥ ६ ॥ तिनके रण आदि संकटोंमें कुछभी अशुभ नहीं होता है और शरणागत मनुष्यके मैं आपत्ति और शोक दुःख भय ये नहीं देखता हूं ॥ ७ ॥ और जिनो करके भक्तिसे दुर्गा स्मरण करी जाती है तिनके निश्चयकरके धन संतान आदि सब वस्तुकी वृद्धि होती है और हे देवेशि जे मनुष्य तुह्मारा स्मरण कर्त्ते हैं तिनकी तुम रक्षा करोहो इसमें संशय नहीं ॥ ८॥ और प्रेतोंके विषे स्थित ऐसी चामुंडा और महिष है सवारी जिसकी ऐसी वाराही और गजसमारूढ ऐंद्री और गरुड है वाहन जिसका ऐसी वैष्णवी ॥ ९ ॥ और वृषभके ऊपर बैठी हुई माहेश्वरी और मयूर है वाहन जिसका ऐसी कौमारी और कमल है आसन जिसका और कमल हैं हाथोंमें जिसके हरिकी प्रिया ऐसी लक्ष्मी ॥ १० ॥

श्वेतरूपधरादेवीईश्वरीवृषवाहना॥ब्राह्मीहंससमारूढा सर्वाभ-रणभूषिता ॥११॥ इत्येतामातरःसर्वाः सर्वयोगसमन्विताः ॥ नानाभरणशोभाढ्यानानारत्नोपशोभिताः ॥ १२ ॥ दृश्य न्तेरथमारूढादेव्यःक्रोधसमाकुलाः ॥ शंखंचक्रंगदांशक्तिंहलं चमुसलायुधम् ॥ खेटकंतोमरं चैवपरशुंपाशमेवच ॥ १३ ॥ कुन्तायुधं त्रिशूलंचशार्ङ्गमायुधमुत्तमम् ॥ दैत्यानांदेहनाशा-

यभक्तानामभयायच ॥ १४ ॥ धारयन्त्यायुधानीत्थंदेवानांच
हितायवै ॥ नमस्तेस्तु महारौद्रेमहाघोरपराक्रमे॥ १५ ॥

टीका—और वृष हे वाहन जिसका और श्वेतरूपको धारण करनेवाली ऐसी ईश्वरी देवी और हंसके ऊपर बैठीहुई संपूर्ण आभूषणोंकरके अलंकृत ऐसी ब्राह्मी ॥ ११ ॥ हेदेवि पूर्वोक्त तुमारी ये शक्ति संपूर्ण जगन्माता संपूर्ण योग करके युक्तहै और नाना प्रकारके रत्नजटित आभूषणोकी शोभा करके युक्तहैं ॥ १२ ॥ और क्रोध करके विव्हल रथोंमें बैठीहुई दीखतीहैं और शंख चक्र गदा शक्ति हल खेटक तोमर परशु पाश ॥ १३ ॥ कुंत त्रिशूल शार्ङ्ग धनुष इन उत्तम आयुधोको दैत्योंके देहके नाशके लिये और भक्तोंके अभयके लिये ॥ १४ ॥ और देवोंके हितके लिये धारण कियेहैं हेमहारौद्रे हेमहाघोरपराक्रमे ऐसी तुमको नमस्कारहो ॥ १५ ॥

महाबलेमहोत्साहे महाभयविनाशिनि ॥ त्राहिमांदेविदुष्प्रेक्ष्ये
शत्रूणांभयवर्द्धिनि ॥ १६ ॥ प्राच्यांरक्षतुमामैन्द्री आग्नेय्यां
भयवर्द्धिनी ॥ दक्षिणेऽवतुवाराहीनैर्ऋत्यांखड्गधारिणी ॥१७॥
प्रतीच्यांवारुणीरक्षेद्वायव्यांमृगवाहिनी॥उदीच्यांपातुकौमारी
ईशान्यांशूलधारिणी ॥ १८ ॥ ऊर्ध्वंब्रह्माणीमेरक्षेदधस्ताद्वै-
ष्णवीतथा ॥ एवंदशदिशोरक्षेच्चामुण्डाशववाहना ॥ १९ ॥
जयामेचाग्रतःपातुविजयापातुपृष्ठतः ॥ अजितावामपार्श्वे
तुदक्षिणेचापराजिता ॥ २० ॥

टीका—और हेमहाबले हेमहोत्साहे हेमहाभयविनाशिनि हे दुष्प्रेक्ष्ये हे शत्रुओंके भय बढानेवाली तुम मेरी रक्षा करो ॥ १६ ॥ पूर्वके विषे ऐंद्री मेरी रक्षा करो और अग्निकोणके विषे भयवर्द्धिनी रक्षा करो और दक्षिणके विषे वाराही और नैर्ऋतके विषे खड्गधारिणी मेरी रक्षा करो ॥ १७ ॥ और पश्चिमके विषे वारुणी और वायु कोणके विषे मृगवाहिनी और उत्तरके विषे कौमारी और ईशानीके विषे शूलधारिणी मेरी रक्षा करो ॥ १८ ॥

और मेरे उपर ब्रह्माणी रक्षा करो तिसीप्रकार नीचे वैष्णवी रक्षा करो ऐसे शववाहना चामुंडा दशो दिशामें रक्षाकरो ॥ १९ ॥ और मेरे अगाडी जया रक्षा करो और विजया पीठ पीछेरक्षा करो और अजिता वामपार्श्वके विषे और अपराजिता दक्षिणपार्श्वके विषे रक्षा करो ॥ २० ॥

शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमामूर्ध्नि व्यवस्थिता॥मालाधरीलला-
टेचभ्रुवौरक्षेद्यशस्विनी ॥ २१ ॥ त्रिनेत्राचभ्रुवोर्मध्येयमघण्टा
चनासिके ॥ शंखिनीचक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी ॥२२॥
कपोलौकालिकारक्षेत्कर्णमूलेतुशांकरी ॥ नासिकायांसुगं-
न्धाचउत्तरोष्ठेचचर्चिका ॥ २३ ॥ अधरेचामृतकलाजिह्वायां
च सरस्वती॥दन्तान्रक्षतुकौमारीकण्ठदेशेतुचण्डिका॥२४॥
घण्टिकांचित्रघण्टाचमहामायाचतालुके ॥ कामाक्षीचिबुकं
रक्षेद्वाचंमेसर्वमंगला ॥ २५ ॥

टीका—और शिखाकी उद्योतिनी रक्षा करो और उमा मूर्द्धके विषे स्थित हुई रक्षा करो और मालाधरी ललाटके विषे रक्षा करो और भ्रुकुटिओंकी यशस्विनी रक्षा करो ॥२१॥ और त्रिनेत्रा भ्रुकुटीओंके मध्यमें और नासिकाकी यमघण्टा रक्षा करो और नेत्रोंके मध्यमें शंखिनी और श्रोत्रोंके विषे द्वारवासिनी रक्षा करो ॥ २२ ॥ और कपोलोंकी कालिका रक्षा करो और कर्णमूलके विषे शांकरी रक्षा करो और नासिकाके विषे सुगंधा और उत्तरोष्ठके विषे चर्चिका रक्षा करो ॥ २३ ॥ और अधरोष्ठके विषे अमृतकला और जिव्हाके विषे सरस्वती रक्षा करो और दंतोंकी कौमारी रक्षा करो और कंठदेशके विषे चंडिका रक्षा करो ॥ २४॥ और घंटिकाकी चित्रघण्टा रक्षा करो और महामाया तालुके विषे रक्षा करो और कामाक्षी ठोडीकी रक्षा करो और सर्वमङ्गला मेरी वाणीकी रक्षा करो ॥ २५ ॥

ग्रीवायांभद्रकालीचपृष्ठवंशेधनुर्धरी ॥ नीलग्रीवाबहिःकण्ठेन
लिकांनलकूबरी ॥ २६ ॥ स्कन्धयोः खङ्गिनीरक्षेद्बाहू मेवज्र

धारिणी॥हस्तयोर्दण्डिनीरक्षेदम्बिकाचांगुलीषुच॥२७॥नखा
ञ्छूलेश्वरीरक्षेत्कुक्षौरक्षेत्कुलेश्वरी ॥ स्तनौरक्षेन्महादेवी
मनश्शोकविनाशिनी ॥ २८ ॥ हृदयेललितादेवीउदरेशूल
धारिणी ॥ नाभौचकामिनीरक्षेद्गुह्यंगुह्येश्वरीतथा ॥ २९ ॥
पूतना कामिकामेढ्रंगुदेमहिषवाहिनी कट्यांभगवतीरक्षेज्जा
नुनीविन्ध्यवासिनी ॥ ३० ॥

टीका—और गलेके विषे भद्रकाली और पृष्ठके वंशके विषे धनुर्धरी रक्षा करो और कंठके बहिःप्रदेशके विषे नीलग्रीवा रक्षा करो और नलिकोंकी नलकूबरी रक्षा करो ॥ २६ ॥ और कंधूके विषे खड्गिनी रक्षा करो और मेरी भुजाकी वज्रधारिणी रक्षा करो और हस्तोंके विषे दंडिनी रक्षा करो और अंगुलिओंके विषे अंबिका रक्षा करो ॥ २७ ॥ और नखोंकी शूलेश्वरी रक्षा करो और कुक्षिके विषे कुलेश्वरी रक्षा करो और स्तनोंकी मनका शोक दूर करनेवाली महादेवी रक्षा करो ॥ २८ ॥ और हृदयके विषे ललिता देवी और उदरके विषे शूलधारिणी और नाभिके विषे कामिनी रक्षा करो तिसीप्रकार गुह्यस्थानकी गुह्येश्वरी रक्षा करो ॥ २९ ॥ और पूतना कामिका शिश्नकी रक्षा करो और गुदस्थानके विषे महिषवाहिनी और कटिदेशके विषे भगवती रक्षा करो और गोडोंकी विंध्यवासिनी रक्षा करो ॥ ३० ॥

जंघेमहाबलारक्षेत्सर्वकामप्रदायिनी ॥ गुल्फयोर्नारसिंहीच
पादपृष्ठेतुतेजसी ॥ ३१ ॥ पादांगुलीषु श्रीरक्षेत्पादाधःस्थल
वासिनी ॥ नखान्दंष्ट्राकरालीच केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी॥ ३२ ॥
रोमकूपेषुकौमारीत्वचंवागीश्वरीतथा ॥ रक्तमज्जावसामांसा-
न्यस्थिमेदांसिपार्वती ॥ ३३ ॥ अन्त्राणिकालरात्रीचपित्तंच
मुकुटेश्वरी ॥ पद्मावतीपद्मकोशेकफेचूडामणिस्तथा ॥३४॥
ज्वालामुखीनखाजालमभेद्यासर्वसंधिषु ॥ शुक्रंब्रह्माणीमेरक्षे
च्छायांछत्रेश्वरीतथा ॥ ३५ ॥

टीका—और सर्व मनोरथोंकी देनेवाली महावला जंघाओंकी रक्षा करो और टाँकनोंके विषे नारसिंही और पैरोंके पृष्ठके विषे तैजसी रक्षा करो॥३१॥ और पैरोंकी अंगुलिओंके विषे श्री रक्षा करो और पैरका अधोभागकी स्थलवासिनी रक्षा करो और नखकी दंष्ट्राकराली और केशोंकी ऊर्ध्वकेशिनी रक्षा करो ॥ ३२ ॥ और रोमकूपोंके विषे कौमारी रक्षा करो तिसीप्रकार त्वचाकी वागीश्वरी रक्षा करो और रक्त मज्जा वसा मांस अस्थि मेद इनकी पार्वती रक्षाकरो ॥ ३३ ॥ और आतोंकी कालरात्रि रक्षा करो और पित्तकी मुकुटेश्वरी रक्षाकरो और तिसीप्रकार पद्मावती पद्मकोशके विषे और कफके विषे चूडामणि रक्षा करो ॥ ३४ ॥ और ज्वालामुखी नसाजालकी रक्षा करो और अभेद्या सब संधिओंके विषे रक्षा करो और वीर्यकी ब्रह्माणी रक्षा करो तिसीप्रकार छायाकी छत्रेश्वरी रक्षा करो ॥ ३५ ॥

अहंकारंमनोबुद्धिंरक्षेन्मेधर्मधारिणी ॥ प्राणापानौतथाव्यानमुदानंचसमानकम् ॥ ३६ ॥ वज्रहस्ता चमे रक्षत्प्राणकल्पंच शोभना ॥ रसेरूपेचगन्धे च शब्देस्पर्शेचयोगिनी॥३७॥सत्त्वं रजस्तमश्चैवरक्षेन्नारायणीसदा ॥ आयूरक्षतुवाराहीधर्मरक्षतुवैष्णवी ।३८। यशःकीर्तिंचलक्ष्मींचधनंविद्यांचचक्रिणी॥गोत्रमिन्द्राणीमेरक्षेत्पशून्मेरक्षचण्डिके ॥३९॥ पुत्रान्रक्षेन्महालक्ष्मी भार्यांरक्षतुभैरवी॥पन्थानंसुपथारक्षेन्मार्गंक्षेमकरीतथा॥४०॥

टीका—और मेरा अहंकार मन और बुद्धि इनकी धर्मधारिणी रक्षा करो तिसीप्रकार मेरा प्राण अपान व्यान उदान समान ॥ ३६ ॥ इन पंच प्राणोंकी वज्रहस्ता रक्षा करो और प्राणकल्पकी शोभना रक्षा करो रसके विषे रूपके विषे गंधके विषे शब्दके विषे स्पर्शके विषे योगिनी रक्षा करो ॥ ३७ ॥ और सर्वदा सत्वगुण रजोगुण तमोगुण इनकी नारायणी रक्षा करो और आयुकी वाराही रक्षा करो और धर्मकी वैष्णवी रक्षा करो॥३८॥

यश कीर्ति लक्ष्मी धन विद्या इनकी चाक्रिणी रक्षा करो हेइन्द्राणि तुम मेरे गोत्रकी रक्षाकरो और हेचंडिके तुम मेरे पशुओंकी रक्षाकरो ॥३९॥ पुत्रोंकी महालक्ष्मी रक्षाकरो भार्याकी भैरवी रक्षाकरो और पन्थाकी सुपथा और तिसीप्रकार मार्गकी क्षेमकरी रक्षाकरो ॥ ४० ॥

राजद्वारेमहालक्ष्मीर्विजयासर्वतःस्थिता॥रक्षाहीनंतुयत्स्थानं-वर्जितंकवचेनतु॥४१॥तत्सर्वंरक्षमेदेविजयन्तीपापनाशिनी॥ पदमेकंनगच्छेत्तुयदीच्छेच्छुभमात्मनः ॥४२॥ कवचेनावृतो नित्यंयत्रयत्रैवगच्छति ॥ तत्रतत्रार्थलाभश्चविजयःसार्वकामिकः ॥ ४३ ॥ यंयंचिंतयतेकामंतंतंप्राप्नोतिनिश्चितम् ॥ परमैश्वर्यमतुलंप्राप्स्यतेभूतलेपुमान् ॥ ४४ ॥ निर्भयोजायतेमर्त्यःसंग्रामेष्वपराजितः ॥ त्रैलोक्येतुभवेत्पूज्यःकवचेनावृतःपुमान् ॥ ४५ ॥

टीका—राजद्वारके विषे महालक्ष्मी रक्षाकरो तिसीप्रकार चौतरफ स्थितहुई विजया रक्षाकरो और रक्षा करके रहित और कवच करके वर्जित जो स्थान ॥ ४१ ॥ तिस संपूर्ण मेरे स्थानकी पापोंके नाश करनेवाली ऐसी जयंती हेदेवि तुम रक्षाकरो और जो मनुष्य अपना शुभ चाहैं तो कवचविना एकपैड न चले ॥ ४२ ॥ और जो कवच करके युक्तहुवा मनुष्य नित्यप्रति जहां जहां जाताहै तहां तहां उसको लाभ होताहै और उसका विजय होताहै ॥ ४३ ॥ फिर वह मनुष्य जिस जिस कामकी इच्छा कर्त्ताहै तिस तिस कामको निश्चय करि प्राप्त होताहै और पृथ्वीके विषे अतुल उत्तम ऐश्वर्यको प्राप्तहोताहै ॥ ४४ ॥ फिर वह कवच करके आवृत पुरुष संग्रामके विषे निर्भय और अपराजित होताहै और त्रिलोकीके विषे पूज्य होवे ॥४५॥

इदंतुदेव्याःकवचं देवानामपिदुर्लभम् ॥ यः पठेत्प्रयतोनित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः ॥ ४६ ॥ दैवीकलाभवेत्तस्यत्रैलोक्ये ष्वपराजितः ॥ जीवेद्वर्षशतंसाग्रमपमृत्युविवर्जितः ॥ ४७ ॥ नश्यन्तिव्याधयःसर्वेलूताविस्फोटकादयः ॥ स्थावरंजंगमं

चैवकृत्रिमंचापियद्विषम् ॥ ४८ ॥ अभिचाराणिसर्वाणिमं
त्रयंत्राणिभूतले ॥ भूचराःखेचराश्चैवकुलजाश्चोपदेशिकाः ॥
॥ ४९ ॥ सहजाकुलजामालाडाकिनीशाकिनीतथा ॥ अन्त-
रिक्षचराघोराडाकिन्यश्चमहाबलाः ॥ ५० ॥

टीका—और यह देवीका कवच देवताओंकोभी दुर्लभहै जो पुरुष श्र-द्धाकरके युक्त और एकाग्रचित्तहुवा इस कवचको नित्यप्रति त्रिकालपढे ॥ ४६ ॥ तो उस पुरुषकी देवीके समान कला होवे और वह तीनो लोकोंके विषे किसी करके पराजित नही होवे और वह अपमृत्युकरके वर्जितहुवा शतवर्ष जीवे ॥ ४७ ॥ और लूता विस्फोटकासे आदिलेकर जे व्याधिहै और स्थावर शंखिया आदि जंगम सर्प आदि कृत्रिम बनाहुवा जो तीन प्रकारका विषहै ये संपूर्ण उपद्रव उस पुरुषके नष्टहोजातेहै अर्थात् उस पुरुषको क्लेश नहीं देशकतेहैं ॥ ४८ ॥ और पृथ्वीके विषे मंत्रयंत्ररूपी जे अभिचारहैं अर्थात् मूठ आदि कर्त्तवहै और भूचर खेचर कुलज उपदेशिक येभी संपूर्ण उपद्रव उसपुरुषको स्पर्श नही कर शकतेहै ॥ ४९ ॥ और सहजा कुलजा माला तथा डाकिनी शाकिनी और अंतरिक्षमें विचरनेवाली भयंकर और बलवान् जे डाकिनी ॥ ५० ॥

ग्रहभूतपिशाचाश्चयक्षगन्धर्वराक्षसाः ॥ ब्रह्मराक्षसवेतालाः
कूष्माण्डाभैरवादयः ॥ ५१ ॥ नश्यन्तिदर्शनात्तस्यकवचेहृ-
दिसंस्थिते ॥ मानोन्नतिर्भवेद्राज्यंतेजोवृद्धिकरंपरम् ॥ ५२ ॥
यशसावर्धतेसोऽपिकीर्तिमण्डितभूतले ॥ जपेत्सप्तशतींचण्डीं
कृत्वातुकवचंपुरा ॥ ५३ ॥ यावद्भूमंडलंधत्तेसशैलवनकान-
नम् ॥ तावत्तिष्ठतिमेदिन्यांसन्ततिःपुत्रपौत्रिकी ॥ ५४ ॥
देहान्तेपरमंस्थानंयत्सुरैरपिदुर्लभम् ॥ प्राप्नोतिपुरुषोनित्यं
महामायाप्रसादतः ॥ ५५ ॥ लभतेपरमंरूपंशिवेनसहमोदते
॥ ५६ ॥ इतिवाराहपुराणेहरिहरब्रह्मविरचितंदेव्याःकवचं
समाप्तम् ॥ श्रीजगदंबार्पणमस्तु ॥

टीका—और ग्रह भूत पिशाच यक्ष गन्धर्व राक्षस ब्रह्मराक्षस वेताल कूष्मांड भैरव इन आदि जे उपद्रव है ॥ ५१ ॥ वे जिसके हृदयके विषे कवच स्थित हुएसंते तिसके दर्शनमात्रसे ये संपूर्ण नष्ट होजाते है अर्थात् स्पर्श नहीं कर सकते है और पृथ्वीके ऊपर इस कवचके प्रतापसे उस पुरुषके मानकी उन्नति होवे और तेजको बढानेवालो उस पुरुषको उत्तम राज्य होवे ॥५२॥ और जो पुरुष पहिले कवचकों करके सप्तशती चण्डीको जपे वह पुरुषभी कीर्त्ति करके शोभित भूमण्डलके विषे यश करके बढताहै ॥ ५३ ॥ और जब पर्यंत शेष भूमण्डलको धारण कर्त्ता है तब पर्यन्त पृथ्वीके विषे उस पुरुषकी पुत्रपौत्रकी संतति स्थित रहती है ॥ ५४ ॥ फिर देहके अंत समयके विषे वह पुरुष महामायाकी कृपासे देवताओं करकेभी जो दुर्लभ स्थान है तिसको निश्चयकर प्राप्त होताहै ॥ ५५ ॥ फिर मनोहर रूपको प्राप्त होताहै और शिवजीके साथ आनंद कर्त्ता है ॥ ५६ ॥ इति वाराहपुराणे हरिहरब्रह्मविरचितं देव्याः कवचं समाप्तम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

इति देव्याः कवचं समाप्तम् ।

श्रीः ।

अथ अर्गलास्तोत्रम् ।

ॐनमश्चण्डिकायै॥जयन्तीमङ्गलाकालीभद्रकालीकपालिनी॥
दुर्गाक्षमाशिवाधात्रीस्वाहास्वधानमोस्तुते ॥ १ ॥ जयत्वंदेवि
चामुण्डेजयभूतार्तिहारिणी॥जयसर्वगतेदेविकालरात्रिनमोस्तु
ते ॥ २ ॥ मधुकैटभविद्राविविधातृवरदेनमः ॥ रूपंदेहिजयं
देहियशोदेहिद्विषोजहि ॥३॥ महिषासुरनिर्णाशिभक्तानांसुख-
देनमः ॥ रूपंदेहिजयंदेहियशोदेहिद्विषोजहि॥४॥रक्तबीजवधे
देविचंडमुंडविनाशिनि॥रूपंदेहिजयंदेहियशोदेहिद्विषोजहि ॥५॥

टीका—ॐ नमश्चण्डिकायै । जयन्ती, मङ्गला, काली, भद्रकाली, कपालिनी, दुर्गा, क्षमा, शिवा, धात्री, स्वाहा, स्वधा तुह्मारेको नमस्कार ॥ १ ॥ हे देवि हे चामुण्डे तुह्मारा जय हो हे भूतार्त्तिहारिणि तुह्मारा जय हो हे सर्वगते तुह्मारा जयहो हे कालरात्रि तुमको नमस्कार ॥ २ ॥ हे मधुकैटभकों मोह प्राप्त करनेवाली हे ब्रह्माकों वर देनेवाली हमको रूप द्यो जय द्यो यश द्यो हमारे शत्रुओंको मारो ॥ ३ ॥ हे महिषासुरको मारनेवाली और हे भक्तोंको सुख देनेवाली तुमको नमस्कार हमको रूप जय यश द्यो और हमारे शत्रुओंको मारो ॥ ४ ॥ हे रक्तबीजको मारनेवाली हे चण्डमुण्डकों विनाश करनेवाली हमको रूप, जय, यश द्यो और हमारे शत्रुओंको मारो ॥ ५ ॥

शुंभस्यैवनिशुंभस्य धूम्राक्षस्यचमर्दिनि॥रूपंदेहिजयं देहिय-
शोदेहिद्विषोजहि ॥ ६ ॥ वन्दिताङ्घ्रियुगेदेविसर्वसौभाग्यदायि
नि॥रूपंदेहिजयंदेहियशोदेहिद्विषोजहि ॥७॥अचिन्त्यरूपचरि
तेसर्वशत्रुविनाशिनि॥रूपंदेहिजयंदेहियशोदेहिद्विषोजहि ॥८॥
नतेभ्यःसर्वदाभक्त्याचण्डिकेदुरितापहे ॥ रूपंदेहिजयंदेहिय
शोदेहिद्विषोजहि ॥९॥ स्तुवद्भ्योभक्तिपूर्वंत्वांचण्डिकेव्याधिना
शिनि ॥ रूपंदेहिजयंदेहियशोदेहिद्विषोजहि ॥ १० ॥

टीका–हे शुंभ और निशुंभ और धूम्राक्ष इनका नाश करनेवाली हमको रूप, जय, यश द्यो और हमारे शत्रुओंको मारो॥६॥हे वन्दितहैं पादयुग्म जिसके ऐसी हे सर्व सौभाग्यकी देनेवाली हमको रूप, जय, यश द्यो और हमारे शत्रुओं-को मारो ॥७॥ नहीं चिंतवन किये जाय रूप और चरित्र जाके ऐसी हे देवि और हे सर्व शत्रुओंका विनाश करनेवाली हमको रूप, जय, यश द्यो और शत्रुओंको मारो ॥ ८ ॥ हे चण्डिके हे पापोंको नाश करनेवाली सर्वकाल भक्ति करके नत जे हम हैं हमको रूप, जय, यश द्यो और शत्रुओंको मारो ॥ ९ ॥ हे चण्डिके हे व्याधिनाशिनी भक्तिपूर्वक स्तुति कर्त्ते हुएको रूप, जय, यश द्यो और शत्रुओंको मारो ॥ १० ॥

चण्डिकेसततंयेत्वामर्चयंतीहभक्तितः ॥ रूपंदेहिजयंदेहिय-शोदेहिद्विषोजहि॥११॥देहिसौभाग्यमारोग्यंदेहिमेपरमंसुखं॥ रूपंदेहिजयंदेहियशोदेहिद्विषोजहि ॥१२॥ विधेहिद्विषतांनाशं विधेहिबलमुच्चकैः॥रूपंदेहिजयंदेहियशोदेहिद्विषोजहि ॥१३॥ विधेहिदेविकल्याणंविधेहिपरमांश्रियं ॥ रूपंदेहिजयंदेहिय-शोदेहिद्विषोजहि ॥१४॥ सुरासुरशिरोरत्ननिघृष्टचरणेऽम्बिके रूपंदेहि जयंदेहियशोदेहिद्विषोजहि ॥ १५ ॥

टीका–हे चण्डिके इस भूलोकके विषे जे कोई भक्तिसे तुमको पूजते हैं तिनको रूप, जय, यश द्यो और तिनके शत्रुओंको मारो ॥ ११ ॥ हे देवि हमको सौभाग्य, आरोग्य, उत्तम सुख द्यो और रूप, जय, यश द्यो और शत्रुओंको मारो ॥ १२ ॥ हे देवि शत्रुओंको नाश करो हे देवि बडा पराक्रम करो और रूप, जय, यश द्यो और शत्रुओंको मारो ॥ १३ ॥ और हे देवि कल्याण, उत्कृष्ट लक्ष्मी करो और रूप, जय, यश द्यो और शत्रुओंको मारो ॥ १४ ॥ और सुर और असुर इनके शिरोरत्न करके निघृष्ट हैं चरण जाके ऐसी तुम हे अंबिके रूप, जय, यश द्यो और शत्रुओंको मारो ॥ १५ ॥

विद्यावन्तंयशस्वन्तंलक्ष्मीवंतंजनंकुरु ॥ रूपंदेहिजयंदेहियशो देहिद्विषोजहि ॥१६॥ प्रचण्डदैत्यदर्पघ्नेचण्डिकेप्रणतायमे ॥ रूपंदेहिजयंदेहियशोदेहिद्विषोजहि ॥१७॥ चतुर्भुजेचतुर्वक्त्रसं स्तुतेपरमेश्वरि ॥ रूपंदेहिजयंदेहियशोदेहिद्विषोजहि ॥१८॥ कृष्णेनसंस्तुतेदेविशश्वद्भक्त्यासदाम्बिके ॥ रूपंदेहिजयंदेहि यशोदेहिद्विषोजहि ॥ १९ ॥ हिमाचलसुतानाथसंस्तुतेपरमे- श्वरि ॥ रूपंदेहिजयंदेहियशोदेहिद्विषोजहि ॥ २० ॥

टीका—और विद्यावान् लक्ष्मीवान् और यशस्वी पुरुष मेरेको करो और रूप जय यश द्यो और शत्रुओंकों मारो ॥ १६ ॥ और हे प्रचंण्ड दैत्योंका गर्वविध्वंसनकरनेवाली हेचण्डिके भक्तिसे प्रणत जो मेहुँ तिसकों रूप जय यश द्यो और शत्रुओंको मारो ॥ १७ ॥ हे चार भुजावाली हेब्रह्मसंस्तुते हेपरमेश्वरि हमकों रूप जय यश द्यो और शत्रुओंको मारो ॥ १८ ॥ और हे कृष्णकरके निरंतर भक्तिसे सदा स्तुति किईहुई हे अंबिके हमको रूप जय यश द्यो और शत्रुओंको मारो ॥ १९ ॥ और हे शिवकरके स्तुति किईहुई हेपरमेश्वरि हमकों रूप जय यश द्यो और शत्रुओंको मारो ॥ २० ॥

इन्द्राणीपतिसद्भावपूजितेपरमेश्वरि ॥ रूपंदेहिजयंदेहियशो- देहिद्विषोजहि ॥२१॥ देविप्रचण्डदोर्दण्डदैत्यदर्पविनाशिनी ॥ रूपंदेहिजयंदेहियशोदेहिद्विषोजहि ॥ २२ ॥ देविभक्तजनोद्दा मदत्तानन्दोदयेम्बिके ॥ रूपंदेहिजयंदेहियशोदेहिद्विषोजहि॥ ॥ २३ ॥ पत्नींमनोरमांदेहिमनोवृत्तानुसारिणीम् ॥ तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्यकुलोद्भवाम् ॥२४॥ इदंस्तोत्रंपठित्वातुम हास्तोत्रंपठेन्नरः ॥ सतुसप्तशतीसंख्यावरमाप्नोतिसम्पदाम्॥२५॥ इतिमार्कण्डेयपुराणे अर्गलास्तोत्रं समाप्तम् ॥ २ ॥

टीका—और हेइंद्राणि हे पतिसद्भावपूजिते हेपरमेश्वरि हमकों रूप जय

यश दो और शत्रुओंकों मारो ॥ २१ ॥ हेदेवि हेप्रचण्डभुजदण्डों करके दैत्योंका गर्वविध्वंस करनेवाली हमकों रूप जय यश दो और शत्रुओंको मारो ॥ २२ ॥ हे देवि हेभक्तजनोंको अत्यन्त दियेहै आनन्दोदय जाने ऐसी तुम हमकों रूप जय यश दो और शत्रुओंकों मारो ॥ २३ ॥ और हे देवि मनकों रंजन करनेवाली और हमारे मनके वृत्तान्तके अनुकूल चलनेवाली और दुर्गम संसाररूपी सागरके मध्यमें तरानेवाली ऐसी पत्नी हम कों दो ॥ २४ ॥ और जो मनुष्य इसस्तोत्रकों पढके महास्तोत्र पढे वह मनुष्य संपत्तियोंका सप्तशतीसंख्यावरकों प्राप्तहोवे ॥ २५ ॥ इति मार्कण्डेय पुराणे अर्गलास्तोत्रं समाप्तम् ॥

इति अर्गलास्तोत्रम् ।

श्रीः ।

अथ कीलकस्तोत्रम् ।

ॐ नमश्चण्डिकायै ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ विशुद्धज्ञानदेहाय त्रिवेदीदिव्यचक्षुषे ॥ श्रेयःप्राप्तिनिमित्तायनमःसोमार्द्धधारिणे ॥ १ ॥ सर्वमेतद्विजानीयान्मन्त्राणामपिकीलकम्॥सोपिक्षेमम वाप्नोतिसततंजाप्यतत्परः॥ २॥ सिद्ध्यन्त्युच्चाटनादीनिवस्तूनिसकलान्यपि ॥ एतेनस्तुवतांदेवींस्तोत्रमात्रेणसिद्ध्यति३॥ नमंत्रंनोषधंतत्रनकिञ्चिदपिविद्यते ॥ विनाजाप्येनसिद्ध्येतसर्वमुच्चाटनादिकम् ॥ ४ ॥ समग्राण्यपिसिद्ध्यंतिलोकशंकामिमांहरः ॥ कृत्वानिमंत्रयामाससर्वमेवमिदंशुभम् ॥ ५ ॥

टीका—ॐनमश्चण्डिकायै। मार्कण्डेयऋषि जैमिनीसे वर्णन करतेभये परंतु प्रथमशिवकों नमस्कार किया कैसे कि विशुद्धज्ञानहै देह जिनका और तीनों वेदहै दिव्यनेत्र जिनके और कल्याणप्राप्तिको कारण और अर्द्धचंद्रको मस्तकमें धारणकरनेवाले ऐसे शिवको नमस्कार ॥ १ ॥ फिर कहनेलगे मनुष्य मन्त्रोंकाभी यह संपूर्ण कीलक जानों जो निरन्तर इसके जाप्यमें तत्पर रहताहै सो निश्चयकारि क्षेमको प्राप्तहोताहै ॥ २ ॥ और इसके जपमात्रसे उच्चाटन आदि कृत्य सिद्धहोतेहै और यावत्संपूर्ण वस्तुभी सिद्धहोतीहै और इसकरके स्तुति करतेहुओंके देवी स्तोत्रमात्रकरके सिद्धहोतीहै ॥ ३ ॥ और न मन्त्र और न औषध कुछभी तिसके जाप्यके विना सिद्ध नही होवे और तिसी प्रकार संपूर्ण उच्चाटनादिक सिद्ध न होवें ॥४॥ फिरइन मन्त्रोंके प्रभावसे निश्चयकरि संपूर्णवस्तु सिद्धहोतीहै तो लोकमें परस्पर ईर्ष्याकरके अन्याय होजायगा इस लोकशंकाको जानिके शिवजी सब मन्त्रसमुदायकों कीलितकिया॥५॥

स्तोत्रंवैचण्डिकायास्तुतच्चगुप्तंचकारसः ॥ समाप्नोतिसपुण्येनतांयथावन्नियन्त्रणाम् ॥ ६ ॥ सोपिक्षेममवाप्नोतिसर्वमेवन-

संशयः ॥ कृष्णायांवाचतुर्दश्यामष्टम्यांवासमाहितः ॥ ७ ॥ ददातिप्रतिगृह्णातिनान्यथैषाप्रसिद्ध्यति ॥ इत्थंरूपेणकीलेन महादेवेनकीलितम् ॥ ८ ॥ यो निष्कीलां विधायैनांनित्यंज पतिसंस्फुटं ॥ प्रसिद्धःसगणस्सोपिगन्धर्वोजायतेनरः ॥ ९ ॥ नचैवाप्यटतस्तस्यभयंक्वापिहिजायते ॥ नाऽपमृत्युवशंया तिमृतोमोक्षमवाप्नुयात् ॥ १० ॥

टीका—और चंडिकास्तोत्रकों गुप्तकिया और जो पुण्यवान् मनुष्यहै सो पुण्यके प्रभावकरके उस यथावत् नियंत्रणाको प्राप्तहोताहै ॥ ६ ॥ और जो पुरुष कृष्णपक्षकी अष्टमीके और चतुर्दशीके विषे विधिसे सप्तशतीको उपदेश देताहै अथवा ग्रहणकर्त्ताहै वह पुरुष निश्चयकरि क्षेमकों प्राप्तहोताहै और प्रकारसे यह भगवती सिद्ध नही होतीहै इस प्रकारके कीलककरके शिवजीने मन्त्रसमूहको कीलितकिया ॥ ७ ॥ ८ ॥ और जो पुरुष उत्कीलितकरके सुंदरप्रकारसे सप्तशतीको जपताहै सो प्रसिद्ध और गणकरके सहित गन्धर्व होताहै ॥ ९ ॥ और विचरते हुए उस पुरुषको मार्गमें कहूँ भय उत्पन्न नही होताहै और वह मनुष्य अपमृत्युके वश नही प्राप्तहोताहै और मरतेही मोक्षको प्राप्तहोताहै ॥ १० ॥

ज्ञात्वाप्रारभ्यकुर्वीतनकुर्वाणोविनश्यति ॥ ततोज्ञात्वैवसम्प न्नमिदम्प्रारभ्यतेबुधैः ॥ ११ ॥ सौभाग्यादिचयत्किञ्चिद्दृश्यते ललनाजने ॥ तत्सर्वंतत्प्रसादेनतेनजाप्यमिदंशुभम् ॥ १२ ॥ शनैस्तुजप्यमानेस्मिन्स्तोत्रेसम्पत्तिरुच्चकैः ॥ भवत्येवसमग्रा पिततः प्रारभ्यमेवतत् ॥ १३ ॥ ऐश्वर्ययत्प्रसादेनसौभाग्या-रोग्यसम्पदः ॥ शत्रुहानिःपरोमोक्षःस्तूयतेसानकिंजनैः॥१४॥ इति भगवत्याः कीलकस्तोत्रं समाप्तम् ॥ ३ ॥ शुभंभूयात् ॥

टीका—मनुष्य निश्चयात्मक जानिके और विधिसे प्रारंभ करके सप्तश-

तीको अनुष्ठानकरे और विधिसे अनुष्ठान नहीकर्त्ताहुवा मनुष्य नाशको प्राप्त होताहै तिसकारणसे इसको विधान सहित जानिकेही विद्वान् प्रारंभ कर्त्तेहै ॥ ११ ॥ और जो कुछ सौभाग्य आदि स्त्रीजनमें दीखताहै वह सब तुह्मारी कृपा करके है तिसकारणसे तुह्मारा यह शुभस्तोत्र जपना चाहिए ॥ १२ ॥ और धीरेसे यह सप्तशतीस्तोत्र जपे जाते संते अथवा उच्चस्वरसे जपेजाते सन्ते निश्चयकरि मनुष्यके समग्र संपत्ति होतीहै और तबसे लेकरही जिसकी कृपासे ऐश्वर्य सौभाग्य आरोग्य संपत्ति ये होतीहै फिर वह भगवती क्या मनुष्यो करके नहीस्तुति किई जातीहै किन्तु किईही जातीहै ॥ २४ ॥ इति भगवत्याः कीलकस्तोत्रं समाप्तम् ॥ ३ ॥

इति कीलकस्तोत्रं समाप्तम् ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
खेमराजश्रीकृष्णदास
"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापखाना (मुंबई.)

श्रीः ।

अथ दुर्गासप्तशती

भाषाटीकासमेता ।

मार्कण्डेय उवाच ।

सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः ॥ निशामयतदु-
त्पत्तिविस्तराद्गदतोमम ॥ १ ॥ महामायानुभावेनयथामन्वं-
तराधिपः ॥ सबभूवमहाभागः सावर्णिस्तनयोरवेः ॥ २ ॥
स्वारोचिषेंतरेपूर्वंचैत्रवंशसमुद्भवः ॥ सुरथोनामराजाभूत्सम-
स्तेक्षितिमण्डले ॥ ३ ॥ तस्यपालयतःसम्यक्प्रजाः पुत्रानि-
वौरसान् ॥ बभूवुःशत्रवोभूपाः कोलाविध्वंसिनस्तदा ॥ ४ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीकृष्णचन्द्रो विजयतेतराम् ॥ अथ भाषाटीकेयं सप्तशत्याः ॥ एक समय तपस्या करते हुये महात्मा मुनियोंमें श्रेष्ठ ऐसे जो मार्कण्डेय ऋषि तिनसे बड़े तेजस्वी व्यासजीके शिष्य जैमिनि ऋषि प्रश्न करते भये हे मार्कण्डेय बुद्धिमानोंमें श्रेष्ठ सब शास्त्रमें निपुण सब माहात्म्यनमें बड़ा उत्तम जो देवीका माहात्म्य है ताहि श्रवण करिवेकी मेरी इच्छा है सो आप कृपा करि वर्णनकरो तब मार्कण्डेय ऋषि बोले हे जैमिनि तुमसे एक कथाप्रसंग ऐसा वर्णन करूंहूँ ताके बीचमें देवीहीको बहुत माहात्म्य है ताहि तुम श्रवण करो व्यासआदि ऋषियोंनै सूर्यका पुत्र सावर्णि नाम आठवाँ मनु कहा है ताकी उत्पत्ति विस्तारपूर्वक हमसे श्रवण करो ॥१॥ वह सूर्यका पुत्र सावर्णि मनु महामाया भगवतीकी कृपासे जैसे आठवाँ मन्वन्तरका स्वामी होताभया तैसे आप चरित्र श्रवण करो ॥ २ ॥ पहिले स्वारोचिष मन्वन्तरके मध्यमें चैत्रवंशमें उत्पन्न संपूर्ण भूमण्डलमें चक्रवर्त्ती सुरथ नाम राजा होता भया ॥ ३ ॥ कैसा है वह राजा कि प्रजावोंकी पालना पुत्रोंकैसी तरह करनेवाला ताकी राजधानी नष्ट करनेके लिये यवन भूप शत्रु वन संग्राम वास्ते तयार होते भये ॥ ४ ॥

तस्यैतरभवद्युद्धमतिप्रबलदण्डिनः ॥ न्यूनैरपिसतैर्युद्धेको-
लाविध्वंसिभिर्जितः ॥ ५ ॥ ततःस्वपुरमायातोनिजदेशाधि-
पोभवत् ॥ आक्रान्तः समहाभागस्तैस्तदाप्रबलारिभिः ॥६॥
अमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैर्दुर्बलस्यदुरात्मभिः ॥ कोशोबलंचापहृ-
तंतत्रापिस्वपुरेततः ॥ ७ ॥ ततोमृगयाव्याजेनहृतस्वाम्यः
सभूपतिः ॥ एकाकीहयमारुह्यजगामगहनंवनं ॥ ८ ॥

टी०— फिर राजाका शत्रुवोंके साथ बड़ा युद्ध हुवा वह राजा महा प्रबल शत्रुवोंको वश करनेवालाभी था परन्तु दैवयोगतें निर्बलोंनेभी राजाको जीत लिया ॥ ५ ॥ पीछे संग्रामभूमिमें शत्रुवोंसे हारकर अपनी नगरीमें आते भये अपनो देशहीका स्वामी होताभया ॥ ६ ॥ फिर उस नगरीके विषे दुर्बल वसता हुवा राजा ताका राज्य हरणके लिये दुष्ट मंत्रियोंनें फौज खजाना सब अपने वश करलिये ॥ ७ ॥ ऐसे जब राजाका सर्वस्व ले लिया ताके अनन्तर घोड़ापर बैठ शिकारका बहाना लेकर अकेला गंभीर वनको जाता भया ॥ ८ ॥

सतत्राश्रममद्राक्षीद्विजवर्यस्यमेधसः ॥ प्रशांतश्वापदाकीर्णं
मुनिशिष्योपशोभितं ॥ ९ ॥ तस्थौकंचित्सकालंचमुनिना
तेनसत्कृतः ॥ इतश्चेतश्चविचरंस्तस्मिन्मुनिवराश्रमे ॥१०॥
सोचिंतयत्तदातत्रममत्वाकृष्टमानसः ॥ मत्पूर्वैःपालितंपूर्वंम-
याहीनंपुरंहितत् ॥ मद्भृत्यैस्तैरसद्वृत्तैर्धर्मतःपाल्यतेनवा ॥
॥ ११ ॥ नजानेसप्रधानोमेशूरहस्तीसदामदः ॥ ममवैरिवशं
यातःकान्भोगानुपलप्स्यते ॥ १२॥

टी०— फिर वा वनके विषे पशुहिंसासे रहित शान्त स्वभाववाले सिंह वगैरह करिके युक्त मुनिकी शिष्यमण्डलीसे शोभित ऐसा सुमेधा ऋषिका आश्रम देखताभया ॥ ९ ॥ ताके अनन्तर जहां तहां विचरताहुवा मुनिके

आश्रममें पहुँचता भया मुनिने कोमल वचनोंसे राजाका सत्कार किया पश्चात् कुछ काल ता आश्रममें राजा निवासभी करता भया ॥ १० ॥ तब वा आश्रमके विषे ममता करिकै व्याकुल है बुद्धि जिसकी ऐसा जो सुरथ राजा है सो चिन्ता करता भया कि हाय ! जो पुर पहिले मेरे बडोंने वसा कर पालन किया था सो पुर मेरेसे शत्रुवोंने ले लिया फिर इस प्रकार मनमें विचार करने लगा कि निश्चय करिके दुष्ट है चरित्र जिनके ऐसे मेरे मंत्रियोंसे आदि लेकर जे नौकर हैं वे मेरे पुरकी धर्मपूर्वक पालना करतेहैं या नहीं॥ ११ ॥ और मेरा शूर हस्ती जो सदा मत्त रहता था वह मेरा शत्रुवोंके वश होकर कौनसे भोग भोगता होगा ॥ १२ ॥

येममानुगतानित्यंप्रसादधनभोजनैः ॥ अनुवृत्तिंध्रुवंतेद्यकुर्वं-त्यन्यमहीभृताम् ॥ १३ ॥ असम्यग्व्ययशीलैस्तैः कुर्वद्भिः सततंव्ययम्॥ संचितःसोतिदुःखेनक्षयंकोशोगमिष्यति॥१४॥ एतच्चान्यच्चसततंचिंतयामासपार्थिवः ॥ तत्रविप्राश्रमाभ्याशे वैश्यमेकंददर्शसः ॥ १५ ॥ सपृष्टस्तेनकस्त्वंभोहेतुश्चागम-नेऽत्रकः ॥ सशोकइवकस्मात्त्वंदुर्मनाइवलक्ष्यसे ॥ १६ ॥

टीका—और जे मेरे सेवक धन भोजनादिक से संतुष्ट थे वे अनाथ और राजावोंकी निश्चय करिकै सेवा करते होंगे ॥ १३ ॥ और बडे दुःखसे संचय कियाहुवा जो खजानाहै सो अब बुरीरीतिसें खर्च करनेवाले मंत्रियोंकरिकै नष्ट होजायगा ॥ १४ ॥ इन वार्तोंकों तथा अन्य वार्तोंकों शोच करिकै राजा शोकयुक्त चिन्ता करताभया ता समय वा आश्रमके समीप राजा एक वेश्यको देखताभया ॥१५॥ और पूछने लगा कि हेभाई ! तुम कौनहो ? किसकारणसे इस अश्रममें तुह्मारा आगमन हुवा ? किसकारणसे तुम शोकयुक्तसे दीखतेहो और विमनसे कैसे दीखतेहो ॥ १६ ॥

इत्याकर्ण्यवचस्तस्यभूपतेःप्रणयोदितम् ॥ प्रत्युवाचसतंवै-श्यःप्रश्रयावनतोनृपं ॥ १७ ॥ वैश्यउवाच ॥ समाधिर्नाम

वैश्योहमुत्पन्नोधनिनांकुले ॥ पुत्रदारैर्निरस्तश्चधनलोभादसा-
धुभिः ॥ १८ ॥ विहीनश्चधनैर्दारैःपुत्रैरादायमेधनम् ॥ वनम-
भ्यागतोदुःखीनिरस्तश्चाप्तबन्धुभिः ॥ १९ ॥ सोहंनवेद्मिपुत्रा-
णांकुशलाकुशलात्मिकाम् ॥ प्रवृत्तिंस्वजनानांचदाराणांचा-
त्रसंस्थितः ॥ २० ॥

टीका— ऐसे कोमल वचन राजाके श्रवण करिकै वैश्य विनयपूर्वक बोलताभया॥१७॥वैश्य बोला हे राजन् मैं समाधिनाम वैश्यहूँ और धनवानोंके वंशमें उत्पन्न हुवाहूँ धनलोभसे पुत्र स्त्री स्वजनों करिकै तिरस्कृतहूँ ॥१८॥ और संपूर्ण स्त्री पुत्र बंधु परिवारने मेरा धन छीनकर तिरस्कार किया सो धनहीन दुःखी होकर दशोंदिशाँमें भ्रमताहुवा वनमें आयाहूँ और पुत्रादिकनसे वियुक्तहूं इसकारणसे मैं शोकयुक्तहूँ ॥ १९ ॥ और मैं या वनके बीचमें स्थित हुवा स्त्री पुत्र मित्रादिकनकी कुशल क्षेमकी वार्त्ताभी नहीं जानताहूँ ॥ २० ॥

किंनुतेषांगृहेक्षेममक्षेमंकिंनुसांप्रतम् ॥ कथंतेकिंनुसद्वृत्तादुर्वृ-
त्ताःकिंनुमेसुताः ॥ २१ ॥ राजोवाच ॥ यैर्निरस्तोभवाँल्लुब्धैः
पुत्रदारादिभिर्धनैः॥तेषुकिंभवतः स्नेहमनुबध्नातिमानसम्२२
वैश्यउवाच ॥ एवमेतद्यथाप्राहभवानस्मद्गतंवचः ॥ किंकरो
मिनबध्नाति ममनिष्ठुरतांमनः ॥ २३ ॥ यैःसन्त्यज्यपितृस्ने
हंधनलुब्धैर्निराकृतः॥पतिस्वजनहार्दंचहार्दितेष्वेवमेमनः॥२४॥

टीका— और स्त्री पुत्र बंधु जनोंके घरमें कुशलहै या नहीं अब यह वार्त्ता कैसे निश्चय करूं वे मेरे पुत्र जे हैं ते सुमार्गमे हैं या कुमार्गमें यह दोनो वार्त्ता मेरेकों कैसे निश्चय होंय ॥ २१ ॥ तब सुरथराजा बोलते भये कि हे वैश्य ! धनके लोभते स्त्री पुत्रादिकोंने तुह्मारा निरादर किया ऐसे कुटिल स्त्री पुत्रादिकनके विषे तुह्मारा चित्त स्नेह कैसे करताहै॥ २२ ॥ वैश्यने कहा कि हे राजन् ! जैसा आपने कहा वह ऐसाही है परंतु मैं क्या करूं मेरा मन कठोरताको नहीं धारणकरता ॥ २३ ॥ धनके लोभी जिन दुष्टोंने पिताका स्नेह

और स्त्रीनें पतिका स्नेह छोडकर मुझको निकालदिया फिर भी तिनमेंही मेरा मन स्नेहयुक्तहे ॥ २४ ॥

किमेतन्नाभिजानामिजानन्नपिमहामते ॥ यत्प्रेमप्रवणंचित्तंवि
गुणेष्वपिबंधुषु ॥ २५ ॥ तेषांकृतेमेनिःश्वासोदौर्मनस्यंचजा-
यते ॥ करोमिकिंयन्नमनस्तेष्वप्रीतिषुनिष्ठुरम् ॥ २६ ॥
मार्कंडेयउवाच ॥ ततस्तौसहितौविप्रतंमुनिंसमुपास्थितौ ॥
समाधिर्नामवैश्योसौसचपार्थिवसत्तमः ॥ २७ ॥ कृत्वातुतौ
यथान्यायंयथार्हंतेनसंविदम् ॥ उपविष्टौकथाःकाश्चिचक्रतुर्वै
श्यपार्थिवौ ॥ २८ ॥

टीका—हेराजन् ! गुण करिके हीन जे मेरे बन्धु हैं तिनके विषेभी मेरा चित्त प्रेमयुक्तहे यह जानताहुवाभी मैं चित्तको रोक नहींसकताहूँ ॥ २५ ॥ हे राजन् और मेरे विषे जिनकी प्रीति नहीं ऐसे जे मेरे पुत्रादिकहैं तिनके लिये मेरेको शोक और चित्तको ग्लानिहे मैं क्याकरूं मेरा चित्त उनके विषे कठोरता धारण नही करताहे ॥ २६ ॥ मार्कण्डेयऋषि बोले· हेजैमिनि ता प्रसंगके अनंतर मित्रभावसे समाधिनाम वैश्य और सुरथराजा ये दोनो सुमे धाऋषिके समीप जा पहुँचे ॥ २७ ॥ फिर· वे दोनोजनोंने यथाशास्त्र और यथायोग्य मुनीश्वरसे संभाषणादि किया फिर मुनीने कोमलवाणीसे सत्कार पूर्वक बैठालिये फिर ये मुनीश्वरसे अपने स्वार्थकी वार्त्ता पूंछतेभये ॥२८॥

राजोवाच॥भगवंस्त्वामहंप्रष्टुमिच्छाम्येकंवदस्वतत् ॥ दुःखा-
ययन्मेमनसःस्वचित्तायत्ततांविना ॥ २९ ॥ ममत्वंगतराज्य
स्यराज्यांगेष्वखिलेष्वपि ॥ जानतोपियथाज्ञस्यकिमेतन्मुनि
सत्तम ॥ ३० ॥ अयंचनिकृतःपुत्रैर्दारैर्भृत्यैस्तथोज्झितः ॥
स्वजनेनचसंत्यक्तस्तेषुहार्दीतथाप्यति ॥३१॥ एवमेषतथाहं
चद्वावप्यत्यंतदुःखितौ॥दृष्टदोषेपिविषयेममत्वाकृष्टमानसौ ३२॥

टीका—राजा बोले कि हे भगवन् तुह्मारेसे एक रहस्य पूछनेकी इच्छा .

करूंहूं ताहि तुम कहो मेरे चित्तकी अपने निश्चयात्मक स्वरूपके विषे एकाग्रता विना जो अवस्थाहै सो दुःख देरहीहै ॥ २९ ॥ हे मुनिसत्तम! राज्य मेरा चलगया यह मैं जानताभीहूँ परंतु स्वामी, अमात्य, सुहृत्, कोश, राष्ट्र दुर्ग बल ये सात राज्यके अंगहै तिनके विषे मेरी अज्ञानीकीसी तरह ममताहै सो क्या कारणहै ॥ ३० ॥ और यह जो वैश्यहै सो पुत्र कलत्रादिकन करिकै तथा भ्रात्रादिकन करिकै त्यक्तहै तौभी उनके विषे अति स्नेहवान्है ॥ ३१ ॥ और हेमुनिसत्तम! ऐसे यह तथा मैं दोनो दुःखी तहाँ देखाहै दोष जाके विषे ऐसे राज्यादिकनके विषेभी ममत्व करिकै आधीनहै मन जिनका ऐसे हमहैं ॥३२॥

तत्किमेतन्महाभाग यन्मोहोज्ञानिनोरपि ॥ ममास्यचभवत्येषाविवेकांधस्यमूढता ॥ ३३ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ज्ञानमस्तिसमस्तस्यजंतोर्विषयगोचरे ॥ विषयाश्चमहाभागयांतिचैवंपृथक्पृथक् ॥ ३४ ॥ दिवांधाःप्राणिनःकेचिद्रात्रावंधास्तथापरे॥ केचिद्दिवातथारात्रौप्राणिनस्तुल्यदृष्टयः ॥३५॥ ज्ञानिनोमनुजाःसत्यंकिंनुतेनहिकेवलं॥यतोहिज्ञानिनःसर्वेपशुपक्षिमृगादयः॥

टीका—सो हेमहाभाग हे मुने जिस कारणसे हम दोनो ज्ञानवानोंकोंभी मोहहै यह क्या कारणहै जा मोहते यह विवेकरहित मनुष्यके योग्य जो अज्ञानता सो हमको होरहीहै ॥ ३३ ॥ तव ऋषि बोले कि हेराजन्! समस्त प्राणियोंकों इंद्रियके विषयमे ज्ञानहै और मोक्षके विषे ज्ञान नहींहै और हे महाभाग इन्द्रियनकी जे वृत्तिहैं ते पृथक् पृथक् विषयताको प्राप्त होरहीहैं ॥३४॥ हेराजन्! कितेक उलूकादिक प्राणी दिनमें दृष्टि हीनहैं और कित्तेक काकादिक प्राणी रात्रिके विषे दृष्टिहीनहैं और कित्तेक प्राणी अश्वसे आदि लेकर रात्रि दिनके विषे तुल्य दृष्टिवालेहैं ॥ ३५ ॥ हेराजन्! तुमने कहा कि मनुष्य ज्ञानीहैं सो सत्यहै परंतु केवल मनुष्यही ज्ञानी नहींहै किन्तु मनुष्योंते अन्य पशु पक्षी मृगादिक ये सब ज्ञानी हैं ॥ ३६ ॥

ज्ञानंचतन्मनुष्याणांयत्तेषांमृगपक्षिणाम्॥मनुष्याणांचयत्तेषां
तुल्यमन्यत्तथोभयोः॥३७॥ज्ञानेपिसतिपश्यैतान्पतङ्गाञ्छा-
वचंचुषु॥कणमोक्षाहृतान्मोहात्पीड्यमानानपिक्षुधा॥ ३८॥
मानुषामनुजव्याघ्रसाभिलाषाःसुतान्प्रति॥ लोभात्प्रत्युपका
रायनन्वेतान्किंनपश्यसि॥ ३९॥ तथापिममतावर्तेमोहगर्ते
निपातिताः॥ महामायाप्रभावेणसंसारस्थितिकारिणा॥४०॥

टी०- हे राजन्! जो स्वभावोत्पन्न ज्ञान मृग पक्षियोंको है वह मनुष्य-नको नहीं है और मनुष्यनको जो शास्त्रोक्त ज्ञान है सो मृग पक्षियोंको नहीं है और आहार निद्रा विषयादि ज्ञान मनुष्य मृग पक्षी इत्यादिकनको समान है॥ ३७॥ और हे राजन् क्षुधा करिकै पीडित जे पक्षी हैं तिनको यह ज्ञान-भी है कि जे कण पुत्रोंके मुखमें गेरिवे योग्य हैं ते कण हम भक्षण करितें तो क्षुधा हमें बाधा नहीं करैं तौभी मोहते अपने पुत्रोंके चंचुवोंमें कण गेरदेते हैं इन्हें तुम देखो ॥ ३८ ॥ और हे मनुजव्याघ्र वृद्धावस्थामें ये हमारी सेवा करेंगे इस प्रयोजनके लोभते पुत्रनके विषे मनुष्य कामनासहित व्है रहैं और इन्हे पशु पक्षी मृगादिक केवल ममतासेही पुत्रनके विषे आदरयुक्त हैं इन्हे तुम नहीं देखते हो और पुत्र प्रत्युपकारके लिये नहीं होतेहैं यह क्या तुम नहीं देखते हो ॥ ३९ ॥ हे राजन्! तौभी संसारकी पालना करनेवाला ऐसा जो महामायाका प्रभाव ताने या संसार रूपी समुद्रके ममतारूपी भँवरके मोहरूपी जो खाडा ताके विषे मनुष्यनको पटकरक्खे है ॥ ४० ॥

तन्नात्रविस्मयःकार्योयोगनिद्राजगत्पतेः ॥ महामायाहरेश्चै
षातयासंमोह्यतेजगत्॥ ४१॥ ज्ञानिनामपिचेतांसिदेवीभग-
वतीहिसा॥ बलादाकृष्यमोहायमहामायाप्रयच्छति॥ ४२॥
तयाविसृज्यतेविश्वंजगदेतच्चराचरम्॥ सैषाप्रसन्नावरदानृणां
भवतिमुक्तये॥ ४३॥ साविद्यापरमामुक्तेर्हेतुभूतासनातनी॥
संसारबंधहेतुश्चसैवसर्वेश्वरेश्वरी॥ ४४॥

टी०– सो या बातके विषे आश्चर्य करना योग्य नहीं क्यों कि जगत्के स्वामी विष्णुकी जो योगनिद्रा महामाया है ताने जगत्को मोहित कर राखा है ॥ ४१ ॥ हे राजन् ! कैसी है वह महामाया कि उपनिषदोंके विषे वर्णन किया जो ज्ञान है ताका अनुभव करनेवाले ऐसे जे ज्ञानवान् पुरुष हैं तिन केभी चित्तनको बलसे खैंच कर ममताके आधीन करती है ॥ ४२ ॥ फिर हे राजन् ! वह भगवती कैसी है कि ता करिकै समस्त चराचर जगत् रचा जाता है सो यह प्रसन्न होनेसे मनुष्यनको वरदान और मोक्ष देतीहै ॥ ४३ ॥ परन्तु हे राजन् उस मायाके दो भेद हैं एक तो विद्या और दूसरी अविद्या जो अविद्या रूपा माया है सो संसारके बन्धनमें कारण है और ब्रह्मादिकन कीभी स्वामिनी है और जो सनातनी विद्या रूपा माया है सो मोक्षका कारण है ॥ ४४ ॥

राजोवाच ॥ भगवन्काहिसादेवीमहामायेतियांभवान् ॥ ब्रवीतिकथमुत्पन्नासाकर्मास्याश्चकिंद्विज ॥ ४५ ॥ यत्प्रभावाचसादेवीयत्स्वरूपायदुद्भवा ॥ तत्सर्वंश्रोतुमिच्छामित्वत्तो ब्रह्मविदांवर ॥ ४६ ॥ ऋषिरुवाच ॥ नित्यैवसाजगन्मूर्तिस्तयासर्वमिदंततम् ॥ तथापितत्समुत्पत्तिर्बहुधाश्रूयतांमम ॥ ४७ ॥देवानांकार्यसिद्ध्यर्थमाविर्भवतिसायदा ॥ उत्पन्नेतितदालोकेसानित्याप्यभिधीयते ॥ ४८ ॥

टीका– तब राजा बोले हे भगवन् हे द्विज वह कौनसी देवी है जिसको आप महामाया कहतेहैं और कैसे उत्पन्न भई है इसका क्या कर्म है और क्या पराक्रम है ॥ ४५ ॥ और हे ब्रह्मवेत्ताओंमें श्रेष्ठ उस देवीका कैसा सामर्थ्य है और कैसा स्वरूप है और कैसा प्रादुर्भाव है ये संपूर्ण बात तुमसे श्रवण करिबेकी मेरी इच्छा है ॥ ४६ ॥ तब ऋषि बोले संपूर्ण जगत्की आश्रयभूत शक्ति जा करिकै जगत् रचाहुवा है वह किसी करिकै रचित नहीं है तौभी बहुधा लोकके उपकारके वास्ते वाकी उत्पत्ति मेरेसे श्रवण

करो ॥ ४७॥ हे राजन्! जब देवतानके कार्यकी सिद्धिके लिये प्रकट होती है तब वह नित्यभी है परन्तु लोकमें उत्पन्न भई है यह कहा जाता है॥४८॥

योगनिद्रांयदाविष्णुर्जगत्येकार्णवीकृते ॥ आस्तीर्यशेषमभजत्कल्पांतेभगवान्प्रभुः ॥ ४९ ॥ तदाद्वावसुरौ घोरौ विख्यातौमधुकैटभौ॥विष्णुकर्णमलोद्भूतौहंतुंब्रह्माणमुद्यतौ ॥५० ॥ सनाभिकमलेविष्णोःस्थितोब्रह्माप्रजापतिः ॥ दृष्ट्वातावसुरौ चोग्रौप्रसुप्तंचजनार्दनम् ॥ ५१ ॥ तुष्टावयोगनिद्रांतामेकाग्रहृदयःस्थितः ॥ विबोधनार्थायहरेर्हरिनेत्रकृतालयां ॥५२ ॥

टीका– हे राजन् ब्रह्माके दिनके अनन्तर जो प्रलय ताकेविषे जब सात समुद्र करिके जुदा जुदा स्थापन किया हुवा जगत् एकार्णवताको प्राप्त हो गया ता समयकेविषे भगवान् ऐश्वर्यादिकनकरिकै सहित शेषशय्या बिछाय कर योगनिद्राका सेवन करते भये अर्थात् शयन करते भये ॥ ४९ ॥ ता शयनसमयकेविषे विष्णुके कानोंके मैलसे मधु और कैटभ ये दो दैत्य उत्पन्न होते भये और ब्रह्माके मारनेको तयारभये ॥ ५० ॥ तब वह ब्रह्मा विष्णुकी नाभिकमलमें स्थित हुवा बड़े भयंकर असुरोंको देखकर और भगवान्को योगनिद्रासे शयन करता हुवा देखकर ॥ ५१ ॥ एकाग्र चित्त होयकर विष्णुके जगानेके लिये हरिके नेत्रोंमें कियो है निवास जाने ऐसी जो योगनिद्रा है ताकी स्तुति करतो भयो ॥ ५२ ॥

विश्वेश्वरींजगद्धात्रींस्थितिसंहारकारिणीम् ॥ निद्रांभगवतींविष्णोरतुलांतेजसःप्रभुः ॥ ५३ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ त्वंस्वाहात्वंस्वधात्वंहिवषट्कारःस्वरात्मिका ॥ सुधात्वमक्षरेनित्येत्रिधामात्रात्मिकास्थिता ॥ ५४ ॥ अर्धमात्रास्थितानित्यायानुच्चार्याविशेषतः ॥त्वमेवसंध्यासावित्रीत्वंदेविजननीपरा॥५५॥ त्वयैतद्धार्यतेविश्वंत्वयैतत्सृज्यतेजगत् ॥ त्वयैतत्पाल्यतेदेवित्वमत्स्यंतेचसर्वदा ॥ ५६ ॥

टीका– ब्रह्मा बोले अनंत है तेज जिनका ऐसे जे विष्णु तिनकी योगनिद्रा जो तुम हो तुह्मारी मैं स्तुति करता हूँ केसी हो आप संसारकी रचनेवाली फिर कैसी हो आप जगत्का पोषण करनेवाली फिर केसी हो आप जगत्का पालन और संहार करनेवाली ॥ ५३ ॥ फिर कैसी हो आप देवतावोंको हविर्दानमें स्वाहा मन्त्ररूप हो और पित्रीश्वरोंको अन्नदानमें स्वधा मन्त्ररूप हो और वषट्काररूप हो अर्थात् यज्ञरूप हो फिर कैसी हो तुम अकारसे आदि लेकर जे सोलह स्वर हैं तेई हैं स्वरूप जाको ऐसी हो फिर कैसी हो देवतावोंके अन्नस्वरूप हो हे वृद्धि ह्रास करिके रहित हे नित्ये ब्राह्मी वैष्णवी माहेश्वरी ये लोकमाता है स्वरूप जाको इस तरह तीन प्रकारसे विराजमान हो ॥ ५४ ॥ हे भगवती फिर तुम कैसी हो जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति इन तीन अवस्थासे जुदी चौथी अवस्थाको प्राप्त ॐकारकेविषे अर्धमात्रारूप विराजमान हो और नित्य हो और आप परमात्मस्वरूप हो याते विशेषकरिके वर्णन नहीं करी जाती हो फिर कैसी हो संध्यारूप हो और सावित्री रूप हो और वेदोंकी माता गायत्रीरूप तुम हो ॥ ५५ ॥ फिर कैसी हो संपूर्ण जगत्को धारण करती हो और ब्राह्मी शक्तिरूपकरिके जगत् रचती हो और वैष्णवी शक्तिरूपसे पालना करती हो और माहेश्वरी शक्तिरूपसे प्रलयविषे जगत्का संहार करती हो फिर भक्तोंको सर्व वस्तु देतीहो ५६ ॥

विसृष्टौसृष्टिरूपात्वंस्थितिरूपाचपालने ॥ तथासंहृतिरूपांतेजगतोस्यजगन्मये ॥ ५७ ॥ महाविद्यामहामायामहामेधामहास्मृतिः ॥ महामोहाचभवतीमहादेवीमहेश्वरी॥प्रकृतिस्त्वंचसर्वस्यगुणत्रयविभाविनी॥५८॥कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्चदारुणा ॥ ५९ ॥ त्वंश्रीस्त्वमीश्वरीत्वंह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा॥लज्जापुष्टिस्तथातुष्टिस्त्वंशांतिःक्षांतिरेवच ६०॥

टीका– हे जगन्मये फिर कैसी हो विशेषकरिके, जगत्के रचनेमें सृष्टिरूप तुम हो और पालनेविषे स्थितिरूप हो और संहारकेविषे संहृतिरूप

हो ॥ ५७ ॥ और परब्रह्मको जाननेवाला ज्ञानरूप तुम हो और शरीरादि-कोंके विषे जो आत्मबुद्धि ऐसी महामायारूप तुम हो और ध्यानरूप हो और महाममतारूप हो ऐश्वर्य युक्त हो और समस्त देवशक्तिरूप हो और हिरण्याक्षादि शक्तिरूप हो ॥ ५८ ॥ जाके विषे विश्वको लय होय ऐसी कालरात्रि रूप तुम हो और जाके विषे ब्रह्माको मोक्ष होय ऐसी महारात्रि रूप तुम हो और संसारको रचनेवाली मोहरात्रिरूप तुम हो ॥ ५९ ॥ फिर कैसी हो श्रीः लक्ष्मीबीजरूप हो क्लीं कामबीजरूप तुमहो त्वं ह्रीः अर्थात् तुम भुवनेशी बीजरूपतुम हो निर्णयात्मक है स्वरूप जाको ऐसा अंतःकरणरूपी तुम हो और लज्जारूप हो पुष्टिरूप हो संतोष रूप हो शांतिरूप हो अर्थात् विषयोंसे इन्द्रि-योंका त्यागरूपी तुम हो और शांतिरूप हो अर्थात् सामर्थ्य होता सता अप-राध सहिष्णुतारूपी तुम हो ॥ ६० ॥

खड्गिनीशूलिनीघोरागदिनीचक्रिणीतथा ॥ शंखिनीचापिनी-वाणभुशुंडीपरिघायुधा ॥ ६१ ॥ सौम्यासौम्यतराशेषसौ-म्येभ्यस्त्वतिसुंदरी॥परापराणांपरमात्वमेवपरमेश्वरी ॥६२॥ यच्चकिंचित्क्वचिद्वस्तुसदसद्वाखिलात्मिके ॥ तस्यसर्वस्यया शक्तिःसात्वंकिंस्तूयसेमया॥६३॥ययात्वयाजगत्स्रष्टाजगत्पा-त्यत्तियोजगत्॥सोपिनिद्रावशंनीतःकस्त्वांस्तोतुमिहेश्वरः ६४॥

टीका– खड्ग, त्रिशूल, गदा, चक्र, शंख, धनुष, वाण, भुशुंडी, परिघ इन शस्त्रोंको धारण करनेवालीहो और एक शत्रुको मुंड लेराखो याते बडी भयं-कर रूपहो ॥ ६१ ॥ फिर कैसीहो भक्तोंकेविषे सौम्यरूप अर्थात् शांतरूपहे और दैत्योंके क्रूररूपहो और संपूर्ण सुन्दर वस्तुवोंसे बडी सुन्दरहो और पश्यंती मध्यमा वैखरी इनका बीज रूप हो उत्कृष्ट जेहैं तिनमें परमप्रधान तुमही हो याते तुम परमेश्वरीहो ॥ ६२ ॥ हे अखिलात्मिके देवि या जगत्के विषे जो कुछ कहूँ सत् असत् वस्तु प्रतीत होताहै ता संपूर्णकी शक्ति अर्था-त् सामर्थ्य तुमही हो याते अस्मदादिकरिकै कैसे स्तुति कियेजावो ॥ ६३ ॥

और ब्रह्म, विष्णु, रुद्ररूप करिकै जगत्का उत्पत्ति पालन संहार करनेवाला जो भगवान्है सोभी तुमने निद्राके वशकरदिया याते तुह्मारी स्तुति करनेको कौन समर्थहै ॥ ६४ ॥

विष्णुःशरीरग्रहणमहमीशानएवच ॥ कारितास्तेयतोतस्त्वां कःस्तोतुं शक्तिमान्भवेत् ॥ ६५ ॥ सात्वमित्थंप्रभावैःस्वैरुदारैर्देविसंस्तुता ॥ मोहयैतौदुराधर्षावसुरौमधुकैटभौ ॥६६॥ प्रबोधंचजगत्स्वामीनीयतामच्युतोलघु ॥ बोधश्चक्रियतामस्य हंतुमेतौमहासुरौ ॥ ६७ ॥ ऋषिरुवाच ॥ एवंस्तुतातदादेवी तामसीतत्रवेधसा ॥ विष्णोःप्रबोधनार्थायनिहंतुंमधुकैटभौ ॥६८॥

टीका— फिर कैसीहो विष्णु और मै और रुद्र इनकोभी तुमने शरीर धारण करवादिया ऐसी महामाया जो आपहो आपकी स्तुति करनेको कौन समर्थहोय ॥ ६५ ॥ ऐसे उदार अपने माहात्म्योंकरिकै स्तुतिकीगई ऐसी जो तुम हो ये बडे भयंकर जे मधुकैटभ दैत्य हैं तिनको मोहनकरो ॥ ६६ ॥ हे देवि जगत्का स्वामी जो विष्णुहै ताको शीघ्र जगावो और मधुकैटभको मारनेको भगवतकी बुद्धिको उत्साह करो ॥ ६७ ॥ तब ऋषि बोले हे राजन् या रीतिसे जब ब्रह्माने भगवतीकी स्तुति करी तब योगनिद्रा भगवती विष्णुको जगानेके लिये और मधुकैटभ दैत्योंको मारनेके लिये ॥ ६८ ॥

नेत्रास्यनासिकाबाहुहृदयेभ्यस्तथोरसः ॥ निर्गम्यदर्शनेतस्थौब्रह्मणोव्यक्तजन्मनः ॥ ६९ ॥ उत्तस्थौचजगन्नाथस्तया मुक्तोजनार्दनः ॥ एकार्णवेहिशयनात्ततः सददृशेचतौ ॥७०॥ मधुकैटभौ दुरात्मानावतिवीर्यपराक्रमौ ॥ क्रोधरक्तेक्षणावत्तुं ब्रह्माणंजनितोद्यमौ ॥ ७१ ॥ समुत्थायततस्ताभ्यांयुयुधेभगवान्हरिः ॥ पंचवर्षसहस्राणिबाहुप्रहरणोविभुः ॥ ७२ ॥

टीका— विष्णुका नेत्र मुख नासिका भुजा और हृदय वक्षःस्थल इनसे निकसकर ब्रह्माके सन्मुख स्थित होतीभई ॥ ६९ ॥ तब वा समुद्रके

विप योगनिद्राकरिके त्यक्त विष्णु शेषशय्यासे उठतेभये और मधुकैटभ दैत्योंको देखतेभये ॥ ७० ॥ फिर मधु कैटभ दैत्य कैसेहैं बडे पराक्रमी हैं और क्रोधकरिकै लालहैं नेत्र जिनोंके ब्रह्माको भक्षण करनेको कररारुयोहै उद्यम जिनोंने ॥ ७१ ॥ ऐसे मधुकैटभ दैत्योंसे उठकरिके भगवान् युद्ध करते भये भुजाहीहै शस्त्र जिसके ऐसे भगवान् पांचहजार वर्ष उन दैत्योंके साथ युद्ध करतेभये ॥ ७२ ॥

तावप्यतिबलोन्मत्तौमहामायाविमोहितौ ॥ उक्तवंतौवरोस्मत्तोव्रियतामितिकेशवं ॥ ७३ ॥ भगवानुवाच ॥ भवेतामद्य मे तुष्टौ ममवध्यावुभावपि ॥ किमन्येनवरेणात्रएतावद्धिवृतंमया ॥ ७४ ॥ ऋषिरुवाच ॥ वंचिताभ्यामितितदासर्वमापोमयंजगत् ॥ विलोक्यताभ्यांगदितोभगवान्कमलेक्षणः ॥७५॥ प्रीतौस्वस्तवयुद्धेन श्लाघ्यस्त्वंमृत्युरावयोः ॥ आवांजहिनयत्रोर्वीसलिलेनपरिप्लुता ॥ ७६ ॥

टीका– ताके अनन्तर बलकरिके उन्मत्त और महामायाकरिकै मोहित वे दैत्य बोले हे विष्णो तुह्मारे युद्धसे हम बडे प्रसन्नभये तुम हमसे वरदान मांगो ॥ ७३ ॥ तव श्रीभगवान् बोले जो तुम मेरे ऊपर प्रसन्नहो तो दोनो मेरेहाथ मृत्युको प्राप्त हो और वरदानोंसे मेरेको कुछ प्रयोजन नहीं यह वरदान मैं मांगा है ॥ ७४ ॥ तब ऋषि बोले कि हे राजन् जब भगवान् वरदान मांगिके दैत्योंको ठगलिया तब संपूर्ण जगतको जलमयी देखकर भगवानूसे कहते भये ॥ ७५ ॥ कि हे विष्णो वहां हमको मारो जहां जलसे डुबीहुई पृथ्वी नहींहै ॥ ७६ ॥

ऋषिरुवाच ॥ तथेत्युक्त्वाभगवताशंखचक्रगदाभृता ॥ कृत्वा चक्रेणवैछिन्नेजघनेशिरसीतयोः ॥ ७७ ॥ एवमेपासमुत्पन्नाब्रह्मणासंस्तुतास्वयं ॥ प्रभावमस्यादेव्यास्तुभूयः शृणुवदामिते

ऐंॐ ॥ ७८ ॥ इतिमार्कण्डेयपुराणेसावर्णिकेमन्वन्तरेदेवीमाहात्म्ये मधुकैटभवधोनामप्रथमोध्यायः ॥ १ ॥

टीका– तब ऋषि बोले कि हे राजन् शंख चक्र गदाको धारण करने वाले तुम कहो जैसेही सही ऐसा दैत्योंसे कहकरिकै अपनी जंघापर उनका शिर रखके सुदर्शनचक्रसे काटतेभये ॥ ७७ ॥ हे राजन् ऐसी रीतिसे भगवती उत्पन्न भईहै जाकी स्तुति करिहै फिर या देवीको माहात्म्य तुह्मारे अर्थ वर्णन करूहूं सो श्रवणकरो ॥ ७८ ॥ इति श्रीमार्कंडेयपुराणेदेवीमाहात्म्येमधुकैटभवधोनामप्रथमोध्यायः ॥ १ ॥

ऋषिरुवाच ॥ देवासुरमभूद्युद्धंपूर्णमब्दशतंपुरा ॥ महिषे सुराणामधिपेदेवानांचपुरंदरे ॥ १ ॥ तत्रासुरैर्महावीर्यैर्देवसैन्यंपराजितम् ॥ जित्वाचसकलान्देवानिंद्रोभून्महिषासुरः ॥ ॥ २ ॥ ततःपराजितादेवाः पद्मयोनिंप्रजापतिम् ॥ पुरस्कृत्यगतास्तत्रयत्रेशगरुडध्वजौ ॥ ३ ॥ यथावृत्तंतयोस्तद्वन्महिषासुरचेष्टितम् ॥ त्रिदशाःकथयामासुर्देवाभिभवविस्तरम्॥४॥

टीका– तब पहिले सुमेधा ऋषि बोले हे सुरथ राजन् असुरोंका राजा महिषासुर होता भया और देवतावोंका स्वामी इंद्र होता भया देवदानवोंका परस्पर पूर्ण सौ वर्षपर्यन्त युद्ध होता भया ॥ १ ॥ ता युद्धकेंविषे असुरोंकी फौजने देवतावोंकी फौज हरा दई पीछे संपूर्ण देवतानको जीतकर महिषासुर इन्द्र होतो भयो ॥ २ ॥ ताके अनन्तर देवता हार कर ब्रह्माजीको अगाडी करिके जहां महादेवजी और भगवान् थे वहाँ जाते भये ॥ ३ ॥ जैसा महिषासुरका करा हुवा देवोंका तिरस्कार रूपी वृत्तान्त था तैसा संपूर्ण वृत्तान्त शिव विष्णुके आगे देवता कहते भये ॥ ४ ॥

सूर्येंद्राग्न्यनिलेंदूनांयमस्यवरुणस्यच ॥ अन्येषांचाधिकारान्सस्वयमेवाधितिष्ठति ॥ ५ ॥ स्वर्गान्निराकृताःसर्वेतेनदेवगणाभुवि ॥ विचरंतियथामर्त्या महिषेणदुरात्मना ॥ ६ ॥ एतद्वःकथितंसर्वममरारिविचेष्टितम् ॥ शरणंवःप्रपन्नाःस्मोव-

धस्तस्यविचिंत्यतां ॥ ७ ॥ ऋपिरुवाच ॥ इत्थंनिशम्यदेवा-
नांवचांसिमधुसूदनः॥ चकारकोपंशंभुश्चभ्रुकुटीकुटिलाननौ॥८॥

टीका— सूर्य इन्द्र अग्नि वायु चंद्र इनका और यमराज और वरुणका और संपूर्ण देवताका अधिकारकेविषे स्वयं महिपासुर स्थित है ॥ ५ ॥ वा महिपासुर दुष्टने संपूर्ण देवोंको स्वर्गसे निकाल दिया अब सब देवतामनुष्योंकी तरह पृथ्वीमें विचरते है ॥ ६ ॥ हे महाराज महिपासुरकी जो दुष्टचेष्टा है सो आपके आगे हमने कही हम आपकी शरण प्राप्त हैं सो आप इस दुष्टको मारनेको उपाय चिंतवन करो ॥ ७ ॥ या प्रकारसे देवतोंका वचन श्रवणकरिकै भ्रुकुटी चढाकर टेढा कर लिया है मुख जिनोंने ऐसै जे विष्णु और शिव ते कोप करते भये ॥ ८ ॥

ततोतिकोपपूर्णस्यचक्रिणोवदनात्ततः ॥ निश्चक्राममहत्तेजो
ब्रह्मणः शंकरस्यच ॥ ९ ॥ अन्येषांचैवदेवानांशक्रादीनांश-
रीरतः ॥ निर्गतंसुमहत्तेजस्तच्चैक्यंसमगच्छत ॥ १० ॥ अ-
तीवतेजसःकूटंज्वलंतमिवपर्वतं ॥ ददृशुस्तेसुरास्तत्रज्वाला
व्याप्तदिगंतरं ॥ ११ ॥ अतुलंतत्रतत्तेजःसर्वदेवशरीरजं ॥
एकस्थंतदभून्नारीव्याप्तलोकत्रयंत्विषा ॥ १२ ॥

टीका— ताके अनन्तर अत्यंत कोपकरिकै पूर्ण जो विष्णु और शिव तिनके मुखसे बडा तेज निकलता भया ॥ ९ ॥ फिर इन्द्रादिक देवोंकाभी शरीरसे बडा तेज निकला वह सब इकट्ठा होता भया ॥ १० ॥ ताके अनंतर उस देव सभाके विषे लटाँकरिकै प्रकाशित कियो है दशोंदिशाँको मध्य जाने ऐसा अत्यंत जो तेजका समुदाय है ताको इन्द्रादिक देव देखते भये फिर कैसा है वह तेज जानो प्रकाशमान हेमाद्रिपर्वतही विराजमान है ॥११॥ कात्यायन ऋषिके आश्रममें सब देवोंके शरीरसे निकला हुआ जो इकट्ठो अनंत तेज है सो स्त्रीरूप होताभया फिर कैसा है वह तेज अपनी दीप्तिकरिकै प्रकाशित किये है तीनों लोक जाने ॥ १२ ॥

यदभूच्छांभवंतेजस्तेनाजायततन्मुखं ॥ याम्येनचाभवन्के-
शाबाहवोविष्णुतेजसा ॥ १३ ॥ सौम्येनस्तनयोर्युग्मंमध्यं
चैंद्रेणचाभवत्॥वारुणेनचजंघोरूनितंबस्तेजसाभुवः ॥ १४॥
ब्रह्मणस्तेजसापादौतदंगुल्योर्कतेजसा ॥ वसूनांचकरांगुल्यः
कौबेरेणचनासिका ॥ १५ ॥ तस्यास्तुदंताःसंभूताःप्राजाप-
त्येनतेजसा ॥ नयनत्रितयंजज्ञेतथापावकतेजसा ॥ १६ ॥

टीका– फिर जो शंभुका तेज था वाते उस स्त्रीका मुख होता भया और यमके तेजसे केश होते भये विष्णुके तेजसे भुजा होती भई ॥ १३ ॥ सोमके तेजसे दोनो स्तन होते भये इन्द्रके तेजसे उदर होता भया वरुणके तेजसे जंघा और पींडी ये होती भई पृथ्वीके तेजसे कटिके पीछेका भाग होता भया ॥ १४ ॥ ब्रह्माके तेजसे पैर होते भये सूर्यके तेजसे पैरोंकी अंगुलियां होती भई वसुदेवताके तेजसे हाथोंकी अंगुलीयां होती भई कुबेरके तेजसे नासिका होती भई ॥ १५ ॥ प्रजापतियोंके तेजसे उसके दाँत होते भये अग्निके तेजसे तीन नेत्र उत्पन्न होते भये ॥ १६ ॥

भ्रुवौचसंध्ययोस्तेजःश्रवणावनिलस्यच ॥ अन्येषांचैवदेवानां
संभवस्तेजसांशिवा ॥ १७ ॥ ततस्समस्तदेवानांतेजोरा-
शिसमुद्भवाम् ॥ तांविलोक्यमुदंप्रापुरमराधमहिषार्दिताः॥१८॥
ततोदेवाददुस्तस्यैस्वानिस्वान्यायुधानिच ॥ ऊचुर्जयजये-
त्युच्चैर्जयन्तींतेजयैषिणः ॥१९॥ शूलंशूलाद्विनिष्कृष्यददौ
तस्यैपिनाकधृक्॥चक्रंचदत्तवान्कृष्णःसमुत्पाट्यस्वचक्रतः२०॥

टीका– संध्याके तेजसे भृकुटी होती भई वायुके तेजसे दोनो कान होते भये इन देवतोंका और अन्य देवतोंके तेजका एकाकी भाव है सो शिवा नामकरिके प्रसिद्ध भई ॥ १७ ॥ फिर समस्त देवताके तेजसे उत्पन्न भई ऐसी भगवतीको देखकरिके महिषासुरकरिकै पीडित जे देवता है वे आनंदको प्राप्त होतेभये ॥ १८ ॥ ताके अनन्तर भगवतीको देवता अपना अपना

शस्त्र देते भये और उच्च स्वरसे जयजयकार शब्द करते भये ॥ १९ ॥ महादेवजी भगवतीको त्रिशूलसे त्रिशूल उत्पन्न कर देतेभये कृष्ण सुदर्शन चक्रसे चक्र खेंचकर देते भये ॥ २० ॥

शंखंचवरुणःशक्तिंददौतस्यैहुताशनः ॥ मारुतोदत्तवांश्चापं
बाणपूर्णेतथेषुधी ॥ २१ ॥ वज्रमिंद्रःसमुत्पाद्यकुलिशादमरा-
धिपः॥ ददौतस्यैसहस्राक्षोघंटामैरावताद्गजात् ॥ २२ ॥ काल
दंडाद्यमोदंडंपाशंचांबुपतिर्ददौ ॥ प्रजापतिश्चाक्षमालांददौ
ब्रह्माकमंडलुम्॥२३॥समस्तरोमकूपेषुनिजरश्मीन्दिवाकरः॥
कालश्चदत्तवान्खड्गंतस्यैचर्मचनिर्मलम् ॥ २४ ॥

टीका– वरुण शंख देते भये अग्नि शक्ति शस्त्र देते भये वायु धनुष और दो बाँणोंके भरे तूणीर देता भया ॥ २१ ॥ अपने वज्रसे वज्र उत्पाटन करिके इन्द्र वज्र देतो भयो और ऐरावत हाथीसे घंटा लेकर देतो भयो ॥ २२ ॥ यम कालदण्डसे दण्ड उत्पन्न करिकै देतो भयो वरुण अपने पाशसे पाश उत्पन्न करिकै देतो भयो और प्रजापति ब्रह्मा जयमाला और कमण्डलु देतो भयो ॥ २३ ॥ वा देवीके संपूर्ण रोम कूप जे हैं तिनके विषे सूर्य अपनी किरण देते भये उस भगवतीको काल खड्ग देतो भयो और श्रेष्ठ ढाल देतो भयो ॥ २४ ॥

क्षीरोदश्चामलंहारमजरेचतथांबरे ॥चूडामणिंतथादिव्यंकुंडले
कटकानिच॥२५॥अर्धचंद्रंतथाशुभ्रंकेयूरान्सर्वबाहुषु॥ नूपुरौ
विमलौतद्वद्ग्रैवेयकमनुत्तमम् ॥ अंगुलीयकरत्नानिसमस्ता-
स्वंगुलीषुच ॥ २६ ॥ विश्वकर्माददौतस्यैपरशुंचातिनिर्मलं॥
अस्त्राण्यनेकरूपाणितथाभेद्यंचदंशनम्॥२७॥अम्लानपंकजां
मालांशिरस्युरसिचापरां॥अददज्जलधिस्तस्यैपंकजंचातिशोभनं॥

टीका– क्षीरोद समुद्र निर्मल हार देतोभयो और नवीनवस्त्र देतोभयो ॥ २५ ॥ दिव्य चूडामणि रत्न तथा कुण्डल और कडा और अर्द्धचंद्र सं-

पूर्ण भुजामें बाजू और निर्मल बिछिया और गलेमें पहरनेकी रत्नजडित माला और समस्त अंगुलियोंके विषे छल्ला अंगूठी ये सब आभूषण भगवतीको विश्वकर्मा देतोभयो और निर्मल परशी देतो भयो और अनेक तरहके अस्त्र और कवच ये देतोभयो ॥२६॥२७॥ फिर उसदेवीको समुद्र सदा प्रफुल्लित रहै ऐसे कमलोंकी माला शिरके विषे धारण करनेकी और कंठमें धारण करनेकी देतोभयो और मनोहर कमल देतोभयो ॥ २८ ॥

हिमवान्वाहनंसिंहंरत्नानिविविधानिच ॥ ददावशून्यंसुरयापानपात्रंधनाधिपः ॥ २९ ॥ शेषश्चसर्वनागेशोमहामणिविभूषितं ॥ नागहारंददौतस्यैधत्तेयःपृथिवीमिमाम् ॥ ३० ॥ अन्यैरपिसुरैर्देवीभूषणैरायुधैस्तथा ॥ संमानिताननादोच्चैःसाट्टहासंमुहुर्मुहुः ॥ ३१ ॥तस्यानादेनघोरेणकृत्स्नमापूरितंनभः ॥ अमायतातिमहताप्रतिशब्दोमहानभूत् ॥ ३२ ॥

टीका—और हिमवान् पर्वतराज देवीको सिंहवाहन देतोभयो और अनेक तरहके रत्न देतोभयो और कुवेर मदिराकरिकै पूर्णपात्र देतोभयो ॥ २९ ॥ फिर उसदेवीको संपूर्ण नागोंका राजा जो शेषहै सो महामणि करिकै शोभित नागरूप हार देतोभयो फिर वह शेष कौनसाहै जो या पृथ्वीको धारण करताहै ॥ ३० ॥ फिर और देवोंनेभी आभूषण और शस्त्रों करिके देवीका सन्मान किया तब देवी आदरयुक्त होकर वारंवार उच्चस्वर करिकै अट्टहासपूर्वक नाद करतीभई ॥ ३१ ॥ उस भगवतीके भयंकर शब्द करिके संपूर्ण आकाश शब्दायमान होताभया समीप आताहुवा जो वडा शब्द है ता करिके वडा प्रतिध्वनिशब्द होताभया ॥ ३२ ॥

चुक्षुभुःसकलालोकास्समुद्राश्चचकंपिरे ॥ चचालवसुधाचेलुःसकलाश्चमहीधराः ॥ ३३ ॥ जयेतिदेवाश्चमुदातामूचुःसिंहवाहिनीं ॥ तुष्टुवुर्मुनयश्चैनांभक्तिनम्रात्ममूर्तयः ॥ ३४ ॥ दृष्ट्वासमस्तंसंक्षुब्धंत्रैलोक्यममरारयः ॥ सन्नद्धाखिलसैन्यास्ते

समुत्तस्थुरुदायुधाः ॥३५॥ आःकिमेतदितिक्रोधादाभाष्यम-
हिषासुरः ॥ अभ्यधावततंशब्दमशेषैरसुरैर्वृतः ॥ ३६ ॥

टीका—ता प्रतिध्वनि शब्द करिके सब लोक चलायमान होगये और समुद्र कांपने लगगये और पृथ्वी पर्वत ये तिससमय सब चलायमान होजाते भये ॥ ३३ ॥ तासमय देवता आनंदपूर्वक जय जय शब्द करतेभये भक्ति करिके नम्र हे स्वकाय जिनोंका ऐसे मुनि सिंहवाहिनी भगवतीकी स्तुति करतेभये ॥ ३४ ॥ फिर उस भगवतीका भयंकर शब्द करिके त्रिलोकीको चलायमान देखकर युद्धके लिये करी है सेना तयार जिनोंने और उठाये हैं शस्त्र जिनोंने ऐसे जे दैत्यहे ते युद्ध करनेको उठतेभये ॥ ३५ ॥ यह क्या हे ऐसे क्रोधसे कहकर महिषासुर समस्त असुरोंकरिके सहित उस देवीके शब्दके सन्मुख जातोभयो ॥ ३६ ॥

सददर्शततोदेवींव्याप्तलोकत्रयांत्विषा ॥ पादाक्रांत्यानतभुवं
किरीटोल्लिखितांबराम् ॥ ३७ ॥ क्षोभिताशेषपातालांधनुर्ज्या-
निःस्वनेनतां॥दिशोभुजसहस्रेणसमंताद्व्याप्यसंस्थितां २८॥
ततःप्रववृतेयुद्धंतयादेव्यासुरद्विषां ॥ शस्त्रास्त्रैर्बहुधामुक्तैरादी-
पितादिगंतरं ॥ ३९ ॥ महिषासुरसेनानीश्चिक्षुराख्योमहा-
सुरः ॥ युयुधेचामरश्चान्यैश्चतुरंगबलान्वितः ॥ ४० ॥

टीका—पीछे वहां जाके अपनी कांतिकरिके प्रकाशित कियेहे तीनो लोक जानें पेरके आक्रमणसे नम्र करीहै पृथ्वी जानें मुकुट करिके स्पर्शित हे आकाश जानें धनुषकी प्रत्यंचाका शब्द करिके चलायमान कियोहे संपूर्ण रसातल जानें हजार भुजासे दशदिशाको व्याप्त करिके सम्यक्प्रकारसे स्थित ऐसी जो भगवती हे ताको महिषासुर देखतोभयो ॥ ३७॥३८ ॥ ताके अनंतर देवीके साथ असुरोंका युद्ध होताभया फिर केसा युद्ध भयाकि बहुत प्रकारसे शस्त्र और अस्त्र चलाने करिके प्रकाशित भयोहे दशोंदिशाको मध्यभाग जामें॥३९॥ महिषासुरकी सेनाका स्वामी चिक्षुरनामा असुर युद्ध करतोभयो और हाथि

ग्रोंके सवार घोडोंके सवार रथोंके सवार पियादे ये है चार अंग जामें ऐसी जो चतुरंगिणी सेना तिसकरिके सहित दूसरा चामरनामा असुर देवीके साथ युद्ध करताभया ॥ ४० ॥

रथानामयुतैः षड्भिरुदग्राख्योमहासुरः ॥ अयुध्यतायुतानांचसहस्रेणमहाहनुः ॥ ४१ ॥ पंचाशद्भिश्चनियुतैरसिलोमा महासुरः ॥ अयुतानांशतैःषड्भिर्बाष्कलोयुयुधेरणे ॥ ४२ ॥ गजवाजिसहस्रौघैरनेकैरुग्रदर्शनः ॥ वृतोरथानांकोट्याचयुद्धे तस्मिन्नयुद्ध्यत ॥ ४३ ॥ बिडालाख्योमहादैत्यः पंचाशद्भि रथायुतैः ॥ युयुधेसंयुगेतत्ररथानांपरिवारितः ॥ ४४ ॥

टीका—और साठिहजार रथोंके सवारों करिके सहित उदग्रनामा असुर देवीके साथ युद्ध करताभया और महाहनुनामा असुर कोटि रथोंके सवारों करिके सहित देवीके साथ युद्ध करताभया ॥ ४१ ॥ और असिलोमा नामा असुर पांचकोटि रथोंके सवारों करिके सहित देवीके साथ युद्ध करताभया और बाष्कलनामा असुर रणके विषे साठिलाख रथोंके सवारों करिकै सहित देवीके साथ युद्ध करता भया॥४२॥और उग्रदर्शन नामा असुर हजारों हाथी घोडोंके सवारों करिकै सहित और एक कोटि रथोंके सवारों करिकै सहित रणमें देवीके साथ युद्ध करता भया ॥ ४३ ॥ और बिडालनामा असुर पांचलाख रथोंके सवारों करिकै सहित संग्राममें युद्ध करता भया॥४४॥

वृतः कालोरथानांचरणेपंचाशतायुतैः ॥युयुधेसंयुगेतत्रताव-द्भिःपरिवारितः ॥ ४५॥ अन्येचतत्रायुतशोरथनागहयैर्वृताः॥ युयुधुस्संयुगेदेव्यासहतत्रमहासुराः॥ ४६ ॥कोटिकोटिसहस्रै-स्तुरथानांदन्तिनांतथा ॥ हयानांचवृतोयुद्धेतत्राभून्महिषासु-रः ॥४७॥ तोमरैर्भिंदिपालैश्चशक्तिभिर्मुसलैस्तथा ॥ युयुधुःसंयुगेदेव्याखड्गैःपरशुपट्टिशैः॥ ४८ ॥

टीका— और कालनामा असुर पांचलाख रथोंके सवारों करिकै वेष्टित

रणके विषे देवीके साथ युद्ध करता भया फिर वही असुर पाँचलाख हाथि-योंके सवारों करिकै सहित संग्राममें देवीके साथ युद्ध करताभया ताके अनन्तर वही पाँचलाख घोडोंके सवारों करिकै युक्त युद्ध करता भया फिर ताके अनन्तर वही पांचलाख पयादों करिकै परिवारित देवीके साथ युद्ध करता भया ॥ ४५ ॥ तिस रणके विषे दशहजार रथ हाथी घोडोंके सवारों करिकै सहित और जे असुर हैं वे देवीके साथ युद्ध करतेभये ॥४६॥ फिर एक शंख संख्या परिमित रथोंके सवार और एक शंख संख्या परिमित हाथि-योंके सवार और एक शंख संख्या परिमितही घोडोंके सवार इस प्रकारसे तीन शंख सेना करिकै सहित महिषासुर देवीके साथ युद्ध करनेको रणभू-मिमें सावधान होतो भयो ॥ ४७ ॥ तिस समय संग्रामके विषे ते संपूर्ण असुर तोमर जे भाला हैं और भिंदिपाल जे गोफिया हैं और शक्ति जे शांग हैं और मुशल जे हैं और खड्ग जे हैं और फरशी जे हैं और पट्टिश जे हैं इन शस्त्रों करिकै देवीके साथ युद्ध कर्त्ते भये ॥ ४८ ॥

केचिच्चचिक्षिपुःशक्तीःकेचित्पाशांस्तथापरे ॥ देवींखड्गप्रहारै
स्तुतेतांहंतुंप्रचक्रमुः ॥ ४९ ॥ सापिदेवीततस्तानिशस्त्राण्य-
स्त्राणिचण्डिका॥लीलयैवप्रचिच्छेदनिजशस्त्रास्त्रवर्षिणी ५०॥
अनायस्ताननादेवीस्तूयमानासुरर्षिभिः ॥ मुमोचासुरदेहे
षुशस्त्राण्यस्त्राणिचेश्वरी ॥ ५१ ॥ सोपिक्रुद्धोधुतसटोदेव्या
वाहनकेसरी ॥ चचारासुरसैन्येषुवनेष्विवहुताशनः॥ ५२ ॥

टीका– उस युद्धमें कितनेही देवीको मारनेको शांग फेंकते भये और कितनेही नागपाश आदि पाश फेंकते भये और कितनेही खड्गके प्रहारों करिकै देवीको मारनेको उद्योग कर्त्ते भये ॥ ४९ ॥ ताके अनन्तर अपने शस्त्र और अस्त्रोंकी वर्षा करती हुई भगवती उन दैत्योंके शस्त्र और अस्त्र लीला करिकै सब खंडित करती भई ॥५०॥ फिर ग्लानि करिके रहित है मुख जिसका और देव और ऋषि इन करिकै स्तुति करीगई ऐसी ईश्वरी असुरोंके शरीरोंके विषे शस्त्र और अस्त्र छोडतीभई ॥ ५१ ॥ फिर देवीका वाहन

सिंहभी काँधेके केश कँपाताहुवा और क्रोधयुक्त गर्जताहुवा असुरोंकी सेनामें चारों तरफ़ भ्रमता भया कैसे कि जैसे बाँशके वनोंमें चारों तरफ अग्नि भ्रमे ताकी तुल्य ॥ ५२ ॥

निःश्वासान्मुमुचेयांश्चयुध्यमानारणेम्बिका ॥ तएवसद्यःसं भूतागणाःशतसहस्रशः ॥ ५३ ॥ युयुधुस्तेपरशुभिर्भिंदिपा- लासिपट्टिशैः॥नाशयंतोसुरगणान्देवीशक्त्युपबृंहिताः॥५४॥ अवादयंतपटहान्गणाःशंखांस्तथापरे ॥ मृदंगांश्चतथैवान्ये तस्मिन्युद्धमहोत्सवे ॥५५॥ ततोदेवीत्रिशूलेनगदयाशरवृष्टि- भिः ॥ खड्गादिभिश्चशतशोनिजघानमहासुरान् ॥ ५६ ॥

टीका– फिर असुरोंके साथ संग्रामके विषे जितने क्रोधका निःश्वास अंबिका छोडती भई फिर वे निःश्वासही उतने लाख भगवतीके गण होजाते भये ॥ ५३ ॥ फिर वे गण तुम असुरोंके साथ युद्धकरो युद्धकरो ऐसे देवी करिकै उत्साह प्राप्त कियेहुवे फरशी और गोफिया और खड्ग और पट्टिश इन शस्त्रोंकरिकै असुरगणोंका नाश कर्तेहुवे महाअसुरोंके साथ युद्ध कर्ते- भये ॥ ५४ ॥ फिर उस युद्ध महोत्सवके विषे देवीके निःश्वाससे उत्पन्नहुवे पूर्वोक्त गण उनमेंसे कितनेहीं तो नगारा बजाते भये और कितनेही शंख बजाते भये और कितनेही मृदंग बजातेभये ॥ ५५ ॥ ताके अनंतर त्रिशूल गदा और खड्ग और भाला और मुद्गर और मुशल इन आदिले शस्त्रोंके प्रहार करिकै और बाणोंकी वर्षा करिकै भगवती एक एक वा शत शत महा असुर मारती भई ॥ ५६ ॥

पातयामासचैवान्यान्घंटास्वनविमोहितान् ॥असुरान्भुविपा- शेनबद्ध्वाचान्यानकर्षयत् ॥ ५७ ॥ ॥ केचिद्द्विधाकृतास्ती क्ष्णैः खड्गपातैस्तथापरे ॥ विपोथितानिपातेनगदयाभुविशे रते ॥ ५८ ॥ वेमुश्चकेचिद्रुधिरंमुसलेनभृशंहताः॥केचिन्निप- तिताभूमौभिन्नाःशूलेनवक्षसि ॥ ५९॥ निरंतरशरौघेणकृताः केचिद्रणाजिरे ॥सेनानुकारिणः प्राणान्मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः॥६०॥

टीका– फिर देवीके घंटाके शब्दसे मूर्छित जे असुर हैं तिनको देवी पाशसे बाँधकर पृथ्वीमें पटकती भई और कितनेहीं असुरोंको पाशसे बाँध कर खैंचतीभई ॥ ५७ ॥ फिर देवी और कितनेही असुरोंका तीखे खड्गके प्रहारों करिके दो टुकड़ा कर्त्ती भई और कितनेही असुर देवीकी गदाके प्रहार करिकै मृत्युकों प्राप्त हुवे पृथ्वीमें सोते भये ॥ ५८ ॥ और कितनेही असुर देवीके मुशलके प्रहार करिकै मुखसे रुधिर वमन कर्त्तेभये फिर और कितनेही असुर देवीके त्रिशूलकरिकै छातीमें विदारित हुवे पृथ्वीमें पडते भये ॥ ५९ ॥ फिर पर्वतके समान हैं शरीर जिनोंका और देवताको पीडा करनेवाले ऐसे जे असुर ते देवीके निरंतर बाणोंके समुदायके प्रहारसे रणमें विंधेहुवे प्राणोंको त्यागतेभये ॥ ६० ॥

केषांचिद्बाहवश्छिन्नाश्छिन्नग्रीवास्तथापरे ॥ शिरांसिपेतुरन्ये-षामन्येमध्येविदारिताः॥६१ ॥ विच्छिन्नजंघास्त्वपरेपेतुरुर्व्यां महासुराः ॥ एकबाह्वक्षिचरणाःकेचिद्देव्याद्विधाकृताः ॥६२॥ छिन्नेपिचान्येशिरसिपतिताःपुनरुत्थिताः ॥ कबंधायुयुधुर्दे-व्यागृहीतपरमायुधाः ॥ ६३ ॥ ननृतुश्चापरेतत्रयुद्धेतूर्यलया-श्रिताः ॥ कबंधाश्छिन्नशिरसःखड्गशक्त्यृष्टिपाणयः ॥ ६४ ॥ तिष्ठतिष्ठेतिभाषंतोदेवीमन्येमहासुराः ॥ रुधिरौघविलुप्तां-गाःसंग्रामेलोमहर्षणे ॥ ६५ ॥

टीका– और कितनेही असुरोंकी देवीके शस्त्र प्रहारोंसे खंडितहुई भुजा पृथ्वीमें पडतीभई और कितनेही असुर देवीके शस्त्रप्रहारोंसे कटी हैं नाडी जिनोंकी ऐसे पृथ्वीमें पडतेभये और कितनेही असुरोंका देवीके खड्ग आदि शस्त्र प्रहारसे शिर कटके गिरतेभये और कितनेही देवीके शस्त्रप्रहारोंकरिके शरीरके विषे हाथ पैरोंसे खंडितहुवे पृथ्वीमें पड़तेभये ॥ ६१ ॥ और कितनेही असुर कटीहैं जंघा जिनोंकी ऐसे पृथ्वीमें पडतेभये और कितनेही असुर देवीके शस्त्रप्रहार करिके खंडित कियेहुये एक भुजावाले और

एक नेत्रवाले और एक चरणवाले होतेहुवे पृथ्वीमें पडते भये॥ ६२ ॥ और कितनेही असुर शिर कटनेसे पृथ्वीमें पडेभी फिर शिर धारण कर्त्तेहुवे उठतेभये ताके अनंतर शस्त्र ग्रहण करिकै देवीके साथ युद्ध कर्तेभये ॥ ६३ ॥ फिर उस युद्धकेविषे कटेहैं शिर जिनोंके ऐसे जे दैत्यहैं ते वीणा मृदंग आदि वादित्रोंके वीरशब्दके आश्रितहुवे अर्थात् वीररसके आवेशते चेत कर्त्तेहुवे फिर शिर धारण कर्त्ते संते कितनेही तो नृत्य कर्त्तेभये और उनमेंसे कितनेही खड्ग शांग पौलंडी लाठी ये शस्त्रहैं हाथमें जिनोंके ऐसे भगवतीके साथ युद्ध कर्तेभये ॥ ६४ ॥ फिर उस भयंकर संग्रामके विषे रुधिर करिके सन्योहै अंग जिनोंका ऐसे और तुम हमारे आगे खडीरहो खडीरहो ऐसे कहतेहुवे जे कितनेही और महाअसुरहैं ते देवीके साथ युद्ध करनेकों आतेभये ॥ ६५ ॥

पातितैरथनागाश्वैरसुरैश्चवसुंधरा ॥ अगम्यासाभवत्तत्रयत्राभूत्समहारणः ॥ ६६ ॥ शोणितौघामहानद्यस्सद्यस्तत्र विसुस्रुवुः ॥ मध्येचासुरसैन्यस्यवारणासुरवाजिनाम् ॥ ६७ ॥ क्षणेनतन्महासैन्यमसुराणांतथाम्बिका ॥ निन्येक्षयंयथावह्नि स्तृणदारुमहाचयम् ॥६८॥सचसिंहोमहानादमुत्सृजन्धुतकेसरः॥ सोपिक्रुद्धोधुतसटोदेव्यावाहनकेसरी॥६९॥शरीरेभ्योमरारीणामसूनिवविचिन्वति॥देव्यागणैश्चतैस्तत्रकृतंयुद्धंतथा सुरैः॥यथैनांतुष्टुवुर्देवाःपुष्पवृष्टिमुचोदिवि ॥७०॥ श्रीमार्कण्डेयपुराणेसावर्णिकेमन्वंतरेदेवीमाहात्म्येद्वितीयोऽध्यायः॥ २ ॥

टीका— फिर जहाँ देवीके साथ महिषासुरकी सेनाका बडा भयंकर युद्ध हुवा तहां देवीनें बाण आदि शस्त्रोंके प्रहारसे पटके जे रथ हाथी घोडे और असुर तिन करिके आकीर्णभूमि अगम्य होतीभई ॥ ६६ ॥ फिर उस युद्धके विषे जब देवीके साथ असुरोंका संग्राम प्रारंभ हुवा उसी क्षणमैंही असुरोंकी सेनाके मध्यमें हाथी असुर और घोडे इनके रुधिरके समूहकी म-

ह्मनदियाँ वहतीभई ॥ ६७ ॥ फिर जैसे तृण काष्ठके संचयको अग्नि क्षणमात्रकरिकै नाशको प्राप्त करदेता है तिसीप्रकारसे देवी क्षणमात्रकरिकै असुरोंकी महासेनाको नाशको प्राप्त करतीभई॥६८॥फिर तिसी प्रकारसे वह जो भगवतीवाहन सिंह है सोभी कंठ गर्जना कर्त्ताहुवा कंपायेहै कंधाके केश ज्याने क्रोधयुक्त हुवा नखप्रहारोंकरिकै असुरोंकी सेनाको नाश कर्त्ताभया ॥६९॥ फिर उस संग्रामकेविषे देवीका क्रोधके निश्वासते उत्पन्नभये ऐसै जेगण जिनोंने तिस प्रकारसे असुरोंकी साथ युद्धकिया और जैसे स्वर्गमें पुष्पोंकी वर्षा कर्त्तेहुए देवता भगवतीकी स्तुति कर्तेभये तिसप्रकारसे श्रवणकरो ॥७०॥
इति श्रीमार्कंडेयपुराणे सावर्णिके मन्वंतरे देवीमाहात्म्ये द्वितीयोऽध्यायः॥ २॥

॥ ऋषिरुवाच ॥ निहन्यमानंतत्सैन्यमवलोक्यमहासुरः ॥ सेनानीश्चिक्षुरः कोपाद्ययौयोद्धुमथांबिकाम् ॥ १ ॥ सदेवींशरवर्षेणववर्षसमरेसुरः॥यथामेरुगिरेः शृंगंतोयवर्षेणतोयदः ॥२॥ तस्यच्छित्त्वाततोदेवी लीलयैवशरोत्करान् ॥ जघानतुरगान्बाणैर्यंतारंचैववाजिनाम् ॥ ३ ॥ चिच्छेदचधनुःसद्योध्वजं चातिसमुच्छ्रितम्॥विव्याधचैवगात्रेषुच्छिन्नधन्वानमाशुगैः॥४ सच्छिन्नधन्वाविरथोहताश्वोहतसारथिः ॥ अभ्यधावततांदेवीं खड्गचर्मधरोसुरः ॥ ५ ॥

टीका– ऋषि बोले फिर ताके अनंतर संपूर्ण महिषासुरकी सेनाको देवी करिकै हती हुई देखकर महिषासुरका सेनापति चिक्षुर नामा दैत्य क्रोधसे दौडके युद्ध करनेको देवीके सन्मुख जाताभयो ॥ १ ॥ ताके अनंतर चिक्षुर नामा दैत्य संग्राममें बाणोंकी वर्षाकरिकै भगवतीको आच्छादित कर्त्ताभयो कैसेके जैसे मेघ जलकी वर्षाकरिकै सुमेरु पर्वतकी शिखरको आच्छादित कर देता है ॥ २ ॥ ताके अनंतर उस संग्राममें विना परिश्रमके साथ देवी अपने बाणोंकरिकै चिक्षुर नामा दैत्यके बाणोंको काटकर घोडोंको मारती भई और पीछे सारथियोंकोभी

मारती भई ॥ ३ ॥ फिर उसी क्षणमें बाणों करिकै देवी उस दैत्यका धनुष काटती भई और बड़ी ऊंची जो तिसके रथकी ध्वजा है ताको काटती भई फिर टूट गयो है धनुष जाको ऐसो जो चिक्षुर नामा दैत्य है ताके समग्र शरीरके अवयवोंमें बड़े तीखे बाणोंकरिकै छेद कर्त्ती भई ॥ ४ ॥ ताके अनंतर टूटो है धनुष और रथ जाको मरे हैं घोडा और सारथी जिसके ऐसा जो चिक्षुर नामा दैत्य सो तरवार ढाल लेके देवीके उपर दाडताभया ॥ ५ ॥

सिंहमाहत्यखड्गेनतीक्ष्णधारेणमूर्धनि ॥ आजघानभुजेसव्ये- देवीमप्यतिवेगवान् ॥ ६ ॥ तस्याः खड्गोभुजंप्राप्यपफालनृपनन्दन ॥ ततोजग्राहशूलंसकोपादरुणलोचनः ॥ ७ ॥ चिक्षेपचततस्तत्तुभद्रकाल्यांमहासुरः ॥ जाज्वल्यमानंतेजोभी रविबिंबमिवांबरात् ॥८॥ दृष्ट्वातदापतच्छूलंदेवीशूलममुञ्चत॥ तेनतच्छतधानीतंशूलंसचमहासुरः ॥९॥ हतेतस्मिन्महावीर्ये महिषस्यचमूपतौ ॥ आजगामगजारूढश्चामरस्त्रिदशार्दनः ॥१०

टीका— ताके अनंतर तीखी धारवाले खड्गको सिंहके माथेमें प्रहारकरिकै बड़ा वेगवाला दैत्य देवीकी बाँई भुजामें प्रहार कर्ताभया ॥ ६ ॥ हे सुरथ वह खड्ग भगवतीके भुजाको प्राप्त होकर उसी समय चूर्णीभूत होता भया ताके अनंतर क्रोधसे लाल नेत्र कर्त्ता हुवा त्रिशूल ग्रहणकर्त्ता भया ॥ ॥ ७ ॥ फिर वह त्रिशूल भद्रकालीको मारनेकेलिये फेकता भया कैसा है वह त्रिशूल कि जानू आकाशमें चलनेवाला तेजोकरिकै प्रकाशमान सूर्यका बिंब ॥ ८ ॥ ताके अनंतर उस त्रिशूलको आता हुवा भगवती देखकर अपना त्रिशूल छोडती भई फिर भगवतीके त्रिशूलने असुरके त्रिशूलका चूर्ण करदिया और उस असुरकाभी चूर्ण कर दिया ॥ ९ ॥ फिर जब महिषासुरका सेनापति चिक्षुर नामा दैत्य संग्राममें मारा गया तब हाथीपर बैठा हुवा देवतानको पीडा करनेवाला चामर नामा दैत्य आता भया ॥ १० ॥

सोपिशक्तिंमुमोचाथदेव्यास्तामंबिकाद्रुतम् ॥ हुंकाराभिहतां
भूमौपातयामासनिष्प्रभां ॥ ११ ॥ भग्नांशक्तिंनिपतितांदृष्ट्वा
क्रोधसमन्वितः ॥ चिक्षेपचामरः शूलंबाणैस्तदपिसाच्छिन-
त् ॥ १२ ॥ ततःसिंहःसमुत्पत्यगजकुंभांतरेस्थितः । बाहुयु-
द्धेनयुयुधेतेनोच्चैस्त्रिदशारिणा ॥ १३॥ युध्यमानौततस्तौतुत
स्मान्नागान्महींगतौ॥युयुधातेतिसंरब्धौप्रहारैरतिदारुणैः॥१४
ततोवेगात्खमुत्पत्यनिपत्यचमृगारिणा ॥ करप्रहारेणशिर
श्चामरस्यपृथक्कृतं ॥ १५ ॥

टीका— फिर वहभी देवीको मारनेके लिये शांग शस्त्र फेकता भया फिर अंबिका अपना हुंकारकरिकै मलिन हुई शांगको शीघ्रही पृथ्वीमें गिराती भई ॥ ११ ॥ ताके अनंतर देवीकरिकै खंडित हुई और पृथ्वीमें पडी हुई अपनी शांगको देखकर क्रोधयुक्त हुवा चामर नामा दत्य देवीके सन्मुख त्रिशूल फेकता भया उस त्रिशूलकोभी भगवती बाणोंकरिकै काटती भई ॥ १२ ॥ फिर ता समय सिंह उछलकै हाथीके माथेके मध्यमें बैठा हुवा अत्यंत बाहुयुद्धकरिकै देवतोंका शत्रु चामर नामा दैत्यके साथ युद्ध कर्त्ता भयो ॥ १३ ॥ ताके अनंतर सिंह और चामर नामा दैत्य ये दोनों युद्ध कर्त्ते हुवे हाथीपरसे पृथ्वीमें गिरते भये फिरभी बड़े कठोर प्रहारोंकरिकै अत्यंत क्रोध युक्त हुवे युद्ध कर्त्ते भये ॥ १४ ॥ ताके अनंतर सिंहने आकाशमें उछलके और पृथ्वीपर पडके नखप्रहारोंकरिकै चामर दैत्यका शिर काट दिया १५

उदग्रश्चरणेदेव्याशिलावृक्षादिभिर्हतः॥दंतमुष्टितलैश्चैवकराल
श्चनिपातितः॥१६॥देवीक्रुद्धागदापातैश्चूर्णयामासचोद्धतम्॥
वाष्कलंभिंदिपालेनबाणैस्ताम्रंतथांधकम् ॥ १७ ॥ उग्रास्य-
मुग्रवीर्यंचतथैवचमहाहनुं ॥ त्रिनेत्राचत्रिशूलेनजघानपरमेश्व-
री ॥ १८॥ बिडालस्यासिनाकायात्पातयामासवैशिरः ॥
दुर्धरंदुर्मुखंचोभौशरैर्निन्येयमक्षयं ॥कालंचकालदण्डेनकाल-

रात्रिरपातयत् ॥ १९ ॥ उग्रदर्शनमत्युग्रैः खड्गपातैरताडयत् ॥ असिनैवासिलोमानमच्छिदत्सारणोत्सवे॥गणैःसिंहेनदेव्याचजयक्ष्वेडाकृतोत्सवैः ॥ २० ॥

टीका–फिर उस रणकेविषे पाषाण और वृक्ष इनके प्रहार करिके और धनुष आदि शस्त्रोंके प्रहारकरिके देवीने उग्रनामदैत्यको मारा और हाथीके दांतकी बनी जो मुष्टिका तिनके प्रहारकरिकै चनपटोकरिकै करालनामा दैत्य को पृथ्वीमें गिरादिया ॥१६॥ फिर उस संग्राममें क्रोधयुक्त होतीहुई भगवती उद्धतनाम दैत्यको गदाके प्रहारोंकरिकै चूर्ण कर्त्तीभई और गोफियाशस्त्रके प्रहारकरिके त्रिनेत्रापरमेश्वरी बाष्कलदैत्यको मारतीभई तिसीप्रकार बाणोंके प्रहारकरिकै ताम्रदैत्यको मारतीभई और तैसेही अंधक दैत्यको मारतीभई और तिसीप्रकार उग्रास्य और उग्रवीर्य और महाहनु इन दैत्योंकोभी मारती भई और त्रिशूलके प्रहार करिकै समग्रसेनाको मारतीभई ॥ १८ ॥ और तलवार करिकै बिडालासुरके शिरको शरीरसे अलग गिरातीभई और बाणोंके प्रहारकरिकै दुर्धर और दुर्मुख इन दोनो दैत्योंको यमराजके लोकमें प्राप्तकर्त्ती भई और कालरात्रि देवी कालदंडकरिकै कालनामदैत्यको पृथ्वीमें गिराती भई॥ १९ ॥ और बडेकठोर खड्गके प्रहारकरिकै भगवती उग्रदर्शन दैत्यको पृथ्वीमें गिरातीभई और खड्गके प्रहारकरिकेही असिलोमा दैत्यको मारतीभई फिर उस रणरूपी उत्सवकेविषे भगवतीके गण और सिंह और भगवती इनोंने जयसंबंधी सिंहनाद किया ॥ २० ॥

एवंसंक्षीयमाणेतुस्वसैन्येमहिषासुरः ॥ माहिषेणस्वरूपेणत्रासयामासतान्गणान् ॥ २१ ॥ कांश्चित्तुंडप्रहारेणक्षुरक्षेपैस्तथापरान् ॥ लांगूलताडितांश्चान्यान् शृंगाभ्यांचविदारितान् ॥ २२ ॥ वेगेनकांश्चिदपरान्नादेनभ्रमणेनच ॥ निःश्वासपवनेनान्यान्पातयामासभूतले ॥ २३ ॥ निपात्यप्रमथानीकमभ्यधावतसोऽसुरः ॥ सिंहंहंतुंमहादेव्याःकोपंचक्रेततो-

म्बिका ॥ २४ ॥ सोपिकोपान्महावीर्यः क्षुरक्षुण्णमहीत-
लः ॥ शृंगाभ्यांपर्वतानुच्चांश्चिक्षेपचननादच ॥ २५ ॥

टीका– इसप्रकारसे देवीके गणोंकरिकै अपनी सेना नाशमान होतेहुवे देखकर इसबातको नहीं सहताहुवा महिषासुर महिषाकार स्वरूपकरिके भगवतीके गणोंको कंपायमान कर्त्तोभयो ॥ २१ ॥ ताके अनंतर कितनेही गण तो मुखके प्रहारसे पृथ्वीमें गिरातोभयो और कितनेही गण खुरोंके प्रहारों करिकै पृथ्वीमें गिरातोभयो और कितनेही पुच्छकरिकै ताडित तिनको पृथ्वीमें गिरातो भयो और कितनेही गणोको शृंगोंसे वींधकर पृथ्वीमें गिरातो भयो ॥ २२ ॥ और कितनेही गणोको वेगकरिकै पृथ्वीमें गिरातोभयो और कितनेही गणोको गर्जनाकरिके पृथ्वीमें गिरातोभयो और कितनेहीं गणोको शरीरकी फेटकरिकै पृथ्वीमें गिरातोभयो और कितनेही गणोको अपने श्वासकी पवनकरिकै पृथ्वीमें गिरातोभयो ॥ २३ ॥ फिर वह असुर भगवतीकी पार्षदसेनाको ऐसे गिराकर पीछे भगवतीके सिंहके मारनेको सन्मुख दौडतो भयो ता समय भगवती महिषासुरकेविषे अत्यंत क्रोध कर्त्तीभई ॥ २४ ॥ फिर वहभी बडा पराक्रमी दैत्य क्रोधसे खैरू खूंदत हुवा पर्वतोंको शृंगोंसे उठाकर भगवतीके मस्तकपर फेकताभया और ऊंचे स्वरसे गर्जना कर्त्तोभयो ॥ २५ ॥

वेगभ्रमणविक्षुण्णामहीतस्यव्यशीर्यत॥लांगूलेनाहतश्चाब्धिः-
प्लावयामाससर्वतः॥२६॥धुतशृंगविभिन्नाश्चखंडंखंडंययुर्घनाः।
श्वासानिलास्ताःशतशोनिपेतुर्नभसोचलाः ॥ २७॥ इतिक्रोध
समाध्मातमापतंतंमहासुरं॥दृष्ट्वासाचंडिकाकोपंतद्वधायतदा-
करोत्॥२८॥साक्षिप्त्वातस्यवैपाशंतंबबंधमहासुरं ॥तत्याजमा
हिषंरूपंसोपिबद्धोमहामृधे॥ २९ ॥ ततःसिंहोभवत्सद्योयाव-
त्तस्याम्बिकाशिरः॥छिनत्तितावत्पुरुषःखड्गपाणिरदृश्यत॥३०॥

टीका–फिर तिस महिषासुरका जो वेगकरिकै भ्रमण ताकरिके पिसी-

हुई पृथ्वी आपही नम्र होतीभई और उस महिषासुरकी पुच्छकरिके ताडितहुवा समुद्र सर्वत्र पृथ्वीकेविषे मनुष्योंको डुबाताभया ॥ २६ ॥ फिर कंपित शृंगोंकरिके विदीर्ण किये ऐसे जे मेघ ते खंडखंड होयकर जातिभये और तिस महिषासुरका क्रोधका सैंकडों श्वासके पवनसे फेंकेहुवे जे पर्वत वे चूर्णीभूत हुवे आकाशसे पडतेभये ॥ २७ ॥ इस प्रकारसे क्रोधरूपी अग्नि करिके संयुक्त और युद्धकेलिये आताहुवा महिषासुरको देखकर चंडिका उसके मारनेकेलिये क्रोध कर्त्तीभई ॥ २८ ॥ फिर उस महासंग्राममें महिषासुरके मारनकेलिये भगवती पाश फेंकके महिषासुरको बांधतीभई सोभी पाशके बंधसे घबराताहुवा महिषाकार स्वरूपको त्यागताभया ॥ २९ ॥ फिर महिषाकार स्वरूप त्यागके अनंतर भगवतीसे युद्ध करनेको उसीसमय सिंहरूप होतोभयो फिर जितने कालकरिकै भगवती उसको शिर काटेगी उतने कालकेविषे खड्ग है हाथमें जिसके ऐसा पुरुष प्रकट होताहुवा भगवतीको दीखताभया ॥ ३० ॥

ततएवाशुपुरुषंदेवीचिच्छेदसायकैः ॥ तंखड्गंचर्मणासार्धंततः सोभून्महागजः ॥ ३१ ॥ करेणचमहासिंहंतंचकर्षजगर्जच ॥ कर्षतस्तुकरंदेवीखड्गेननिरकृंतत ॥ ३२ ॥ ततोमहासुरोभूयो माहिषंवपुराश्रितः॥तथैवक्षोभयामासत्रैलोक्यंसचराचरं ३३॥ ततःक्रुद्धाजगन्माताचण्डिकापानमुत्तमम् ॥ पपौपुनःपुनश्चैव जहासारुणलोचना॥३४॥ननर्दचासुरःसोपिबलवीर्यमदोद्धतः॥ विषाणाभ्यांचचिक्षेपचंडिकांप्रतिभूधरान् ॥ ३५ ॥

टीका– फिर पुरुष देखनेके अनंतरही बाणोंकरिकै भगवती पुरुषका कंठ काटती भई और उसकी तलवार ढालभी काटती भई फिर पुरुषरूपके सकाशते गजरूप होतो भयो ॥ ३१ ॥ फिर शूंड करिकै वह असुर देवीवाहन सिंहको खैंचतो भयो और गर्जतो भयो फिर सिंहको खैंचते हुवेकी शूंड देवी खड्ग करिके काटती भई ॥ ३२ ॥ ताके अनंतर वह असुर फिर अपने निज

महिषाकार स्वरूप बनाता भया और तिसीप्रकार चराचर त्रिलोकीको दुःख देता भया ॥ ३३ ॥ ताके अनंतर क्रोधयुक्त होती हुई जगत्की माता चंडिका और लाल हैं नेत्र जाके ऐसी भगवती रणकेविषे मद्य पीती भई फिर वारंवार हँसतीही भई और युद्धको कुछ नहीं गिनती भई ॥ ३४ ॥ फिर सामर्थ्य और तेज और गर्व इनकरिकै छोडी है मर्यादा जाने ऐसो जो महिषासुर सोभी रणभूमिकेविषे गर्जतो भयो और शृंगोंसे भगवतीपर पर्वत फेकतो भयो ॥ ३५ ॥

साचतान्प्रहितांस्तेनचूर्णयंतीशरोत्करैः॥ उवाचतंमदोद्भूतमुखरागाकुलाक्षरम् ॥३६॥ देव्युवाच॥ गर्जगर्जक्षणंमूढमधुयावत्पिवाम्यहं ॥ मयात्वयिहतेत्रैवगर्जिष्यंत्याशुदेवताः ॥ ३७ ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ एवमुक्त्वासमुत्पत्यसारूढातंमहासुरं ॥ पादेनाक्रम्यकंठेचशूलेनैनमताडयत् ॥ ३८ ॥ ततः सोपिपदाक्रांतस्तयानिजमुखात्ततः ॥ अर्धनिष्क्रान्तएवासीद्देव्यावीर्येणसंवृतः ॥ ३९ ॥ अर्धनिष्क्रांतएवासौयुध्यमानोमहासुरः ॥ तयामहासिनादेव्याशिरश्छित्त्वानिपातितः ॥ ४० ॥

टीका— फिर उस दैत्यके फेंके हुवे पर्वतोंको बाणोंकी वर्षाकरिकै चूर्ण कर्ती हुई भगवती मद्यपानके मदकरिकै उत्पन्न भयो जो मुखकेविषे राग ताकरिकै अच्छी तरह नहीं समझेन अक्षर जाकेविषे जैसा होय तैसा बोलती भई ॥ ३६ ॥ देवी बोलती भई कि हे मूढ जितने मैं मधु पीती हूं उतने क्षणभर तू गर्ज गर्ज ताके अनंतर मेरेसे तेरे मरनेके बाद इस संग्रामकेविषे शीघ्रही देवता गर्जेंगे ॥ ३७ ॥ ताके अनंतर ऋषि बोले कि हे राजन् ऐसे भगवतीकहकर और उछलकर असुरके ऊपर बैठती हुई एक पैरसे असुरको बांधकर पीछे उसके कंठमें त्रिशूल मारती भई ॥ ३८ ॥ ताके अनंतर एक पैरसे बँधा हुवा महिषासुर अपने मुखसे पुरुषरूप होकर निकसता हुवा तिस समय देवीने अपनी सामर्थ्यकरिकै रोक दिया याते आधा निकसता,

हुवाही रहता भया ॥ ३९ ॥ फिर वह जो आधा निकसा हुवाही देवीके साथ युद्ध कर्त्ता हुवा महिषासुर दैत्य है सो उसे भगवतीने महा खड्गसे शिर काटकरिकै पृथ्वीमें गिरा दिया ॥ ४० ॥

एवंसमहिषोनामससैन्यःससुहृद्गणः ॥ त्रैलोक्यंमोहयित्वातु-तयादेव्याविनाशितः ॥ ४१ ॥ त्रैलोक्यस्थैस्तदाभूतैर्महिषेविनिपातिते ॥ जयेत्युक्तंततःसर्वैःसदेवासुरमानवैः ॥ ४२ ॥ ततोहाहाकृतंसर्वंदैत्यसैन्यंननाशयत् ॥ प्रहर्षंचपरंजग्मुः सकलादेवतागणाः ॥ ४३ ॥ तुष्टुवुस्तांसुरादेवींसहदिव्यैर्महर्षिभिः ॥ जगुर्गंधर्वपतयोननृतुश्चाप्सरोगणाः ॥ ४४ ॥ इतिश्रीमार्कण्डेयपुराणेसावर्णिकेमन्वंतरे देवीमाहात्म्ये तृतीयोध्यायः ॥ ३ ॥

टीका– इस प्रकारसे अपनी सेनाकरिकै सहित और अपने मित्रादिकन करिकै सहित त्रिलोकीको दुःख देकर युद्ध कर्त्ता हुवा ऐसा जो महिषासुर उसे संग्रामकेविषे भगवतीने मारा ॥ ४१ ॥ तिस समयकेविषे त्रिलोकीमें रहनेवाले देव और असुर और मनुष्य अर्थात् स्वर्गमें रहनेवाले इंद्रादिक देवता और पातालमें रहनेवाले बलि आदि असुर और पृथ्वीमें रहनेवाले ब्राह्मण आदि मनुष्य ये सब जयजयशब्द कर्त्ते भये ॥ ४२ ॥ ताके अनंतर जो कुछ बाकी रही दैत्योंकी सेना सो हाहाकार कर्ती हुई अदृष्ट होती भई और संपूर्ण देवता आनंदको प्राप्त होते भये ॥ ४३ ॥ फिर स्वर्गमें रहनेवाले महर्षियोंकरिकै सहित देवता भगवतीकी स्तुति कर्त्तेभये और हाहा हूहू आदि गंधर्व गाते भये और उर्वशीसे आदि ले अप्सरा नाचती भई॥४४॥ इति मार्कंडेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये महिषासुरवधोनाम तृतीयो० ॥३॥

ऋषिरुवाच॥ततःसुरगणाःसर्वेदेव्याइन्द्रपुरोगमाः॥ स्तुतिमारेभिरेकर्त्तुंनिहतेमहिषासुरे ॥ १ ॥ शक्रादयःसुरगणानिहतेतिवीर्येतस्मिन्दुरात्मनिसुरारिबलेचदेव्या ॥ तांतुष्टुवुःप्रणति

नम्रशिरोधरांसावाग्भिःप्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः ॥ २ ॥ देवा ऊचुः ॥ देव्याययाततमिदंजगदात्मशक्त्यानिश्शेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या॥तामंबिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां भक्त्यानताः स्मविदधातुशुभानिसानः॥३॥ यस्याःप्रभावमतुलंभगवाननंतोब्रह्माहरश्चनहिवक्तुमलंबलंच ॥ साचण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय नाशायचाशुभभयस्यमतिंकरोतु ॥ ४ ॥ याश्रीः स्वयंसुकृतिनांभवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनांकृतधियांहृदयेषु बुद्धिः॥ श्रद्धासतांकुलजनप्रभवस्यलज्जा तांत्वांनताःस्मपरिपालयदेविविश्वम् ॥ ५ ॥

टीका— ऋषि बोले कि हे राजन् महिषासुरके मरनेके अनंतर इंद्रादिक देवता भगवतीकी स्तुति करनेको आरंभ कर्त्तेभये ॥ १ ॥ और जब देवीने उस संग्रामके विषे बडा पराक्रमी और दुरात्मा ऐसे महिषासुरको मारा और दैत्योंकी सेनाको मारी ता समयकेविषे स्नेहकरिकै नम्र हे नाडि और कंधे जिनोंके और आनंदकेविषे जे रोमांच तिनका जो ऊठना ताकरिकै मनोहर हे देह जिनोंके ऐसे जे इंद्रादिक देवताते भगवतीकी स्तुति कर्त्तेभये॥२॥ देवता बोलतेभये कि संपूर्ण देव ओर उनकी शक्ति इनके जे समूह तेहीं है मूर्ति जिसकी ऐसी जो भगवती ताने अपनी शक्ति करिकै जगत् रच्यो है और संपूर्ण देव और महर्षि इन करिके पूज्य ऐसी जो अंबिका देवी ताको हम भक्ति करिकै नमस्कार करतेहैं हे भगवती हमारा कल्याण करो ॥ ३ ॥ और नहींहै उपमा जाकी ऐसा जो भगवतीका प्रभाव और बल ताको वर्णन कर्नेको विष्णु और ब्रह्मा और शिव येभी समर्थ नहीं वह चंडिका जगत्को पालनेंके अर्थ और अशुभनसे जो भय ताके नाशके अर्थ बुद्धि करो ॥ ४ ॥ हेदेवी! पुण्यवानोंके घरोंके विषे जो तुम लक्ष्मीरूपहो और पापियोंके घरोंके विषे अलक्ष्मी रूपहो और ज्ञानियोंके हृदयकेविषे बुद्धिरूपहो और सज्जनोंके हृदयके विषे श्रद्धारूपहो और श्रेष्ठकुलकेविषे उत्पन्न जो मनुष्य ताके हृद-

यके विषे लज्जारूपहो ऐसी जो तुमहो सो तुमको हम नमस्कार करतेहैं तुम या जगत्को पालनकरो ॥ ५ ॥

किंवर्णयामतवरूपमचिंत्यमेतत्किंचातिवीर्यमसुरक्षयकारिभूरि ॥ किंचाहवेषुचरितानितवातियानिसर्वेषुदेव्यसुरदेवगणादिकेषु ॥ ६ ॥ हेतुःसमस्तजगतांत्रिगुणापिदोषैर्नज्ञायसेहरिहरादिभिरप्यपारा॥सर्वाश्रयाखिलमिदंजगदंशभूतमव्याकृताहिपरमाप्रकृतिस्त्वमाद्या ॥ ७ ॥ यस्याः समस्तसुरतासमुदीरणेनतृप्तिंप्रयातिसकलेषुमखेषुदेवि ॥ स्वाहासिवैपितृगणस्यचतृप्तिहेतुरुच्चार्यसेत्वमतएवजनैः स्वधाच ॥ ८ ॥ यामुक्तिहेतुरविचिंत्यमहाव्रतात्वमभ्यस्यसेसुनियतेंद्रियतत्त्वसारैः ॥ मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषैर्विद्याऽसिसाभगवतीपरमाहिदेवि ॥ ९ ॥ शब्दात्मिकासुविमलर्ग्यजुषांनिधानमुद्गीथरम्यपदपाठवतांचसाम्नाम् ॥ देवीत्रयीभगवतीभवभावनायवार्तासिसर्वजगतांपरमार्तिहंत्री ॥ १० ॥

टीका—हेदेवि! संपूर्ण असुर और देवगण इत्यादिकोंके विषे अत्यंत असुरोंका क्षय करनेवाला और बडा पराक्रमी मन करिकेभी चितवन करनेको दुर्लभ ऐसा जो तुमारा यह मनोहररूप ताको हम वाणी करिके कैसे वर्णन करें और संग्रामोंके विषे मन करिकेभी स्मरण करनेको दुर्लभ ऐसे जे तुमारे वीर कर्महैं तिनकोभी हम वाणीकरिकै कैसे वर्णन करें॥६॥ हे भगवती! स्वर्ग और पृथ्वी और पाताल इनका कारण त्रिगुणभी तूहै तौभी हरिहरादिक देवों करिके नहीं जानीजातीहै फिर कैसीहै अनंतहै और सबका आश्रयहै और यह जगत्संपूर्ण तेरा अंशभूतहै फिर तू कैसीहै किसी करिके प्रकाशित नहींहै फिर कैसीहै उत्कृष्ट लक्ष्मीरूपहै फिर कैसीहै जगत्का मूलभूतहै फिर कैसीहै प्रकृतिरूपहै ॥७॥ हे भगवती! फिर तू कैसीहै स्वाहारूपहै जाका उच्चार करिके संपूर्ण यज्ञोंके विषे संपूर्ण देवता तृप्तिको प्राप्त होतेहैं

इसकारणसे निश्चयकरिके पितृगणकी तृप्तिका हेतु स्वधारूप मनुष्यों करिकै उच्चारण करीजातीहै ॥ ८ ॥ हेभगवती ! जो तुम मुक्तिका हेतु चिंतवन करनेमें नहींआवो और बडे कठिनहैं व्रत जाकेविषे और संपूर्ण ऐश्वर्य करिकै युक्त और वेदांतके अभ्यास करिकै उत्पत्ति जाकी ऐसी ब्रह्मज्ञानकी प्राप्ति रूप जो विद्या सो तुमहो फिर तुम कैसी हो अच्छीतरह विषयोंसे हटाईहै इंद्रियोंकी वृत्ति जिनोंने और तत्वज्ञानहै सार जिनोंके और नष्ट होगयेहैं समस्त कामादि रूप दोष जिनोंके ऐसे मोक्षकी इच्छा करनेवाले जे मुनिहैं तिन करिकै वारंवार अभ्यासकरीजातीहो ॥ ९ ॥ हेभगवति ! फिर तुम कैसीहो संपूर्ण ऐश्वर्य करिकै युक्तहो और नादरूपहो सुंदर और दोष करिके रहित ऐसे जे ऋग्वेद तिन करिके सहित जे यजुर्वेद और उच्चस्वरसे गाने करिकै रमणीकपदपाठवाले ऐसे जे सामवेद इनकी शिवजीका ध्यानकेअर्थ प्रवृत्त त्रयीरूप तुमहो फिर कैसीहो कृषि गोरक्षादि वृत्तिरूप तुमहो फिर कैसीहो सबजगत्का आधारहो और सबजगत्का दुःख हरनेवालीहो ॥ १० ॥

मेधासिदेविविदिताखिलशास्त्रसारादुर्गाऽसिदुर्गभवसागरनौरसंगा ॥ श्रीःकैटभारिहृदयैककृताधिवासागौरीत्वमेवशशिमौलिकृतप्रतिष्ठा ॥ ११ ॥ ईषत्सहासममलंपरिपूर्णचंद्रबिम्बानुकारिकनकोत्तमकांतिकांतम् ॥ अत्यद्भुतंप्रहृतमात्तरुषातथापिवक्त्रंविलोक्यसहसामहिषासुरेण ॥ १२ ॥ दृष्ट्वातुदेविकुपितंभ्रुकुटीकरालमुद्यच्छशांकसदृशच्छवियन्नसद्यः ॥ प्राणान्मुमोचमहिषस्तदतीवचित्रंकैर्जीव्यतेहिकुपितांतकदर्शनेन ॥ १३ ॥ देविप्रसीदपरमाभवतीभवाय सद्योविनाशयसिकोपवतीकुलानि ॥ विज्ञातमेतदधुनैवयदस्तमेतन्नीतंबलंसुविपुलंमहिषासुरस्य॥१४॥ तेसंमताजनपदेषुधनानितेषांतेषांयशांसिनचसीदतिबंधुवर्गः॥धन्यास्तएवनिभृतात्मजभृत्यदारायेषांसदाभ्युदयदाभवतीप्रसन्ना ॥ १५ ॥

टीका– हे भगवती! फिर तुम कैसी हो कि जानेंजांय संपूर्ण शास्त्र जा करिकै ऐसी बुद्धिरूप हो फिर कैसी हो दुःख करिकै प्राप्त होसकतीहो फिर कैसी हो अगम्य जो संसार रूपी समुद्र ताके विषे नौका रूप हो फिर कैसी हो कि संसारके विषय वासना करिकै रहित हो फिर कैसी हो विष्णुके वक्षस्थलमें निवास करनेंवाली लक्ष्मीरूप हो फिर कैसी हो शिवजीनें कियो है सत्कार जाको ऐसी गौरीरूप तुम हो ॥ ११ ॥ हे भगवती! मंदहास्य करिकै सहित और निर्मल और पूर्णिमाके चंद्रमाके विंवके सदृश और सुवर्णके बीचमें जो उत्तम सुवर्ण ताकी शोभाके सदृश है शोभा जाकी याते बडाही मनोहर ऐसा जो तुह्मारा मुख ताको देखकर तोभी क्रोधयुक्त महिपासुरने बलात्कारसे प्रहार किया यह बड़ा अचरज है क्यौं कि जगत्को मोहन करनेवाला ऐसा जो तुह्मारा मुख ताको देखकर महिषासुरको मोहन नहीं हुवा याते यह अत्यंत भेद भयो ॥ १२ ॥ हे देवी उस रणके विषे क्रोध करिकै युक्त और भ्रुकुटीकरिकै भयंकर और पूर्णिमाके विषे उदयहोताहुवा चंद्रमाकी तुल्य है शोभा जाकी ऐसा तुह्मारे मुखको देखकर ता समय महिपासुर प्राण नहीं त्यागता भया यह बडा अचरज है क्यौं कि क्रोधयुक्त कालके दर्शन करिकै कौन प्राणी जीवे अर्थात् कोई नहीं जीवे ॥ १३ ॥ हे भगवती तुम प्रसन्न हो फिर कैसी हो उत्कृष्ट लक्ष्मीरूप हो तुह्मारेसे युद्ध करनेको आई ऐसी जो महिपासुरकी सेना है ताको तुमने नाशको प्राप्त करदई यह क्या बात है इसको अबही हम जानें है कि हे भगवती जब तुम प्रसन्न होती हो तब शीघ्रही जगत्का पालन कर्ती हो और जब क्रोधयुक्त होती हो तब शीघ्रही असुरोंके वंशका नाश कर्ती हो ॥ १४ ॥ हे भगवती ! तुम मनोरथ पूर्ण करनेवाली जिनके ऊपर प्रसन्न हों वेही मनुष्य संपूर्ण देशोंमें प्रतिष्ठा वाले है और उनके धन है और उनकेही यश है और उनके भाईबंध जे हैं तेभी दुःख नहीं पाते है और वेही पुण्यवाले हैं फिर वे पुरुप कैसे हैं कि शिक्षा दियेगयेहैं कुलको आचरणके विषे पुत्र और नौकर और स्त्रियां जिनोंके ॥ १५ ॥

धर्म्याणिदेविसकलानिसदैवकर्माण्यत्याहतःप्रतिदिनंसुकृती
करोति ॥ स्वर्गंप्रयातिचततोभवतीप्रसादाल्लोकत्रयेपिफलदा-
ननुदेवितेन ॥ १६ ॥ दुर्गेस्मृताहरासिभीतिमशेषजंतोःस्वस्थैः
स्मृतामतिमतीवशुभांददासि ॥ दारिद्र्यदुःखभयहारिणिका
त्वदन्यासर्वोपकारकरणायसदार्द्रचित्ता ॥ १७ ॥ एभिर्हतैर्ज-
गदुपैतिसुखंतथैतेकुर्वंतुनामनरकायचिरायपापं॥संग्राममृत्यु-
मधिगम्यदिवंप्रयांतुमत्वेतिनूनमहितान्विनिहंसिदेवि॥१८॥
दृष्ट्वैवकिंनभवतीप्रकरोतिभस्मसर्वासुरानरिषुयत्प्रहिणोपिशं-
स्त्रं ॥ लोकान्प्रयान्तुरिपवोपिहिशस्त्रपूता इत्थंमतिर्भवतिते-
ष्वहितेषुसाध्वी ॥ १९ ॥ खड्गप्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः
शूलाग्रकांतिनिवहेनदृशोसुराणां ॥ यन्नागताविलयमंशुमदिं
दुखंडयोग्याननं तवविलोकयतांतदेतत् ॥ २० ॥

टीका— हे भगवती! तुमारी कृपासे नित्यप्रति सदाही आदरयुक्त होता हुवा जो सुकृति मनुष्य हे सो तुह्मारी प्रसन्नताके अर्थ ज्योतिष्टोमादिक जे कर्म हैं तिनको कर्त्ता हे फिर ताके अनंतर तुह्मारी प्रसन्नतासे स्वर्गमें जाता है फिर ताके अनंतर मोक्षको प्राप्त होता है हे देवी! तिस कारण करिकै तीनों लोकोंमें तुमही फल देनेंवाली हो ॥ १६ ॥ हे दुर्गे! तुम मन करिकै स्मरण करी हुई सब प्राणीयोंका भय दूर कर्त्री हो और स्थिर चित्तवालों करिकै स्मरण करी हुई तुम उनको धर्म अर्थ काम मोक्ष इनका साधनभूत अत्यंत श्रेष्ठ बुद्धि देती हो हे दारिद्र्य और दुःख और भय इनको दूर करनेवाली! सबका उपकार करनेको सदैव आर्द्र है हृदय जाको ऐसी तुह्मारेसे और दूसरी कौन है अर्थात् कोई नहीं है ॥ १७ ॥ तुमनें मारे जे ये महिषासुरसे आदि ले करकै दैत्य तिन करिकै जगत् सुखको प्राप्त हो और तिस प्रकार ये असुर बहुत काल पर्यंत नरकके विषे प्राप्त होवेको पाप मत करो किंतु ये असुर संग्रामके विषे मृत्युको प्राप्त होकर स्वर्गमें जावो ये निश्चय करिकै तीन

कारण मनमें विचार करिकै हे देवी! इन असुरोंको तुम मारती हो ॥ १८ ॥ हे भगवती! दृष्टि करिकेही क्या सब असुरोंको भस्म नहीं करद्यो अर्थात् करिही द्यो तौभी शत्रुवोंके विषे जो तुम शस्त्र छोडती हो सो हमारो शत्रुभी शस्त्रोंसे पवित्र होता हुवा यथेच्छ स्वर्गादिक लोकोंके विषे जावो इस प्रकारसे दुष्ट दैत्योंके विषे तुह्मारी श्रेष्ठ बुद्धि है ॥ १९ ॥ और संग्रामके विषे तुह्मारे खड्गकी जे प्रभा ताके समूहके चौतरफ फैलनें करिकै और त्रिशूलकी प्रभाके समूह करिकै असुरोंकी जे दृष्टि ते नाशको प्राप्त न भई सो यह औरही कारण है क्यौं कि कैसे हैं वे असुर हे अमृतमयी किरण जाकी ऐसा अर्द्धचंद्र करिकै युक्त जो तुह्मारा मुख ताको देखते हुवे ॥ २० ॥

दुर्वृत्तवृत्तशमनंतवदेविशीलंरूपंतथैतदविचिंत्यमतुल्यमन्यैः। वीर्यंचहंतृहृतदेवपराक्रमाणांवैरिष्वपिप्रकटितैवदयात्वयेत्थम् ॥ २१ ॥ केनोपमाभवतुतेस्यपराक्रमस्य रूपंचशत्रुभयकार्यतिहारिकुत्र ॥ चित्तेकृपासमरनिष्ठुरताचदृष्टात्वय्येवदेविवरदेभुवनत्रयेपि॥ २२॥ त्रैलोक्यमेतदखिलंरिपुनाशनेनत्रातंत्वयासमरमूर्धनितेपिहत्वा ॥ नीतादिवंरिपुगणाभयमप्यपास्तमस्माकमुन्मदसुरारिभवंनमस्ते ॥ २३ ॥ शूलेनपाहिनोदेविपाहिखड्गेनचाम्बिके ॥ घण्टास्वनेननः पाहिचापज्यानिःस्वनेनच॥२४॥प्राच्यांरक्षप्रतीच्यांच चण्डिकेरक्षदक्षिणे॥ भ्रामणेनात्मशूलस्यउत्तरस्यांतथेश्वरि ॥ २५ ॥

टीका– फिर हेदेवि! तुम कैसीहो पापियोंके पाप दूर करनेंवाला यह तुह्मारा स्वाभाविक गुणहे और तिसीप्रकार मन करिकेभी चितवन करनेंको दुर्लभ और अद्वितीय होनेंसे और कोई मनोहर रूपों करिकै समान नही ऐसा तुमारा रूपहे और तिसीप्रकार अपने आधीन कियेहैं देव जोंन ऐसा है पराक्रम जिनोंका ऐसे दैत्योंको मारनेंवाला तुह्मारा पराक्रमहे फिर हेदेवि! वैरियोंकेविषेभी तुमने ऐसे दयाही प्रगट करी ॥ २१ ॥ हेवरदान देनेंवाली!

तुमारा इस पराक्रमकी तीन लोकमेंभी किसीके साथ उपमा होय अर्थात् किसीके साथ नहीं ऐसा तुह्मारा पराक्रमहै और शत्रुवोंको भय करनेंवाला औरनको मनोहारी ऐसा रूप कहां ऐसा तुमाराही रूपहै और तुह्मारा चित्तके विषे कृपा और रणके विषे कठोरता यह तुम्हारे विषेही देखीहे ॥ २२ ॥ हेदेवि! संग्रामके विषे दैत्योंको मारि करिके तुमनें संपूर्ण त्रिलोकीकी रक्षा करी फिर उन अपने दैत्योंकोभी संग्रामके विषे मारि करिके तुमनें स्वर्गमें पहुँचादिये और दैत्योंसे उत्पन्न जो हमको भय था सो हमारा भयभी तुमने दूरकिया ऐसी जो तुमहो तुह्मारे अर्थ नमस्कारहै ॥ २३ ॥ हे अंबिके! त्रिशूल करिके हमारी शत्रुवोंसे रक्षाकरो और खड्ग करिकै रक्षाकरो और हे देवि ! घंटाके शब्द करिकै और धनुषकी टंकार करिके तुम हमारी शत्रुवोंसे और पापोंसे रक्षाकरो ॥ २४ ॥ हेचंडिके त्रिशूलको चारों और घुमानें करिकै पूर्वमें और पश्चिममें और दक्षिणमें हमारी रक्षाकरो और तिसीप्रकार हेईश्वरी उत्तरके विषे रक्षाकरो ॥ २५ ॥

सौम्यानियानिरूपाणित्रैलोक्येविचरंतिते ॥ यानिचात्यंतघोराणितैरक्षास्मांस्तथाभुवम्॥ २६ ॥ खड्गशूलगदादीनियानि चास्त्राणितेम्बिके॥करपल्लवसंगीनितैरस्मान्रक्षसर्वतः॥ २७॥ ऋषिरुवाच ॥ एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नंदनोद्भवैः॥अर्चिताजगतां धात्रीतत्रगंधानुलेपनैः ॥ २८ ॥ भक्त्यासमस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यैर्धूपैःसुधूपिता ॥ प्राहप्रसादसुमुखीसमस्तान्प्रणतान्सुरान् ॥२९॥ देव्युवाच ॥ व्रियतांत्रिदशाः सर्वेयदस्मत्तोभिवांछितम्॥ददाम्यहमतिप्रीत्यास्तवैरेभिःसुपूजिता॥३०॥

टीका– और हेभगवती ! संसारको रचनवाले और पालना करनेंवाले जे तुम्हारे सौम्यरूपहैं और संसारके संहार करनेवाले ऐसे जे तुम्हारे भयंकर रूप हैं ते दोनो प्रकारके रूप त्रिलोकीके विषे विचरतेहैं तिन दोनों प्रकारके रूपों करिकै हमारी रक्षाकरो और या पृथ्वीकी रक्षा करो और पातालकी राक्ष-

करो ॥ २६ ॥ और हेभगवती ! हाथेमें धारण किये ऐसे जे खड्ग और त्रिशूल और गदा इन आदिलेकर शस्त्र तिनकरिके और धनुषआदि जे अस्त्रहैं तिन करिके चारों तरफ शत्रुवोंसे और दुःखसे हमारी रक्षाकरो॥२७॥ तब ऋषि बोले कि हे राजन् ! जब इसप्रकारसे जगत्के पोषण करनेवाली भगवती देवता करिके स्तुति करीहुई और दिव्य नंदन वनमें उत्पन्न होनेवाले पुष्पों करिके और चंदन श्रीराग इत्यादिकोंकरिके पूजितहुई ॥ २८ ॥ और देवतावों करिके भक्तिपूर्वक दिव्य धूपसे पूजितहुई ऐसी भगवती प्रसन्न होतीहुई देवतोंके प्रति बोलतीभई ॥ २९ ॥ देवी बोली कि हे देवो ! सब तुम मेरेसे मनोवांछित वरदान मांगो तुमने स्तुतिकरी जिसकरिके मैं बडी प्रसन्नहूं सो जो मांगोगे वही दूंगी ॥ ३० ॥

कर्त्तव्यमपरंयच्चदुष्करंतन्नविद्महे ॥ इत्याकर्ण्यवचोदेव्याःप्रत्यूचुस्तेदिवौकसः॥३१॥देवाऊचुः॥ भगवत्या कृतं सर्वंनकिंचिदवशिष्यते ॥ यदयंनिहतःशत्रुरस्माकंमहिषासुरः ॥३२ ॥ यदिचापिवरोदेयस्त्वयास्माकंमहेश्वरि ॥ संस्मृतासंस्मृतात्वं नो हिंसेथाः परमापदः ॥ ३३ ॥ यश्चमर्त्यःस्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने॥ तस्यवित्तर्द्धिविभवैर्धनदारादिसंपदाम् ॥ वृद्धयेस्मत्प्रसन्नात्वंभवेथाः सर्वदाम्बिके ॥३४॥ ऋषिरुवाच॥ ॥ इतिप्रसादितादेवैर्जगतोर्थे तथात्मनः ॥ तथेत्युक्त्वाभद्रकालीबभूवांतर्हितानृप ॥ ३५ ॥

टीका—फिर हेदेवो ! और जो तुमको कार्य करणाहोय सो कहो उसको कुछ मुश्किल नहीं जानतीहूं ऐसे भगवतीके कोमल वचन सुन करिके देवता बोलतेभये ॥३१॥ देव बोले हेदेवि ! जिस कारणसे तुमने यह हमारा महिषासुर नाम शत्रु मारा याते तुमने सब हमारा प्रयोजन करिही दिया और कुछ काम बाकी न रहा ॥ ३२ ॥ हेमहेश्वरी ! जो तुमनें हमारेको वरदेना योग्यहीहै तो यही आपत्तियोंके विषे तुमे वारंवार स्मरण करीहुई हमारी

गपत्ति दूरकरो ॥ ३३ ॥ और हे भगवती हे अमलानने जिन श्लोकोंकरिके तुह्मारी हमनें स्तुति कही उनश्लोकोंकरिके जो कोई मनुष्य तुह्मारी स्तुति करेगा याते हमरेपर प्रसन्नहुई उस मनुष्यकी अश्वसे आदि लेकर जो धन और ऋद्धि और ऐश्वर्य इन करिके सहित जे धन और स्त्री पुत्रादिकनकी संपत्तिहै तिनकी तुम सदा वृद्धिके अर्थ हो ॥३४ ॥ तब ऋषि बोले हेसुरथ राजन् इस प्रकारसे जगत्के अर्थ और अपने अर्थ देवोंने प्रसन्नकरी ऐसी जो भद्रकाली सो तैसेही हो ऐसे कहकर अंतर्धान होतीभई ॥ ३५ ॥

इत्येतत्कथितंभूपसंभूतासायथापुरा ॥ देवीदेवशरीरेभ्योजगत्त्रयंहितैषिणी ॥ ३६ ॥ पुनश्चगौरीदेहात्सासमुद्भूतायथाभवत् ॥ वधायदुष्टदैत्यानांतथाशुंभनिशुंभयोः ॥ ३७ ॥ रक्षणायचलोकानांदेवानामुपकारिणी ॥ तच्छृणुष्वमयाख्यातंयथावत्कथयामिते ॥ ३८ ॥ इतिश्रीमार्कण्डेयपुराणेसावर्णिकेमन्वंतरेदेवीमाहात्म्ये शक्रादिस्तुतिर्नामचतुर्थोध्यायः ॥ ४ ॥

टीका– हे राजन् तीनों लोकका हित चाहनेवाली भगवती महिषासुर आदि दैत्योंके वधकेवास्ते पहिले जैसे सब देवोंके शरीरोंसे तेजरूप उत्पन्न होती भई यह वृत्तांत मैंने तुह्मारेको कहा ॥ ३६ ॥ फिर दुष्ट दैत्योंके मारनेके वास्ते और शुंभ निशुंभके मारनेकेवास्ते और तीनों लोकोंकी रक्षाकेवास्ते गौरीका देहसे जैसे भगवती उत्पन्न भई सो तुमसे यथार्थ कहता हूं मेरा कहा सुनो ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ इति मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे शक्रादिकृत देव्याःस्तुतिर्नामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

ऋषिरुवाच ॥ पुरा शुंभनिशुंभाभ्यामसुराभ्यांशचीपतेः ॥ त्रैलोक्यंयज्ञभागाश्चहृतामदबलाश्रयात् ॥ १ ॥ तावेवसूर्यतांतद्वदधिकारंतथैंदवम् ॥ कौबेरमथयाम्यंचचक्रातेवरुणस्यच ॥ २ ॥ तावेवपवनर्द्धिंचचक्रतुर्वह्निकर्मच ॥ अन्येषांचाधिकारान्सस्वयमेवाधितिष्ठति ॥ ततोदेवाविनिर्धूताभ्रष्टराज्याःपराजिताः ॥ ३

हृताधिकारास्त्रिदशास्ताभ्यांसर्वैंनिराकृताः ॥ महासुराभ्यांतां देवींसंस्मरंत्यपराजिताम् ॥ ४॥ तयास्माकंवरोदत्तो यथापत्सु स्मृताखिलाः॥ भवतांनाशयिष्यामितत्क्षणात्परमापदः ॥५॥

टीका– ऋषि बोले पहिले तामसमन्वन्तरकेविषे कश्यपजीके सकाश ते दनु स्त्रीके विषे तीन असुर उत्पन्न होते भये जिनोंमें बड़ा तो नमुचि नामा और छोटे शुंभ और निशुंभ तिनमें शुंभ और निशुंभ ए दो बडे पराक्रमी भये इन शुंभ निशुंभ दोनों असुरोंने मद और गर्व और सामर्थ्य इनके शरीरमें होनेसे इंद्रका त्रैलोक्य खोस लिया ॥ १ ॥ और वे दोनों शुंभ निशुंभही सूर्यपनाका काम कर्त्तेभये और तिसी प्रकार चंद्रपनाका काम कर्त्ते भये और तिसी प्रकार कुबेरपनाका और यमराजपनाका और वरुणपनाका काम कर्त्ते भये ॥ २ ॥ और वेही पवनके निरंतर गतिरूपी जो ऐश्वर्य हैं सो कर्त्ते और वेही अग्निका काम कर्त्तेभये इसी प्रकार और सब देवतोंकाभी अधिकार आपही लेते भये और तिन शुंभ निशुंभ असुरोंसे हारे हुवे यातेही भ्रष्ट हो गयो है राज्य जिनोका ऐसे जे देव ताते शुंभ निशुंभ असुरोंने स्वर्गसे निकास दिये ॥ ३ ॥ फिर खुसगया है राज्य जिनोका ऐसे जे तिन दानवोंकरिके स्वर्गसे निकासे हुवे संपूर्ण देवता ते नहीं किसी करिकैभी पराजित ऐसी जो भगवती ताको स्मरण कर्त्ते भये ॥ ४ ॥ मैं आपत्तिकालकेविषे स्मरण करी हुई उसी समय तुह्मारी संपूर्ण आपत्ति जे हैं तिनको नष्ट करूंगी इस प्रकारसे भगवतीने हमारेको वर दिया है ॥ ५ ॥

इतिकृत्वामतिंदेवाहिमवंतंनगेश्वरम् ॥ जग्मुस्तत्रततोदेवीं विष्णुमायांप्रतुष्टुवुः ॥ ६ ॥ देवाऊचुः ॥ नमोदेव्यैमहादेव्यै शिवायै सततंनमः ॥ नमःप्रकृत्यैभद्रायैनियताःप्रणताःस्म ताम् ॥ ७ ॥ रौद्रायैनमोनित्यायैगौर्य्यैधात्र्यैनमोनमः॥ नमो जगत्प्रतिष्ठायैदेव्यैकृत्यैनमोनमः ॥ ८ ॥ ज्योत्स्नायैचंद्ररूपिण्यैसुखायैसततंनमः ॥ कल्याण्यैप्रणतामृद्ध्यै सिद्ध्यैकूर्म्यै

नमोनमः ॥ नैर्ऋत्यैभूभृतांलक्ष्म्यैशर्वाण्यैतेनमोनमः ॥ ९ ॥
दुर्गायैदुर्गपारायैसारायैसर्वकारिणि ॥ ख्यात्यैतथैवकृष्णायै
धूम्रायैसततंनमः ॥ १० ॥

टीका– इस प्रकार मनमें विचार करिके पर्वतराज हिमालय पर्वत जो है तहां जाते भये फिर विष्णुमाया भगवतीकी स्तुति कर्त्ते भये ॥ ६ ॥ देव बोले कि देवीके अर्थ नमस्कार है और महादेवीके अर्थ और कल्याणरूपा भगवतीके अर्थ निरंतर नमस्कार है और प्रकृतिके अर्थ नमस्कार है और मंगलरूपाके अर्थ नमस्कार है एकाग्र चित्त हुवे तिस भगवतीको हम प्रणाम कर्त्ते हैं ॥ ७ ॥ और संहारशक्तिके अर्थ नमस्कार है और कालत्रयकरिकै अबाधित ऐसी नित्यरूपा भगवतीके अर्थ नमस्कार हो गौरीके अर्थ और धरणीरूपाके अर्थ नमस्कार ३ और जगत्‌का धारण करनेवालीके अर्थ नमस्कार देवी और कर्तीके अर्थ नमस्कार है ॥ ८ ॥ और चांदिनीरूपाके अर्थ और चंद्ररूपिणीके अर्थ परमानंदरूपाके अर्थ निरंतर नमस्कार और कल्याणीके अर्थ और प्रणाम करनेवाले तिनकी ऋद्धिके अर्थ और सिद्धिके अर्थ और कूर्मसंबंधिनी शक्तिके अर्थ नमस्कार और अलक्ष्मीके अर्थ और राजावोंकी लक्ष्मीके अर्थ और शर्वाणीके अर्थ नमस्कार२॥९॥ और दुःख करिकै जानी जाय ऐसी दुर्गाके अर्थ और संसारसे दूरके अर्थ और सर्व कारिणीके अर्थ और विख्यातिरूपाके अर्थ और तिसी प्रकार कृष्णशक्तिके अर्थ और धूम्रवर्णाके अर्थ निरंतर नमस्कार हो ॥ १० ॥

अतिसौम्यातिरौद्रायैनमस्तस्यैनमोनमः ॥ नमोजगत्प्रतिष्ठायैदेव्यैकृत्यैनमोनमः ॥ ११ ॥ यादेवीसर्वभूतेषुविष्णुमायेतिशब्दिता ॥नमस्तस्यैनमस्तस्यैनमस्तस्यैनमोनमः॥१२॥ यादेवीसर्वभूतेषुचेतनेत्यभिधीयते ॥ नमस्तस्यैनमस्तस्यै नमस्तस्यैनमोनमः ॥ १३ ॥ यादेवीसर्वभूतेषुबुद्धिरूपेणसंस्थिता ॥ नमस्तस्यैनमस्तस्यैनमस्तस्यैनमोनमः ॥ १४ ॥

यादेवीसर्वभूतेषुनिद्रारूपेणसंस्थिता ॥ नमस्तस्यैनमस्तस्यै नमस्तस्यैनमोनमः ॥ १५ ॥

टी०और अतिसौम्याके अर्थ अर्थात् अतिसुंदराके अर्थ और अत्यंत भयंकराके अर्थ नमस्कार नमस्कार नमस्कार और जगत्के उपादान कारणरूपाके अर्थ नमस्कार और देवशक्तिके अर्थ और क्रियारूपाके अर्थ नमस्कार नमस्कार नमस्कार ॥११॥ और जो भगवती सब भूतोंकेविषे विष्णुमाया नामकरिके कही है ताके अर्थ काय वाणी और मन इन करिके प्रत्येक नमस्कार नमस्कार नमस्कार ॥ १२ ॥ और जो सब प्राणियोंकेविषें चैतन्यशक्ति कहीजातीहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ १३ ॥ और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंके विषे बुद्धिरूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ १४ ॥ और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंके विषे निद्रारूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ १५ ॥

यादेवीसर्वभूतेषुक्षुधारूपेणसंस्थिता ॥ नमस्तस्यैनमस्तस्यै नमस्तस्यैनमोनमः ॥ १६ ॥ यादेवीसर्वभूतेषुच्छायारूपेणसंस्थिता ॥ नमस्तस्यैनमस्तस्यैनमस्तस्यैनमोनमः ॥ १७ ॥ यादेवीसर्वभूतेषुशक्तिरूपेणसंस्थिता ॥ नमस्तस्यैनमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥ १८ ॥ यादेवीसर्वभूतेषुतृष्णारूपेणसंस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यैनमस्तस्यैनमोनमः ॥ १९ ॥ यादेवीसर्वभूतेषुक्षांतिरूपेणसंस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यैनमोनमः ॥ २० ॥

टीका—और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंकेविषे क्षुधारूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ १६ ॥ और जो देवी संपूर्णप्राणीयोंकेविषे छायारूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ १७ ॥ और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंकेविषे शक्तिरूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ १८ ॥ और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंकेविषे तृष्णारूप करिके स्थितहै ताके अर्थ

नमस्कार ३ ॥ १९ ॥ और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंकेविषे क्षांतिरूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ २० ॥

यादेवीसर्वभूतेषुजातिरूपेणसंस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यैनमोनमः ॥ २१ ॥ यादेवीसर्वभूतेषुलज्जारूपेणसंस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यैनमोनमः ॥ २२ ॥ यादेवीसर्वभूतेषु शांतिरूपेणसंस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यैनमोनमः॥२३॥ यादेवीसर्वभूतेषुश्रद्धारूपेणसंस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥२४॥यादेवीसर्वभूतेषुकांतिरूपेणसंस्थिता॥नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यैनमोनमः ॥ २५ ॥

टीका—और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंके विषे जातिरूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ २१ ॥ और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंके लज्जारूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ २२ ॥ और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंकेविषे शांतिरूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ २३ ॥ और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंकेविषे श्रद्धारूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ २४ ॥ और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंकेविषे कांतिरूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ॥ ३ ॥ २५ ॥

यादेवीसर्वभूतेषुलक्ष्मीरूपेणसंस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यैनमोनमः ॥ २६ ॥ यादेवीसर्वभूतेषुधृतिरूपेणसंस्थिता॥ नमस्तस्यैनमस्तस्यैनमस्तस्यैनमोनमः॥२७॥ यादेवीसर्वभूतेषुवृत्तिरूपेणसंस्थिता ॥ नमस्तस्यैनमस्तस्यै नमस्तस्यैनमोनमः ॥ २८ ॥ यादेवीसर्वभूतेषुस्मृतिरूपेणसंस्थिता॥नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यैनमोनमः ॥ २९ ॥ यादेवीसर्वभूतेषुदयारूपेणसंस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यैनमोनमः ॥ ३० ॥

टीका—और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंकेविषे लक्ष्मीरूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ २६ ॥ और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंकेविषे धृतिरूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ २७ ॥ और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंके विषे वृत्तिरूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ २८ ॥ और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंके विषे स्मृतिरूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ २९ ॥ और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंके विषे दयारूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ ३० ॥

यादेवीसर्वभूतेषुनीतिरूपेणसंस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यैनमोनमः ॥३१॥ यादेवीसर्वभूतेषुतुष्टिरूपेणसंस्थिता॥नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यैनमोनमः॥ ३२॥ यादेवी सर्वभूतेषुपुष्टिरूपेणसंस्थिता ॥ नमस्तस्यैनमस्तस्यैनमस्तस्यैनमोनमः ॥ ३३ ॥ यादेवीसर्वभूतेषुमातृरूपेणसंस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यैनमस्तस्यैनमोनमः ॥३४॥ यादेवीसर्वभूतेषु भ्रांतिरूपेणसंस्थिता॥नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ३५ ॥

टीका—और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंकेविषे नीतिरूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ ३१ ॥ और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंकेविषे तुष्टिरूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ ३२ ॥ और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंकेविषे पुष्टिरूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ ३३ ॥ और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंकेविषे मातृरूपकरिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ ३४ ॥ और जो देवी संपूर्ण प्राणियोंकेविषे भ्रांतिरूप करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ ३५ ॥

इंद्रियाणामधिष्ठात्रीभूतानांचाखिलेषुया ॥ भूतेषुसततंव्याप्त्यैतस्यैदेव्यैनमोनमः ॥ ३६ ॥ चितिरूपेणयाकृत्स्नमेतद्व्याप्यस्थिताजगत् ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै

नमोनमः ॥ ३७ ॥ स्तुतासुरैःपूर्वमभीष्टसंश्रयात्तथासुरेंद्रे-
शदिनेषुसेविता ॥ करोतुसानःशुभहेतुरीश्वरीशुभानिभद्रा-
ण्यभिहंतुचापदः ॥३८॥ यासांप्रतंचोद्धतदैत्यतापितैरस्माभि
रीशाचसुरैर्नमस्यते ॥ याचस्मृतातत्क्षणमेवहन्तिनःसर्वापदो
भक्तिविनम्रमूर्तिभिः॥ ३९॥ऋषिरुवाच॥एवंस्तवाभियुक्तानां
देवानांतत्रपार्वती ॥स्नातुमभ्याययौतोयेजाह्नव्यानृपनंदन॥४०॥

टीका–और जो देवी संपूर्ण पञ्चमहाभूतोंकी आधार शक्ति है और संपूर्ण प्राणियोंकेविषे ज्ञानके कारण ऐसी स्थूल सूक्ष्म जे इंद्रिय तिनको प्रेरण करनेवाली ऐसी व्याप्तिरूप तिस देवीके अर्थ निरंतर नमस्कार ३॥३६॥ और जो देवी चैतन्यशक्तिरूपकरिके संपूर्ण जगत्कूं व्याप्त करिके स्थितहै ताके अर्थ नमस्कार ३ ॥ ३७॥ और जो शुभका कारण ईश्वरी अभीष्टवस्तुके कारणसे पहिले ब्रह्मा आदिदेवोंकरिके स्तुतिकरिगई और तिसीप्रकार इंद्र करिके नित्यप्रति सेवितहोतीभई सो भगवती हमारे निर्विघ्नपूर्वक मंगलकरो और आपत्ति जे है तिनको दूर करो ॥ ३८ ॥ और जो देवी निर्मर्याद जे शुंभनिशुंभ असुर तिनकरिके पीडित और भक्तिकरिके नम्रहै मूर्त्ति जि-नोंकी ऐसे जे हम तिनकरके स्तुति करीजातीहै और जो देवी स्मरण करीहुई उसीक्षण हमारी संपूर्ण आपत्तियोंको दूरकरतीहै सो भगवती हमारे निर्विघ्नपूर्वक मंगल करो और आपत्ति जे है तिनकूं दूर करो ॥ ३९ ॥ तब ऋषि बोले कि हे राजन् फिर उस हिमाद्रिपर्वतकेविषे इसप्रकार स्तुतिकेविषे युक्त जे देवता तिनके सन्मुख श्रीगंगाजीके जलमें स्नान करनेकों पार्वती भगवती आतीभई ॥ ४० ॥

साब्रवीत्तान्सुरान्सुभ्रूर्भवद्भिःस्तूयतेत्रका ॥ शरीरकोशत
श्चास्याः समुद्भूताब्रवीच्छिवा ॥४१॥ स्तोत्रंममैतत्क्रियतेशुंभ
दैत्यनिराकृतैः॥देवैःसमस्तैःसमरेनिशुंभेनपराजितैः ॥ ४२ ॥
शरीरकोशाद्यत्तस्याःपार्वत्यानिःसृताम्बिका ॥ कौशिकीतिस

मस्तेषुततो लोकेषु गीयते ॥ ४३ ॥ तस्यांविनिर्गतायांतु कृष्णाभूत्सापिपार्वती ॥ कालिकेतिसमाख्याताहिमाचलकृताश्रया ॥ ४४ ॥ ततोम्बिकांपरंरूपंबिभ्राणांसुमनोहरं ॥ ददर्शचण्डोमुण्डश्चभृत्यौशुंभनिशुंभयोः ॥ ४५ ॥

टीका— फिर वह पार्वती देवतासे प्रश्न कर्त्ती भई के हे देवो तुम मेरेसे अन्य किसकी स्तुति कर्त्ते हो ताके अनन्तर देवताके उत्तर दीनेके पहिलेही पार्वतीके शरीरकोशसे निकसकर प्रकटहुई शिवा नाम भगवती उत्तर देती भई ॥४१॥निशुंभ करिके संग्रामकेविषे हार हुवे और शुंभ करिकै स्वर्गसे निकासे हुवे ऐसे जे सब देव तिनकरिके यह मेरी स्तुति करी जाती है ॥ ४२ ॥ जिस कारणसे तिस पार्वतीका शरीरकोशसे निकसी हुई जो अंबिका तिस कारणसे सब लोकोंकेविषे कौशिकी इस नाम करिके कही जाती है ॥ ४३ ॥ फिर पार्वतीका शरीरकोशसे शिवा निकसाके बाद पार्वती कृष्णवर्ण होती भई हिमाचलकेविषे किया है स्थान जाने ऐसी कालिका नामकरिके विख्यात भई ॥ ४४ ॥ ताके अनंतर अत्यंत मनोहर रूपको धारण कर्त्ती हुई भगवतीको शुंभ और निशुंभ इनके नौकर चंड और मुंड ये देखते भये ॥ ४५ ॥

ताभ्यांशुंभायचाख्याताअतीवसुमनोहरा ॥ काप्यास्ते स्त्री महाराजभासयंतीहिमाचलम् ॥ ४६ ॥ नैवताहक्कचिद्रूपंदृष्टं केनचिदुत्तमम् ॥ज्ञायतांकाप्यसौदेवीगृह्यतांचासुरेश्वर॥४७॥ स्त्रीरत्नमतिचार्वंगीद्योतयंतीदिशस्त्विषा॥सातुतिष्ठतिदैत्येंद्र तांभवान्द्रष्टुमर्हति ॥ ४८ ॥यानिरत्नानिमणयोगजाश्वादीनिवैप्रभो ॥ त्रैलोक्येतुसमस्तानिसांप्रतंतानितेगृहे ॥ ४९ ॥ ऐरावतःसमानीतोगजरत्नंपुरन्दरात् ॥ पारिजाततरुश्चायंतथैवोच्चैःश्रवा हयः ॥ ५० ॥

टीका—ताके अनंतर तिनोनें जाकर शुंभसे कहा के हे महाराज हिमाचल पर्वतकूं अपनी कांतिकरिके शोभायमान कर्त्ती हुई एक वहां बडी मनोहर

..ी है ॥ ४६ ॥ ऐसा उत्तम रूप किसीने कहू नहीं देखा याने यह कोई ऐसी भी देवी है यह आप निश्चय जाणों हे असुरेश्वर आप उसको ग्रहण करो॥४७॥ और अत्यंत मनोहर अंगवाली और सब स्त्रियोंकेविषे उत्तम और अपनी कांतिकरिके दशो दिशाकों प्रकाशमान कर्त्ती हुई हिमालय पर्वतकेविषे स्थित है सो हे दैत्येन्द्र तुम उसको देखनेकूं योग्य हो ॥ ४८ ॥ और हे प्रभो त्रिलोकीकेविषे संपूर्ण हाथी और घोडे इनसे आदि लेकर जे रत्नसदृश है और हे प्रभो पद्मरागादिक जे मणी है इस समय ये संपूर्ण वस्तु तुह्मारा घरकेविषे वर्त्तमान है ॥ ४९ ॥ और हे प्रभो ऐरावत हार्थीरूपी रत्न और कल्पवृक्षरूपी रत्न और उच्चैःश्रवा अश्वरूपी रत्न ये आप इंद्रके पाससे लाये ॥ ५० ॥

विमानंहंससंयुक्तमेतत्तिष्ठतितेंगणे॥रत्नभूतमिहानीतंयदासी-
द्वेधसोद्भुतम्॥५१॥ निधिरेषमहापद्मःसमानीतोधनेश्वरात्॥
किंजल्किनींददौचाब्धिर्मालामम्लानपंकजाम् ॥५२॥ छत्रं
तेवारुणंगेहेकांचनस्त्रावितिष्ठति ॥ तथायंस्यंदनवरोयःपुरासी
त्प्रजापतेः ॥ ५३ ॥ मृत्योरुत्क्रांतिदानामशक्तिरीशत्वया
हृता ॥ पाशःसलिलराजस्यभ्रातुस्तवपरिग्रहे ॥ ५४ ॥
निशुंभस्याब्धिजाताश्चसमस्तारत्नजातयः ॥ वह्निश्चापिददौ
तुभ्यमग्निशौचेचवाससी ॥ ५५ ॥

टीका–और हंसों करिके युक्त रत्नरूपी जो ब्रह्माका अद्भुत विमान था सो यहां ल्याया हुवा तुह्मारा आँगनके विषे स्थित है॥५१॥ और कुबेरसे ल्याया ऐसा निधिरूपी रत्न तुह्मारे घरके विषे वर्त्तमान है और समुद्र कमलोकी माला देतो भयो ॥ ५२ ॥ और सुवर्णकी वर्षा करनेवाला ऐसा वरुणका छत्र तुह्मारे घरके विषे स्थित है और तिसी प्रकार जो पहिले दक्ष प्रजापतिके रथ था सो यहां लाया हुवा तुह्मारे घरके विषे स्थित है ॥ ५३ ॥ और हे ईश अंतकके सकाशते तुमने प्राणोंको खैचनेवाली शक्ति लई और वरुणका जो पाश है सो तुह्मारा भाई निशुंभका हाथके विषे है ॥ ५४ ॥ और

जितने प्रकारके समुद्रसे उत्पन्न होनेवाले रत्न है वे संपूर्ण तुह्मारा भाईके घरके विषे हे और हे शुंभ अग्निमें गेरनेसे पवित्र होय ऐसे सुवर्णमयी दो वस्त्र तुह्मारेको अग्निदेव देतो भयो ॥ ५५ ॥

एवंदैत्येंद्ररत्नानिसमस्तान्याहृतानिते ॥ स्त्रीरत्नमेषाकल्याणीत्वयाकस्मान्नगृह्यते ॥५६॥ ऋषिरुवाच ॥ निशम्येतिवचः शुंभःसतदाचंडमुंडयोः ॥ प्रेषयामाससुग्रीवंदूतंदेव्यामहासुरः ॥ ५७॥शुंभउवाच॥ इतिचेतिचवक्तव्यासागत्वावचनान्मम ॥ यथाचाभ्येतिसंप्रीत्यातथाकार्यंत्वयालघु ॥५८ ॥ सतत्रगत्वा यत्रास्तेशैलोद्देशेतिशोभने ॥ तांचदेवींततःप्राहश्लक्ष्णंमधुरयागिरा ॥ ५९ ॥ दूतउवाच ॥ देविदैत्येश्वरःशुंभस्त्रैलोक्येपरमेश्वरः ॥ दूतोहंप्रेषितस्तेनत्वत्सकाशमिहागतः ॥ ६० ॥

टीका—हे दैत्येंद्र इस प्रकार तुमने पूर्वोक्त सब रत्न संचय किये फिर शुभ करनेवाली अंबिका स्त्रीरूपी रत्न तुम क्यों ग्रहण नहीं कर्ते हो ॥ ५६ ॥ तब ऋषि बोले कि हे सुरथ राजन् इस प्रकार चंड और मुंड इनका वचन सुन करिके शुंभ देवी संदेस लानेवाला ऐसा सुग्रीव नामा दूत ताको देवी पास भेजताभया ॥५७॥ शुंभ बोला हे सुग्रीव तू वहां जा करिके मेरे वचनसे साम औरभेद इन उपायों करिकै इस प्रकार कहना के जिस तरह प्रीति करिकै वह शीघ्र हमारे पास आ जाय तिस प्रकार तुह्मारेको कार्य कर्त्तव्य है॥५८॥ ताके अनंतर जहां हिमालय पर्वतका श्रेष्ठ प्रदेशके विषे देवी विराजमान तहां जा करिके अत्यंत मधुर वाणी करिकै उस देवीको मनोहर वाक्य बोलता भया ॥ ५९ ॥ दूत बोला कि हे देवी त्रिलोकीके विषे शुंभ नामा दैत्येश्वर परमेश्वर है ताका भेजाहुवा दूत मैं यहां तुह्मारे पास आया हूँ ॥ ६० ॥

अव्याहताज्ञःसर्वासुयःसदादेवयोनिषु॥निर्जिताखिलदैत्यारिः सयदाहशृणुष्वतत् ॥ ६१॥ ममत्रैलोक्यमखिलंममदेवावशानुगाः ॥ यज्ञभागानहंसर्वानुपाश्नामिपृथक्पृथक् ॥ ६२ ॥

त्रैलोक्येवररत्नानिममवश्यान्यशेषतः ॥ तथैवगजरत्नंचहृतं देवेंद्रवाहनं ॥६३ ॥ क्षीरोदमथनोद्भूतमश्वरत्नंममामरैः॥उच्चैः श्रवससंज्ञंतत्प्रणिपत्यसमर्पितम् ॥ ६४ ॥ यानिचान्यानिदेवे-षुगंधर्वेपूरगेषुच ॥ रत्नभूतानिभूतानितानिमय्येवशोभने ॥६५॥

टीका–सदा देव दानवोंविषे नहीं रुकै आज्ञा जाकी और जीतलिये सब देव जाने ऐसा जो शुंभासुर ताने जो कहा सो मेरेसे तुम सुनो ॥ ६१ ॥ संपूर्ण त्रिलोकी मेरी है और संपूर्ण देव मेरे वशीभूत नौकर है और पृथक् पृथक् इंद्रादि देवोंके निमित्त विधान किये आहुति रूपी जे यज्ञभाग हैं तिन सबको मैंही भोजन कर्त्ता हूँ ॥ ६२ ॥ और जे त्रिलोकीके विषे सुंदर वस्तु हैं ते संपूर्ण मेरे वश है और तिसी प्रकार इंद्रका वाहन गजरूपी रत्न हमारे ल्याया हुवा है ॥ ६३ ॥ और क्षीर समुद्रके मंथनसे उत्पन्न भया ऐसा उच्चैः-श्रवानामा जो अश्व सो देवताओंनें प्रणाम करिके मेरे भेट किया ॥ ६४ ॥ और हे शोभने देवोंके विषे और गंधर्वोंके विषे और नागोंके विषे जे अन्य मनोहर स्त्रीरूपी रत्न हैं ते संपूर्ण मेरेही विषे है ॥ ६५ ॥

स्त्रीरत्नभूतांत्वांदेविलोकेमन्यामहेवयम् ॥ सात्वमस्मानुपागच्छयतोरत्नभुजोवयम् ॥ ६६ ॥ मांवाममानुजंवापिनिशुंभमुरुविक्रमम् ॥ भजत्वंचंचलापांगिरत्नभूतासिवैयतः ॥ ६७ ॥ परमैश्वर्यमतुलंप्राप्स्यसेमत्परिग्रहात् ॥ एतद्बुद्ध्यासमालोच्य मत्परिग्रहतांव्रज ॥ ६८ ॥ ऋषिरुवाच ॥ इत्युक्तासातदादेवी गंभीरांतःस्मिताजगौ ॥ दुर्गाभगवती भद्राययेदंधार्यतेजगत्॥ ६९ ॥ देव्युवाच ॥ सत्यमुक्तंत्वयानात्रमिथ्याकिंचित्त्वयोदितम् ॥त्रैलोक्याधिपतिःशुंभोनिशुंभश्चापिताद‍ृशः॥७०॥

टीका–हे देवी इसभूलोकके विषे तुमारेको हम उत्तम स्त्रीरूपीरत्न जानतेहै सो तुम हमारेकों प्राप्तहो याते हम उत्तम रत्नको भोगनेवाले होवे ॥६६॥ हे चपलकटाक्षोंवाली तुम उत्तम रत्नरूपीहैं याते मेरेको अथवा मेरा छोटा

भाई बडापराक्रमी निशुंभकू पतिभावसे अंगीकार करो. ॥ ६७ ॥ और मेरा आश्रयसे तुम अत्यंत श्रेष्ठ ऐश्वर्यकी स्वामिनी अर्थात् मालिक होजावोगी हे देवी यह बुद्धिसे विचार करिके मेरे स्त्रीपनाको तुम प्राप्त हो ॥ ६८ ॥ तब ऋषि बोले कि हे सुरथराजन् जब इस प्रकारसे दूतने भगवतीको शुंभका संदेश कहा ताको सुनि हसतीभई भगवती उसदूतको बोलतीभई फिर कैसीहै देवी अगाधहै अभिप्राय जाको फिर कैसी है के दुःखकरिके जानीजाय फिर कैसीहै कल्याणरूपीहै वह कौन भगवती के जा करिके यह जगत् धारण कियाजाताहै सो ॥६९॥ देवी बोली के हे दूत त्रैलोक्यका राजा शुंभहै और निशुंभभी उसीके समानहै इसमे तुमनें सत्य कहा कुछ मिथ्या नही कहा॥७०॥

किंत्वत्रयत्प्रतिज्ञातंमिथ्यातत्क्रियतेकथम् ॥ श्रूयतामल्पबुद्धित्वात्प्रतिज्ञायाकृतापुरा ॥ ७१ ॥ योमांजयतिसंग्रामेयोमेदर्प्यंव्यपोहति ॥ योमेप्रतिबलोलोकेसमेभर्ताभविष्यति॥ ७२ ॥ तदागच्छतुशुंभोत्रनिशुंभोवामहासुरः ॥ मांजित्वाकिंचिरेणात्रपाणिंगृह्णातुमेलघु ॥ ७३ ॥ दूतउवाच॥ अवलिप्तासिमैवंत्वंदेविब्रूहिममाग्रतः ॥ त्रैलोक्येकःपुमांस्तिष्ठेदग्रेशुंभनिशुंभयोः ॥ ७४ ॥अन्येषामपिदैत्यानांसर्वेदेवानवैयुधि॥ तिष्ठंतिसंमुखेदेविकिंपुनःस्त्रीत्वमेकिका ॥ ७५ ॥

टीका—इस शुंभका आश्रयणके विषे मेरा विचारहै परंतु जो मैने प्रतिज्ञा करी सो मिथ्या कैसे करू जो मने पहिले बाल्यावस्थाके विषे विगर विचारि करिके प्रतिज्ञा करीहै सो तुंम सुनो॥७१॥जो मेरेको संग्रामके विषे जीते और जो मेरा गर्व दूरकरे और जो लोकके विषे मेरेसे बलवान् सो मेरा भर्त्ताहोगा ॥ ७२ ॥ फिर तिसप्रतिज्ञा कारणसे यहां मेरी प्रतिज्ञा पालनके विषे शुंभ आवो अथवा महासुर निशुंभ आवो फिर देरकरनेकरिके क्या है संग्रामके विषे मेरेको जीतकर शीघ्र मेरा पाणिग्रहणकरो ॥७३॥ तब दूत बोला के हे देवी तुम ऐसे गर्व मतकरो और तुम मेरे आगे यह कहो के त्रिलोकीके विषे ऐस

पुरुप कोनहे जो शुंभनिशुंभके आगे युद्ध करनेको खडा होवे अर्थात् कोई नही ॥ ७४ ॥ और हेदेवी संग्रामके विपे अन्य दैत्योंकेभी सन्मुख संपूर्ण देव नही खडेरहतेहै फिर तु इकली स्त्री युद्धके विपे दैत्योंके सन्मुख कैसी खडी रहसकतीहो अर्थात् सर्वथा नही ॥ ७५ ॥

इंद्राद्यास्सकलादेवास्तस्थुर्येपांनसंयुगे ॥ शुंभादीनांकथंतेपां स्त्रीप्रयास्यसिसंमुखम् ॥ ७६ ॥ सात्वंगच्छमयैवोक्तापार्श्वंशुंभनिशुंभयोः॥ केशाकर्पणनिर्धूतगौरवामागमिष्यसि ॥ ७७ ॥ देव्युवाच ॥ एवमेतद्बलीशुंभोनिंशुंभश्चातिवीर्यवान् ॥ किंकरोमिप्रतिज्ञामेयदनालोचितापुरा ॥ ७८ ॥ सत्वंगच्छमयोक्तंतेयदेतत्सर्वमादृतः ॥ तदाचक्ष्वासुरेंद्रायसचयुक्तंकरोतुतत् ॥ ७९ ॥ मार्कंडेयपुराणे सावर्णिकेमन्वंतरेदेवीमाहात्म्ये देव्यादूतसंवादोनामपंचमोध्यायः ॥ ५ ॥

टीका—और संग्रामके विपे जिनके अगाडी युद्धकरनेको इंद्रादिक देव नही खडे रहतेभये तिनशुंभनिशुंभके सन्मुख युद्धकरनेको तू स्त्री कैसी जायगी ॥ ७६ ॥ सो तुम मेरा कहनासे शुंभनिशुंभके पास चलो क्योंके केशोके खैचने करिके दूर होगया बडपन जाका ऐसी तुम शुंभनिशुंभके पास मत आवो इस दया करिके मै तुमको कहताहू ॥ ७७ ॥ तब देवी बोली हे दूत शुंभ बडापराक्रमीहै और निशुंभ बडा पराक्रमीहै यह तुमने कहा सो ऐसेही है परंतु क्या करू मेरी यह प्रतिज्ञा है मैने पहिले विचार नहीकिया ॥७८॥हे दूत सो तुम जावो और मैने संपूर्ण तुमारेको यह कहा सो जाकर आदरयुक्त हुवा शुंभासुरके अर्थ कहो ताके अनंतर वह शुंभासुर उचितहो सो करो॥७९॥ इति मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वंतरे देवीमाहात्म्ये देव्यादूतसंवादोनामपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

ऋषिरुवाच ॥ इत्याकर्ण्यवचोदेव्याःसदूतोमर्षपूरितः॥ समाचष्टसमागम्यदैत्यराजायविस्तरात् ॥ १ ॥ तस्यदूतस्यत-

द्वाक्यमाकर्ण्यासुरराट्ततः ॥ सक्रोधःप्राहदैत्यानामधिपंधूम्र-
लोचनं ॥ २ ॥ हेधूम्रलोचनाशुत्वंस्वसैन्यपरिवारितः ॥
तामानयबलाद्दुष्टांकेशाकर्षणविह्वलां ॥ ३ ॥ तत्परित्राण
दःकश्चिद्यदिवोत्तिष्ठतेपरः ॥ सहंतव्योमरोवापियक्षोगंधर्वए-
ववा ॥ ४ ॥ ऋषिरुवाच ॥ तेनाज्ञप्तस्ततःशीघ्रंसदैत्योधूम्रलो
चनः ॥ वृतः षष्ट्यासहस्राणामसुराणांद्रुतंययौ ॥ ५ ॥

टीका—ताके अनंतर ऋषिबोले हे सुरथराजन् इसप्रकार देवीका वचन श्रवणकरिके वह दूत क्रोधकरिके भराहुवा देवीका पर्वतके सकाशते आकरिके विस्तारते शुंभासुरके अर्थ कहताभया ॥ १ ॥ तिस दूतका मुखसे देवीका वाक्य श्रवण करिके ताके अनंतर क्रोध युक्तहुवा असुरोका राजा शुंभासुर दैत्योका मालिक ऐसा जो धूम्रलोचन ताहि कहताभया ॥ २ ॥ हे धूम्र लोचन तुम अपणी सेनाकरिके युक्तहुवा केशोंके खैंचनेकरिके व्याकुल ऐसी जो दुष्टिनी देवी है ताहि बलात्कारसें शीघ्र ल्यावो मेरेकूं प्राप्तकरो ॥३॥ और ताहि ग्रहण करनेको इच्छाकरे ऐसो ताकी रक्षा करनेवालो जो कोई और शत्रुता करिके खडाहोवे सो मारनेके योग्यहै चहिये देव होवे चाहिये यक्ष होवे अथवा गंधर्व होवे ॥ ४ ॥ तब ऋषि बोले हे राजन् ताके अनंतर शुंभकरिके आज्ञादियाहुवा ऐसा वह धूम्रलोचन दैत्य साठिहजार असुरोका समूह करिके युक्तहुवा शीघ्र जाताभया ॥ ५ ॥

सदृष्ट्वातांततोदेवींतुहिनाचलसंस्थिताम् ॥ जगादोच्चैःप्रयाहीति
मूलंशुंभनिशुंभयोः ॥ ६ ॥ नचेत्प्रीत्याद्यभवतीमद्भर्तारमु-
पैष्यति ॥ ततोबलान्नयाम्येपकेशाकर्षणविह्वलाम् ॥ ७ ॥
देव्युवाच ॥ दैत्येश्वरेणप्रहितोबलवान्बलसंवृतः ॥ बलान्नयसि
मामेवंततःकिंतेकरोम्यहं ॥८॥ ऋषिरुवाच॥इत्युक्तःसोभ्यधा-
वत्तामसुरोधूम्रलोचनः॥ हुंकारेणैवतंभस्मसाचकारांबिकाततः

॥ ९ ॥ अथक्रुद्धंमहासैन्यमसुराणांतथाम्बिका ॥ ववर्षसाय
कैस्तीक्ष्णैस्तथाशक्तिपरश्वधैः ॥ १० ॥

टीका—फिर वह धूम्रलोचन हिमाचलके विषे स्थित ऐसी जो देवी ताहि देखकर हे देवि तुम शुंभनिशुंभके पास चलो इस प्रकारसे ऊंचेस्वरकरिके बोलताभया ॥ ६ ॥ और जो तुम आज अपनी रुची करिके हमारा स्वामी शुंभ जो है ताहि नही प्राप्त होगी तो तिसकारणते यह धूम्रलोचननामा जो मै असुर हू सो अबही केशोंके खैचनेकरिके बेवश ऐसी जो तुम हो ताहि बलात्कार करिके हमारा स्वामी शुंभ जो है तिन्हे प्राप्तकरूगा॥७॥तब देवी बोली के हे धूम्रलोचन तु बलवान्हे और सेनाकरिके युक्त है और शुंभासुरका भेजाहुवाहै सो तु इस प्रकार पूर्वोक्त केश खैचनेकरिके बेवश ऐसी मै जो हू ताहि बलात्कारसे प्राप्तकरे तो ताके अनंतर मै तेरा क्या करू अर्थात् कुछनही ॥८॥ तब ऋषि बोले के देवी करिके ऐसै कहाहुवा धूम्रलोचनअसुर वेग करिके देवी जो है ताहि सन्मुख दौडताभया ताके अनंतर वह अंबिका हुंकार करिकेही ताहि भस्म कर्तीभई ॥ ९ ॥ फिर धूम्रलोचन भस्म होनेके बाद क्रोधयुक्तहुई ऐसी जो असुरोकी सेना है ताहि तीखे बाणों करिके और शाग्य सहित कुठारोके संपात करिके अंबिका आच्छादन कर्तीभई ॥ १० ॥

ततोधुतसटःकोपात्कृत्वानादंसुभैरवं ॥ पपातासुरसेनायांसिं-
होदेव्यास्तुवाहनः ॥ ११ ॥ कांश्चित्करप्रहारेणदैत्यानास्ये
नचापरान् ॥ आक्रम्यचरणेनान्यान्निजघानमहासुरान् ॥१२॥
केषांचित्पाटयामास नखैःकोष्ठानिकेसरी ॥ तथातलप्रहारेण
शिरांसिकृतवान्पृथक्॥ १३ ॥ विच्छिन्नबाहुशिरसःकृतास्ते-
नतथापरे ॥ पपौचरुधिरंकोष्ठादन्येषांधुतकेसरः ॥ १४ ॥
क्षणेनतद्बलंसर्वंक्षयंनीतंमहात्मना ॥ तेनकेसरिणादेव्यावाहने
नातिकोपिना ॥ १५ ॥

टीका—ताके अनंतर क्रोधसे कंपाये हैं कांधेके केश जाने ऐसादेवीका

वाहन सिंह भयंकर गर्जना करिके असुरोंकी सेनाके विषे उछल कर पडता भया ॥ ११ ॥ फिर कितनेही जे दैत्य है तिन्है करके प्रहार करिके मारता भया और कितनेही जे है तिन्है मुखके प्रहार करिके मारताभया और कितनेही जे अन्य है तिन्हैं चरणके प्रहार करिके मारता भया ॥ १२ ॥ और कितनेही दैत्योंका नखों करिके पेट फाडता भया और तिसी प्रकार कितनेही दैत्योंका शिर जे है तिन्हे चनपटके प्रहार करिके धडसे अलग कर्त्ता भया ॥ ॥ १३ ॥ फिर वा सिंहने और कितनेही हाथ शिर कटेहुवे करिदिये फिर कंपाये है कांधाके केश जाने ऐसा सिंह अन्य कितनेही दैत्योंका पेट फाड कर उनका पेटसे रुधिर पीतोभयो ॥ १४ ॥ अत्यंत क्रोधवाला ऐसा देवीवाहन जो सिंह है ताने संपूर्ण धूम्रलोचनकी सेना जो है ताहि क्षणभरकरिके नाशको प्राप्त कर दई ॥ १५ ॥

श्रुत्वातमसुरंदेव्यानिहतंधूम्रलोचनं ॥बलंचक्षयितंकृत्स्नंदेवीकेसरिणाततः ॥ १६ ॥ चुकोपदैत्याधिपतिः शुंभःप्रस्फुरिताताधरः॥आज्ञापयामासचतौचंडमुंडौमहासुरौ॥ १७ ॥ हे चंडहेमुंडबलैर्बहुभिः परिवारितौ॥गच्छतंतत्रगत्वाचसासमानीयतांलघु ॥ १८ ॥ केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा वा यदिवः संशयो युधि॥तदाशेषायुधैः सर्वैरसुरैर्विनिहन्यतां ॥ १९ ॥ तस्यां हतायांदुष्टायांसिंहेचाविनिपातिते ॥ शीघ्रमागम्यतांबद्ध्वागृहीत्वातामथांबिकाम् ॥ २० ॥ इतिमार्कण्डेयपुराणेसावर्णिके मन्वंतरेदेवीमाहात्म्ये धूम्रलोचनवधोनामपष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

टीका—ताके अनंतर देवीने भस्म किया ऐसा धूम्रलोचन जो असुर है ताहि सुन करिके और देवीके सिंहने संपूर्ण धूम्रलोचनका सैन्य नष्ट किया ताहि सुन करिके ॥ १६ ॥ क्रोधसे कंपाये है होठ जाने ऐसा दैत्येश्वर शुंभ क्रोध कर्त्ताभया और चंड और मुंड ये जे महाअसुर है तिन्है आज्ञा देते

भयो ॥ १७ ॥ हे चंड हे मुंड तुम बहुतसी सेना करिके सहित जहां वह देवी विराजमान है तहां जावो वहां जाकर उस देवीको शीघ्र ल्यावो ॥ १८ ॥ हे चंड मुंड सेनावो तुम केश खेचकर अथवा रस्सीसे बांधकर वा देवीको मेरे समीप ल्यावो जो युद्ध प्रवृत्त हो जाय तिसके विषे लानेमें संदेह होय तो संपूर्ण शस्त्रोंके प्रहार करिके ता देवीको सब जने मारो ॥ १९ ॥ ताकूं मारके बाद और सिंहको मारकर पृथ्वीमें गिरायेके बाद तुम शीघ्र आवो और जीवती ल्यानेकी सामर्थ्य होय तो वा अंबिकाको रस्सीसे बांध और ग्रहणकर शीघ्र आवो ॥ २० ॥ इति मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वंतरे देवीमाहात्म्ये धूम्रलोचनवधोनाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

ऋषिरुवाच ॥ आज्ञप्तास्तेततोदैत्याश्चंडमुंडपुरोगमाः ॥ चतुरंगबलोपेताययुरभ्युद्यतायुधाः ॥ १ ॥ ददृशुस्तेततो देवीमीपद्धासांव्यवस्थिताम् ॥ सिंहस्योपरिशैलेंद्रशृंगेमहति कांचने ॥ २ ॥ तेदृष्ट्वातांसमादातुमुद्यमंचक्रुरुद्यताः ॥ आकृष्टचापासिधरास्तथान्येतत्समीपगाः ॥ ३ ॥ ततः कोपंचकारोच्चैरंबिकातानरीन्प्रति ॥ कोपेनचास्यावदनंमपीवर्ण मभूत्तदा ॥ ४ ॥ भ्रुकुटीकुटिलात्तस्याल्ललाटफलकाद्द्रुतं ॥ कालीकरालवदनाविनिष्क्रांतासिपाशिनी ॥ ५ ॥

टीका—ताके अनंतर शुंभ करिके आज्ञा दियेहुए और उठाये है शस्त्र जिनोंने ओर चतुरंगिणी सेनाकरिके युक्त और चंड मुंड हैं अगाडी चलने वाले जिनोंके ऐसे जे दैत्य ते भगवतीके पास जाते भये ॥ १ ॥ ताके अनंतर हिमालयकी सुवर्णमय शिखरकेविषे स्थित जो सिंह ताके ऊपर बैठी हुई और मंद है हास्य जाको ऐसी जो देवी ताहि ते दैत्य देखते भये ॥ २ ॥ फिर वे दैत्य करिके ताके अनंतर उद्युक्त हुवे ताहि ग्रहण करनेको उद्यम करतेभये कैसे हे वे दैत्य खैचा है धनुष जिनोंने ऐसे और खड्ग धारण करनेवाले ऐसे और तिसीप्रकार अन्य कितनेही भगवतीके पास जाते भये ॥ ३ ॥ ताके

अनंतर अंबिका तिन शत्रूनके प्रति अत्यंत कोप कर्ती भई तब कोपकरिके याको मुख स्याहीकी समान श्याम होतो भयो ॥ ४ ॥ ता समय अंबिकाकी भृकुटीके चढानेते वाको ऐसो जो ललाटरूपी पटल ताके सकाशते भयंकर है मुख जाको और खड्ग पाश ए है हाथोंकेविषे जाके ऐसी काली नाम कोई अन्य शक्ति निकसती भई अर्थात् प्रकट होती भई ॥ ५ ॥

विचित्रखट्वांगधरानरमालाविभूषणा ॥ द्वीपिचर्मपरीधानाशुष्कमांसातिभैरवा ॥ ६ ॥ अतिविस्तारवदनाजिह्वाललनभीषणा ॥ निमग्नारक्तनयनानादापूरितादिङ्मुखा ॥ ७ ॥ सावेगेनाभिपतिताघातयन्तीमहासुरान् ॥ सैन्ये तत्रसुरारीणामभक्षयततद्बलम् ॥८॥ पार्ष्णिग्राहांकुशग्राहयोधघंटासमन्वितान्॥समादायैकहस्तेनमुखेचिक्षेपवारणान्॥९॥तथैवयोधंतुरगैरथंसारथिनासह॥निक्षिप्यवक्त्रेदशनैश्चर्वयंत्यतिभैरवं १०॥

टीका—कैसी है वह काली अनेक तरहके हैं चित्राम जाके ऐसा खट्वांगको धारण करे ऐसी फिर कैसी है प्रेतोंके मुंडोंकी माला है आभूषण जाके ऐसी फिर कैसी है व्याघ्रके चर्मका है वस्त्र जाके ऐसी फिर कैसी है हाडचर्ममात्र है शरीर जाका ऐसी यातेही अति भयंकर ऐसी ॥ ६ ॥ फिर कैसी है अत्यंत है विस्तार जाको ऐसो है मुख जाको फिर कैसी है जिव्हाके आस्वादन करनेकी जो इच्छा ताकरिकै भयंकर है फिर कैसी है गडे हुये हैं लाल नेत्र जाके फिर कैसी है सिंहनादकरिकै पूर्ण किये हैं दशों दिशावोंके मध्य जाने ॥ ७ ॥ फिर वह काली तिस असुरोंकी सेनाकेविषे वेग करिकै पड़ती हुई महा असुर जे हैं तिन्हैं मारतीहुई असुरोंकी सेना जो है ताहि भक्षण कर्ती भई ॥ ८ ॥ और जे भाला लेकरिकै हाथियोंके पीछे चलनेवाले ऐसे जे हाथियोंके शिक्षक हैं और जे हाथियोंको चलानेवाले महावत हैं और जे हाथियोंके सवार योद्धा हैं और जे हाथियोंके गलेमें बँधी हुई घंटा हैं तिन सब करिकै सहित जे हाथी हैं तिन्हैं एक हाथ करिकै ग्रहण करि काली

मुखकेविषे गेरती भई अर्थात् खाती भई ॥ ९ ॥ और तिस प्रकारही घोडो करिके सहित जे योद्धा तिन्हें और सारथियोंकरिके सहित जे रथ हैं तिन्हें मुखकेविषे गेर करि दातोंकरिके मृत्यु जो है ताहि चर्वण करवाती भई ॥ १० ॥

एकंजग्राहकेशेषुग्रीवायामथचापरम् ॥ पादेनाक्रम्यचैवान्यमुरसान्यमपोथयत् ॥ ११ ॥ तैर्मुक्तानिचशस्त्राणिमहास्त्राणितथासुरैः ॥ मुखेनजग्राहरुषादशनैर्मथितान्यपि ॥ १२ ॥ बलिनांतद्बलंसर्वमसुराणांदुरात्मनां ॥ ममर्दाभक्षयच्चान्यानन्यांश्चाताडयत्तथा ॥ १३ ॥ असिनानिहताःकेचित्केचित्खट्वांगताडिताः ॥ जग्मुर्विनाशमसुरादंताग्राभिहतारणे ॥ १४ ॥ क्षणेनतन्महासैन्यमसुराणांनिपातितं ॥ दृष्ट्वाचंडोभिदुद्राववतांकालीमतिभीषणां ॥ १५ ॥

टीका—ताके अनंतर केशोंकेविषे एक दानव जो है ताहि पकडती भई याके अनंतर गलकेविषे अन्य दानव जो है ताहि पकडतीभई और पैर करिके पकड एक दानव जो है ताहि मारतीभई और पेट पकडिके एक दानव जोहै ताहि मारतीभई ॥ ११ ॥ ता समय चंड मुंडसे आदि लेकर जे दानव है तिन्होंने और तिसीप्रकार अन्य असुरोंने कालीके सन्मुख वाहें ऐसे खड्ग आदि लेकर जे शस्त्र और आग्नेयसे आदि लेकर जे बड़े अस्त्र तिन्हे क्रोधसे मुख करिके काली ग्रहण कर्तीभई और ग्रहण करिके दातोंसे चूर्णितभी कर्तीभई ॥ १२ ॥ फिर दुष्टहै अंतःकरण जिनोका और बलवान् ऐसे जे चंडमुंडसे आदि लेकर असुर तिनकी संपूर्ण सेना जो है ताहि काली नष्ट कर्ती भई ता सेनाकेविषे कितने जे है तिन्हें भक्षण कर्तीभई और कितनेही जेहैं तिन्हें मारतीभई ॥ १३ ॥ फिर उस रणमें कितनेही असुर कालीने खड्गके प्रहारकरिके मारे हुवे नाशको प्राप्त होतेभये और कितनेही खाटके पाये करिके ताडन कियेहुये विनाशको प्राप्त होतभये और तिसी प्रकार दंतके अग्रभाग करिके ताडन कियेहुये विनाशको प्राप्त होतेभये ॥ १४ ॥ फिर

क्षणभर करिकै कालीने पृथ्वीमें गिराई ऐसी जो वह असुरोंकी महासेना है ताहि देखकर अतिभयंकर जो काली है ताहि युद्ध करनेको चंड सन्मुख दौडतो भयो ॥ १५ ॥

शरवर्षैर्महाभीमैर्भीमाक्षींतांमहासुरः ॥ छादयामासचक्रैश्चमुंडःक्षिप्तैःसहस्रशः ॥ १६ ॥ तानिचकाण्यनेकानिविशमानानितन्मुखं ॥ बभुर्यथार्कबिंबानिसुबहूनिघनोदरम् ॥ १७ ॥ ततोजहासातिरुषाभीमंभैरवनादिनी ॥ कालीकरालवक्त्रांतर्दुर्दर्शदशनोज्ज्वला ॥ १८ ॥ उत्थायचमहासिंहंदेवीचंडमधावत ॥ गृहीत्वाचास्यकेशेषुशिरस्तेनासिनाच्छिनत् ॥ ॥ १९ ॥ छिन्नेशिरसिदैत्येन्द्रश्चक्रेनादंसुभैरवं ॥ तेननादेनमहतात्रासितंभुवनत्रयं ॥ २० ॥

टीका—ताके अनंतर भयंकरहैं नेत्र जाके ऐसी जो कालीहै ताहि बाणोंकी वर्षा करिकै और मस्तक काटेहैं जिनो करिकै ऐसे जे हजार हजार चक्रहैं तिनो करिकै चंड आच्छादित कर्त्तोभयो ॥ १६ ॥ फिर चंड करिकै चलायेगये जे अनेकचक्र ते कालीका मुख जोहै ताहि प्रवेश हुये शोभायमान होतेभये कैसे कि जैसे दरसातकेविषे बहुत सूर्यके बिंब मेघका उदर जो है ताहि प्रवेश होतेहुवे शोभायमान होतेहैं ॥ १७ ॥ फिर रणके उत्सवतें काली अत्यंत क्रोध करिकै भयंकर जैसे होय तैसे हँसती भई काली कैसी है भयंकर शब्द करे ऐसी फिर कैसीहै भयंकर जो मुख ताकेविषे दुःख करिकै देखीजाय ऐसी जो दाढ तिन करिकै उज्ज्वल अर्थात् श्वेतवत्प्रतीयमान ऐसी ॥ १८ ॥ ताके अनंतर काली महाखड्ग उठायकर रोष करिकै चंडके सन्मुख दौडती भई फिर चंडके केश खैंच करि तिस महाखड्गसे शिर काटतीभई ॥ १९ ॥ फिर देवी करिकै शिर कटेसंते तासमयही दैत्येंद्र चंड महाभयंकर शब्द कर्त्तोभयो तिस बडे भयंकर शब्द करिकै तीनों लोक त्रासको प्राप्तकिये ॥ २० ॥

अथमुंडोभ्यधावत्तांदृष्ट्वाचंडंनिपातितं ॥ तमप्यपातयद्भूमौ
खड्गाभिहतंरुषा ॥ २१ ॥ हतशेषंततः सैन्यंदृष्ट्वाचंडं
निपातितं ॥ मुंडंचसुमहावीर्यंदिशोभेजेभयातुरम् ॥ २२ ॥
शिरश्चंडस्यकालीसागृहीत्वामुण्डमेवच॥ प्राहप्रचंडाट्टहासमि
श्रमभ्येत्यचंडिकां ॥ २३ ॥ मयातवात्रोपहृतौचण्डमुंडौ
महापशू ॥ युद्धयज्ञेस्वयंशुंभंनिशुंभंचहनिष्यसि ॥ २४ ॥
ऋषिरुवाच॥ तावानीतौततोदृष्ट्वाचंडमुंडौमहासुरौ ॥ उवाच
कालींकल्याणी ललितंचंडिकावचः॥ २५ ॥

टीका–याके अनंतर कालीने संग्रामकेविषे गिराया ऐसा जो चण्डहै ताहि देखकरिके मुंड कालीके सन्मुख दौडतो भयो फिर खड्ग प्रहार करिके ताडित ऐसा जो मुंडहै ताहिभी रोष करिके पृथ्वीमें गिरातीभई ॥ २१ ॥ फिर मरेहुवे दानवोंसे बाकी रही ऐसी जो दानवोंकी सेनाहै सो देवीने संग्रामके विषे गिराया ऐसा जो चंडहै ताहि और बडापराक्रमी मुंड जोहै ताहि देखकर भयकरिके विह्वलहुई रणभूमिके सकाशसे निकस करिके दौडजातीभई ॥ २२ ॥ ताके अनंतर काली चंडका शिर जोहै ताहि और मुंडका शिर जोहै ताहि ग्रहण करिके और चंडिका जोहै ताहि प्राप्त होकर प्रगल्भ जो अधिक हास ताकरिके मिलाहुवा जैसे तैसे बोलतीभई ॥ २३ ॥ हे चंडिके इस युद्धरूपी यज्ञकेविषे चंड और मुंड ये महापशू मैं ने तुह्मारे भेटकियेहैं और देवगणकी प्रीतिके अर्थ शुंभ और निशुंभ जो दो पशूहैं तिन्हे तुमही मारोगी ॥ २४ ॥ तब ऋषि बोले ताके अनंतर कालीकरिके लायेहुये जे चंड मुंड महाअसुर हैं तिन्हे चंडिका देखकर काली जोहै ताहि मनोहर वचन बोलती भई ॥ २५ ॥

देव्युवाच ॥ यस्माच्चंडंचमुंडंचगृहीत्वात्वमुपागता ॥ चामुं-
डेतिततोलोकेख्यातादेवीभविष्यसि ॥ २६ ॥ इति मार्कण्डे-
यपुराणेसावर्णिकेमन्वंतरे देवीमाहात्म्येचण्डमुण्डवधोनाम
सप्तमोध्यायः ॥ ७ ॥

टीका–देवी बोली हे काली जिसकारणते चंड और मुंड जोहैं ताहि ग्रहण करिकै तुम मैं जोहूं ताहि प्राप्तहुई हो तिसकारणते लोककेविषे तुम चामुंडा इस नाम करिकै विख्यात देवी होगी ॥ २६ ॥ इति मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिकेमन्वंतरे देवीमाहात्म्ये चंडमुंडवधोनामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

ऋषिरुवाच॥चंडेचनिहतेदैत्येमुण्डेचाविनिपातिते ॥ बहुलेषु चसैन्येषुक्षयितेष्वसुरेश्वरः ॥ १ ॥ ततः कोपपराधीनचेताः शुंभः प्रतापवान्॥उद्योगंसर्वसैन्यानांदैत्यानामादिदेशह ॥२॥ अद्यसर्वबलैर्दैत्याःषडशीतिरुदायुधाः॥ कंबूनांचतुराशीतिर्नि र्यान्तुस्वबलैर्वृताः ॥ ३ ॥ कोटिवीर्याणिपंचाशदसुराणांकुला- निवै ॥ शतंकुलानिधूम्राणांनिर्गच्छन्तुममाज्ञया ॥ ४ ॥ कालकादौर्हृदामौर्याः कालिकेयास्तथासुराः ॥ युद्धायसज्जा निर्यांतुआज्ञया त्वरितामम ॥ ५ ॥

टीका–तब ऋषि बोले कालीकरिकै चंड मारेगये संते और तिसी प्रकार मुंड मार पृथ्वीमें गिरायेसंते और ताकरिकेही असंख्यात सेना नष्टहुये संते ताके अनंतर कोप करिके परवशहै चित्त जाको और प्रतापी ऐसो असुरोंको ईश्वर जो शुंभासुर सो दैत्योंकी संपूर्ण सेना जेहै तिनको चंडिकाके पास जाने रूपी उद्योग आज्ञा करतो भयो ॥ १ ॥ २ ॥ आज मेरी आज्ञा करिकै छयासी जे तुम प्रधान दैत्य हो ते उठायेहै शस्त्र जिन्होंने ऐसे संपूर्ण अपनी चतुरंगिनी सेना जे हैं तिन करिके युक्त हुवे देवीके साथ युद्ध करनेको जावो और कंबुनाम जे दैत्यहैं तिनके चौराशी समूह भेद जे हैं ते अपनी सेना करिकै युक्तहुवे देवीके साथ युद्ध करनेको जावो ॥ ३ ॥ और कोटिवीर्य नाम जे असुरोंके पंचाशकुल ते और धूम्र नाम असुर जे तिनके जे सौकुल ते मेरी आज्ञा करिकै देवीके साथ युद्ध करनेको जावें ॥४॥ और कालक नामा जे असुर और दौर्हृद नामा जे असुर और मौर्यनामा जे असुर और तिसीप्रकार कालकेयनामा जे असुर ते संपूर्ण मेरी आज्ञा करिके शीघ्र तैयार होतेहुये देवीके साथ युद्ध करनेको जावो ॥ ५ ॥

इत्याज्ञाप्यासुरपतिःशुम्भोभैरवशासनः ॥ निर्जगाममहासै-
न्यसहस्रैर्बहुभिर्वृतः ॥ ६ ॥ आयातंचण्डिकादृष्ट्वातत्सैन्यम-
तिभीषणम् ॥ ज्यास्वनैःपूरयामासधरणीगगनांतरम् ॥ ७ ॥
सचसिंहोमहानादमतीवकृतवान्नृप ॥ घण्टास्वनेनतन्नाद-
मंबिकाचाप्यबृंहयत् ॥ ८ ॥ धनुर्ज्यासिंहघण्टानांनादापूरित-
दिङ्मुखा ॥ निनादैर्भीषणैःकालीजिग्येविस्तारितानना ॥
॥ ९ ॥ तंनिनादमुपश्रुत्यदैत्यसैन्यैश्चतुर्दिशम् ॥ देवीसिंह
स्तथाकालीशरोषैःपरिवारिताः ॥ १० ॥

टीका—फिर भयंकर है शिक्षा जाकी ऐसा असुरपति शुंभ इस प्रकार असुर जे हैं तिन्हें आज्ञा देकर बड़ी है सेना हजारों जिनकेविषे ऐसे बहुत दानवनकरिकै युक्तहुवा देवीके साथ युद्ध करनेको जाता भया ॥ ६ ॥ ताके अनंतर चंडिका आताहुवा जो शुंभ है ताहि और बाकी जो भयंकर सेना है ताहि देखकर धनुषको प्रत्यंचाके टंकार शब्दन करिकै आकाश पृथ्वीका मध्य जो है ताहि पूर्ण करतीभई ॥ ७ ॥ ताके अनंतर हे नृप वह भगवतीका सिंहभी बडा शब्द कर्ता भया फिर अं-बिका घंटाके शब्दकरिकै सिंहके शब्दको बढाती भई ॥ ८ ॥ फिर धनुषकी प्रत्यंचाके और सिंह और घंटा इन शब्दोंकरिकै पूर्ण किये हैं दिशावोंके मुख जानें और फाडा है मुख जाने ऐसी देवी तिन दैत्यनको जीतती भई॥९॥ ताके अनंतर धनुषकी प्रत्यचा सिंह घंटा इनका चारों दिशामें व्याप्त ऐसा शब्द सुनके दैत्यसेनानें देवी और सिंह और तिसी प्रकार काली ये सब बा-णोंके समूह करिकै रोक दिये ॥ १० ॥

एतस्मिन्नंतरेभूपविनाशायसुरद्विषाम् ॥ भवायामरसिंहानाम-
तिवीर्यबलान्विताः ॥ ११ ॥ ब्रह्मेशगुहविष्णूनांतथेंद्रस्य
च शक्तयः॥ शरीरेभ्योविनिष्क्रम्यतद्रूपैश्चण्डिकांययुः॥१२॥
यस्यदेवस्ययद्रूपंयथाभूषणवाहनम् ॥ तद्वदेवहितच्छक्ति-

रसुरान्योद्धुमाययौ ॥ १३ ॥ हंसयुक्तविमानस्थासाक्षसूत्र-
कमण्डलुः॥ आयाताब्रह्मणःशक्तिर्ब्रह्माणीसाभिधीयते॥१४॥
माहेश्वरीवृषारूढात्रिशूलवरधारिणी ॥ महाहिवलयाप्राप्ताच
न्द्ररेखाविभूषणा ॥ १५ ॥

टीका—और इस देवी दानवोंके संग्रामके होतेसंते मध्यमें दानवोंके विनाशके अर्थ और देवोंकी वृद्धिके अर्थ ब्रह्मा शिव स्वामी कार्तिक विष्णु तथा इंद्र इन सबकी सामर्थ्यरूपी जे शक्ति हैं ते इनके शरीरोंते निकसकर अपने अपने देवोके समान रूपों करिकै चण्डिकाके समीप आतीभई ॥ ११॥ १२॥ फिर जिस देवका जैसा रूप और जेसा भूषण और जैसा वाहन तिसी प्रकार तिस देवकी असुरोंते रणमें युद्ध करनेको देवीके पास आती भई ॥१३॥हंसयुक्त विमानमें बैठी हुई और स्फटिक मणियोंका माला पहरे हुये और कमंडलु लिये हुये ब्रह्माकी शक्ति युद्ध करनेको आती भई सो ब्रह्माणी इस नाम करिके कही जाती है ॥ १४ ॥ और माहेश्वरी शक्ति वृषभके ऊपर बैठीहुई और त्रिशूलको धारण किये हुवे और बडे सर्पोंका है कडा जाके अर्द्धचंद्र है मस्तकमें आभूषण जाके ऐसी असुरोंके साथ युद्ध करनेको भगवतीके पास आती भई ॥ १५ ॥

कौमारीशक्तिहस्ताच मयूरवरवाहना ॥योद्धुमभ्याययौदैत्या
नंबिकागुहरूपिणी ॥ १६ ॥ तथैववैष्णवीशक्तिर्गरुडोपरि-
संस्थिता ॥ शंखचक्रगदाशार्ङ्गखड्गहस्ताभ्युपाययौ ॥ १७ ॥
यज्ञवाराहमतुलंरूपंयाबिभ्रतोहरेः ॥ शक्तिःसाप्याययौतत्रवा-
राहींबिभ्रतीतनुम्॥१८॥नारसिंहीनृसिंहस्यबिभ्रतीसदृशंवपुः।
प्राप्तातत्रसटाक्षेपक्षिप्तनक्षत्रसंहतिः ॥ १९ ॥ वज्रहस्तातथैवैंद्री
गजराजोपरिस्थिता॥ प्राप्तासहस्रनयनायथाशक्रस्तथैवसा॥२०॥

टीका—फिर शास्य है हाथमें जाके और श्रेष्ठ मयूर है वाहन जाके और स्वामीकार्तिकके समानहै रूप जाके ऐसी कौमारी अंबिका दैत्योंके साथ युद्ध

करनेको आतीभई ॥ १६ ॥ और तिसीप्रकार वैष्णवीशक्ति गरुड़के ऊपर बैठीहुई और शंख चक्र गदा शार्ङ्ग धनुप खड्ग ये शस्त्रहैं हाथोंमे जाके ऐसी विष्णुकी समान वैष्णवीशक्ति उस रणमें असुरोंके साथ युद्ध करनेको आतीभई ॥ १७ ॥ फिर ताके अनंतर उपमा करिके रहित विष्णुका वराहरूप जो है ताहि धारण कर्त्तीहुई जो प्रकट होतीभई सो शक्तिभी वराहका शरीर धारण कर्त्तीहुई रणमें आतीभई ॥ १८॥ ताके अनंतर कांधेके केशरोंका जहां तहां ताडन करिकै दूर करेहैं नक्षत्रोंके समूह जाने ऐसी नृसिंहके समान शरीर धारण कर्त्तीहुई नारसिंही शक्ति असुरोंते रणमें युद्ध करनेको आतीभई ॥ १९ ॥ फिर तिसीप्रकार वज्रहै हाथमें जाके और ऐरावत हाथीके ऊपर बैठीहुई और हजारहैं नेत्र जाके ऐसी ऐंद्री शक्ति रणमें प्राप्त होतीभई जैसा इंद्र तैसीही वह ॥ २० ॥

ततःपरिवृतस्ताभिरीशानोदेवशक्तिभिः ॥ हन्यंतामसुराः शीघ्रंममप्रीत्याहचंडिकाम्॥२१॥ ततोदेवीशरीरात्तुविनिष्क्रांतातिभीपणा॥चंडिकाशक्तिरत्युग्राशिवाशतनिनादिनी ॥२२ साचाहधूम्रजटिलमीशानमपराजिता ॥ दूतत्वंगच्छभगवन्पार्श्वंशुंभनिशुंभयोः ॥ २३ ॥ ब्रूहिशुंभंनिशुंभंचदानवावातिगर्वितौ ॥ येचान्येदानवास्तत्रयुद्धायसमुपस्थिताः॥ २४ ॥ त्रैलोक्यमिंद्रोलभतांदेवाःसंतुहविर्भुजः ॥ यूयंप्रयातपातालं यदिजीवितुमिच्छथ ॥ २५ ॥

टीका—ताके अनंतर तिन देव शक्तियों करिकै युक्त महेश मेरी प्रीति करिकै तुम असुरोंको जलदी मारो इस प्रकार चंडिकाको कहताभया ॥ २१ ॥ फिर ताके अनंतर चंडिका देवीके शरीरतेभी अत्यंत भयंकर और अत्यंत उग्र स्वभाववाली ओर शेकडों गीदडियोंकरिकै सहित शब्द कर्त्तीहुई फिर चंडिकाशक्ति निकसतीभई ॥ २२ ॥ फिर शत्रुवों करिकै अपराजित वह भगवती धूम्र जटावाला शिव जोहै ताहि बोलतीभई

कि हे दूत तुम शुंभ निशुंभके पास जावो ॥२३॥ तीन भुवनको जीतकर अत्यंत गर्वयुक्त जे शुंभ निशुंभ दानव हैं तिन्हें और जे उनकी तरफ संग्राममें शूरवीरपनाका गर्व करिकै युद्ध करनेकेवास्ते तैयारहैं तिन्हें तुम यह हितकारी वचन कहो ॥ २४ ॥ इंद्र त्रिलोकी जोहै ताहि प्राप्तहो और इंद्रादिक देव यज्ञोके विषे यथाभाग हविष जेहैं तिन्हैं भोजन करनेवालेहो और हे शुंभादिक दैत्यो तुम सबही जो जीनेको चाहतेहो तो पाताल जावो ॥ २५ ॥

बलावलेपादथचेद्भवंतोयुद्धकांक्षिणः ॥ तदागच्छत तृप्यंतुमच्छिवाःपिशितेनवः ॥ २६ ॥ यतोनियुक्तोदौत्येनतयादेव्या शिवःस्वयम् ॥ शिवदूतीतिलोकेस्मिंस्ततः साख्यातिमागता ॥ २७ ॥ तेपिश्रुत्वावचोदेव्याःशर्वाख्यातंमहासुराः ॥ अमर्षापूरिताजग्मुर्यत्रकात्यायनीस्थिता ॥ २८ ॥ ततःप्रथममेवाग्रेशरशक्त्यृष्टिवृष्टिभिः ॥ ववर्षुरुद्धतामर्षास्तांदेवीममरारयः ॥ २९॥ साचतान्प्रहितान्बाणाञ्छूलशक्तिपरश्वधान्॥ चिच्छेदलीलयाध्मातधनुर्मुक्तैर्महेषुभिः ॥ ३० ॥

टीका—और जो बलके गर्वते तुम युद्धकी इच्छा कर्तेहो तो मेरे साथ युद्ध करने आवो फिर मेरा परिवार जे शृगालहै ते तुह्मारे मांस करिकै तृप्तहो ॥ २६ ॥ जिसकारण ते देवीने दूतभाव करिकै शिव भेजाथा तिसकारणते इस लोकके विषे वह देवी शिवदूती इसनामको प्राप्तभई ॥ २७ ॥ फिर शुंभादिक महाअसुरभी शिव करिकै कहा ऐसा देवीका संदेश सुनकै क्रोध करिके भरेहुवे जहां कात्यायनी भगवती स्थित थी तहां आतेभये ॥ २८ ॥ ताके अनंतर देवताके शत्रु और बढाहै क्रोध जिनोके ऐसे शुंभादिक दानव पहिलेही देवीके वक्षस्थलके विषे बाणोंके तथा पोलंडी लाठियोंके और खड्गके प्रहारों करिके देवीको आच्छादित कर्तेभये ॥ २९ ॥ फिर ताके अनंतर शुंभादिक असुरोंने चलाये ऐसे जे बाण और त्रिशूल और शक्ति और कुहाडे और जे संपूर्ण शस्त्र तिन्हें चंडिका बिन श्रम करिकै प्रत्यंचाकी

टंकार करिकै शब्दायमान जो धनुष तासे छोडेहुवे तीखे बाण तिन करिकै काटतीभई ॥ ३० ॥

तस्याग्रतस्तथाकालीशूलपातविदारितान् ॥ खट्वांगपोथितां
श्चारीन्कुर्वतीव्यचरत्तदा ॥ ३१ ॥ कमंडलुजलाक्षेपहतवीर्या
न्हतौजसः ॥ ब्रह्माणीचाऽकरोच्छत्रून्येनयेनस्मधावति॥३२॥
माहेश्वरीत्रिशूलेनतथाचक्रेणवैष्णवी ॥ दैत्याञ्जघानकौमारी
तथाशक्त्यातिकोपना ॥ ३३ ॥ ऐंद्रीकुलिशपातेनशतशोदै-
त्यदानवाः ॥ पेतुर्विदारिताःपृथ्व्यांरुधिरौघप्रवर्षिणः ॥३४॥
॥ तुंडप्रहारविध्वस्तादंष्ट्राग्रक्षतवक्षसः ॥ वाराहमूर्त्यान्यपतं
श्चक्रेणचविदारिताः ॥ ३५ ॥

टीका—तब संग्रामकालके विषे चंडिकाके आगे काली चंडिकाकी तरह त्रिशूलके प्रहारों करिकै विदारित और खट्वांगके प्रहार करिके असुरोंको नष्ट कर्त्ती हुई रणमें विचरती भई ॥ ३१ ॥ और ब्रह्माणी आदि शक्ति जिस जिस मार्ग करिकै असुरोंको साथ युद्ध करनेको जाती भई तहां तहां मार्गके विषे कमंडलुके जलका प्रोक्षण करिकै नष्ट पराक्रम और नष्टतेज दैत्योंको कर्त्ती भई ॥ ३२ ॥ फिर उस चंडिकाके आगे माहेश्वरी त्रिशूल करिके वैष्णवी चक्र करिके और अति क्रोधयुक्त कौमारी शांग करिकै दैत्यनको मारती भई ॥ ३३ ॥ और ऐंद्रीशक्तिके वज्रके प्रहार करिकै विदारित रुधिर के समूहकी वर्षा कर्त्ते हुवे सैकडों दैत्य दानव पृथ्वीमें पडते भये ॥ ३४ ॥ और ता संग्रामके विषे वाराहमूर्ति शक्तिके मुखका प्रहार करिकै और उसकी डाढोंकी लफनियो करिकै विदीर्ण है छाती जिनोकी और चक्रके प्रहार करिकै विदारित ऐसे विध्वस्त हुवे दानव पृथ्वीमें पडते भये ॥ ३५ ॥

नखैर्विदारितांश्चान्यान्भक्षयंतीमहासुरान् ॥ नारसिंहीचचारा
जौनादापूर्णदिगंतरा ॥ ३६ ॥ चंडाट्टहासैरसुराः शिवदूत्यभि
दूषिताः ॥ पेतुःपृथिव्यांपतितांस्तांश्चखादाथसातदा ॥३७॥

इतिमातृगणंक्रुद्धंमर्दयंतंमहासुरान् ॥ दृष्ट्वाभ्युपायैर्विविधैर्नेशुर्देवारिसैनिकाः ॥ ३८ ॥ पलायनपरान्दृष्ट्वादैत्यान्मातृगणार्दितान् ॥ योद्धुमभ्याययौक्रुद्धोरक्तबीजोमहासुरः ॥ ३९ ॥ रक्तबिंदुर्यदाभूमौपतत्यस्यशरीरतः ॥ समुत्पततिमेदिन्यां तत्प्रमाणोमहासुरः ॥ ४० ॥

टीका—और सिंहनाद करिकै पूर्ण कियेहै दिशावोंके मध्य जाने ऐसी नारसिंही शक्ति नखों करिकै विदारित जे दानव तिन्हे और अन्य जे महा असुर तिन्हैं भक्षण कर्त्ती हुई संग्राममें विचरती भई ॥ ३६ ॥ फिर ता संग्रामके विषे शिवदूती शक्तिने भयंकर अट्टहासन करिकै मूर्छाको प्राप्त किये ऐसे जे दैत्य ते पृथ्वीमें पडतेभये ताके अनंतर पृथ्वीमें पडेहुवे जे दैत्यहैं तिन्हैं वह शिवदूती भक्षण कर्त्तीभई ॥ ३७ ॥ अनेक उपायों करिकै असुरोंको नष्ट कर्त्ताहुवा ऐसा क्रोधयुक्त हुवा ब्रह्माणी आदि शक्तियोंका जो समूह ताहि देखकर असुर डरपेहुवे भागि जातेभये ॥ ३८ ॥ और ब्रह्माणीते आदि ले मातृगण करिके पीडित और इसकारण तेही डरपे हुवे ऐसे जे दैत्य तिन्हैं देख कर क्रोधयुक्त हुवा महाअसुर रक्तबीज देवीके साथ युद्ध करनेको आता भया ॥ ३९ ॥ फिर ता रणमें जब रक्तबीजके शरीरते रुधिरकी बिंदु पृथ्वीमें पडे तब पृथ्वीमें रक्तबीजके समान महाअसुर उत्पन्न होजाय ॥ ४० ॥

युयुधेसगदापाणिरिंद्रशक्त्यामहासुरः॥ततश्चैंद्रीस्ववज्रेणरक्तबीजमताडयत् ॥४१॥ कुलिशेनाहतस्याशुबहुसुस्रावशोणितं॥ समुत्तस्थुस्ततोयोधास्तद्रूपास्तत्पराक्रमाः ॥ ४२ ॥ यावंतः पतितास्तस्यशरीराद्रक्तबिंदवः ॥ तावंतःपुरुषाजातास्तद्वीर्यबलविक्रमाः ॥ ४३ ॥ तेचापियुयुधुस्तत्रपुरुषारक्तसंभवाः॥ समंमातृभिरत्युग्रंशस्त्रपातातिभीषणम् ॥४४॥ पुनश्चवज्रपातेनक्षतमस्यशिरोयदा॥ववाहरक्तंपुरुषास्ततोजातास्सहस्रशः॥४५

टीका–फिर वह महाअसुर रक्तबीज गदा हाथमें लिये हुये ऐंद्रीशक्तिके साथ युद्ध कर्त्ताभया ताके अनंतर ऐंद्रीशक्ति अपने वज्र करिकै रक्तबीजको ताडन कर्त्तीभई ॥ ४१ ॥ ता समय ऐंद्रीका वज्रके प्रहार करिकै ताडित जो रक्तबीज ताके शरीरते बहुत रुधिर पृथ्वीमें पडताभया ता रुधिरते रक्तबीजके समान रूपवाले और समान पराक्रमवाले कई योधा उत्पन्न होतेभये ४२ फिर जितना रुधिरका बिंदु रक्तबीजका शरीरते पड़ा उतनाही संख्या रक्तबीजके समान शूर वीर और पराक्रमी दैत्य उत्पन्न होतेभये ॥ ४३ ॥ फिर वे रक्तबीजके रुधिरते उत्पन्नहुवे जे दैत्यहैं वेभी उस रणके विषे ब्रह्माणीते आदि ले जो मातृगण है ताके साथ दारुण जैसे होय तैसे और शस्त्रोंके प्रहार करिकै भयंकर जैसे होय तैसे युद्ध कर्त्तेभये ॥ ४४ ॥ फिर ऐंद्रीशक्तिने किया जो वज्रप्रहार ता करिके इस रक्तबीजका शिर विदीर्ण होताभया फिर उस शिरते रुधिर बहता भया फिर वा रुधिरके प्रवाहते हजारों दैत्य उत्पन्न होते भये ॥ ४५ ॥

वैष्णवीसमरेचैनंचक्रेणाभिजघानह ॥ गदयाताडयामासऐंद्रीत मसुरेश्वरं ॥ ४६ ॥ वैष्णवीचक्रभिन्नस्यरुधिरस्रावसंभवैः ॥ सहस्रशोजगद्व्याप्तंतत्प्रमाणैर्महासुरैः ॥ ४७ ॥ शक्त्याजघानकौमारीवाराहीचतथासिना ॥ माहेश्वरीत्रिशूलेनरक्तबीजंमहासुरम् ॥४८॥ सचापिगदयादैत्यःसर्वाएवाहनत्पृथक् ॥मातृःकोपसमाविष्टोरक्तबीजोमहासुरः॥४९॥तस्याहतस्यबहुधाशक्तिशूलादिभिर्भुवि ॥ पपातयोवैरक्तौघस्तेनासञ्छतशोसुराः॥५०

टीका–फिर उस रणमें वैष्णवीशक्ति रक्तबीजको चक्रके प्रहार करिके मारतीभई और पीछे यही असुर ऐंद्रीशक्तिके साथ युद्ध करनेको प्राप्तभया जब वैष्णवीशक्ति इस असुरको गदाके प्रहार करिके ताड़न कर्त्तीभई॥४६॥ फिर वैष्णवीशक्तिके चक्रप्रहार करिकै विदारित जो रक्तबीज तिसके रुधिरका प्रवाहते उत्पन्न भये जे रक्तबीजके समानाकार हजारों महासुर तिन क-

रिके जगत् व्याप्त होताभया ॥ ४७ ॥ फिर उस संग्रामके विषे कौमारीशक्ति रक्तबीज जो है ताहि शांगके प्रहार करिके और तिसी प्रकार वाराहीशक्ति खड्गके प्रहार करिके और माहेश्वरी त्रिशूलके प्रहार करिकै ताड़न कर्त्ती भई ॥ ४८ ॥ फिर वह महाअसुर रक्तबीज क्रोधयुक्त हुवा ब्रह्माणीते आदि लेकर जे संपूर्ण शक्ति हैं तिन्हें गदाके प्रहार करिके पृथक् पृथक् ताड़न कर्त्ताभया ॥ ४९ ॥ फिर संग्रामके विषे शक्ति त्रिशूल इन आदि शस्त्रोंके प्रहार करिके ताड़ित हुवा जो रक्तबीज ताके शरीरते निकसा रुधिरका प्रवाह जो पृथ्वीमें पडता भया ता करिके कोटिन दैत्य उत्पन्न होतेभये ॥ ५० ॥

तैश्चासुरासृक्संभूतैरसुरैस्सकलंजगत् ॥ व्याप्तमासीत्ततोदेवा भयमाजग्मुरुत्तमम् ॥ ५१ ॥ तान्विषण्णान्सुरान्दृष्ट्वाचंडिका प्राहसत्वरा ॥ उवाचकालीचामुंडेविस्तीर्णंवदनंकुरु ॥ ५२ ॥ मच्छस्त्रपातसंभूतान्रक्तबिंदून्महासुरान् ॥ रक्तबीजात्प्रतीच्छ त्वंवक्त्रेणानेनवेगिना ॥ ५३ ॥ भक्षयंतीचररणेतदुत्पन्नान्म हासुरान् ॥ एवमेपक्षयंदैत्यःक्षीणरक्तोगमिष्यति ॥ ५४ ॥ भक्ष्यमाणास्त्वयाचोग्रानचोत्पत्स्यंतिचापरे ॥ ऋषिरुवाच ॥ इत्युक्त्वातांततोदेवीशूलेनाभिजघानतम् ॥ मुखेनकालीजगृ हेरक्तबीजस्यशोणितम् ॥ ५५ ॥

टीका–फिर ताके अनंतर रक्तबीजके रुधिरते उत्पन्न भये जे दैत्य तिन करिकै सम्पूर्ण जगत् व्याप्त होताभया तिस कारण ते देवता अधिक भय जो हैं ताहि प्राप्त होतेभये ॥ ५१ ॥ फिर चंडिका भयभीत जे देव हैं तिन्हें देख कर बोली हे देवो तुम मत डरपो फिर कालीको बोलतीभई कि हे चामुंडे तुम अपना मुख विस्तृत करो ॥ ५२ ॥ फिर बोली तुम अत्यंत वेगवाले विस्तृत मुख करिके मेरे शस्त्रोंके प्रहारों करिके उत्पन्न जे रुधिरके बिंदु तिन्हें रक्त-बीजके शरीरते पीवो नहीं तो रक्तबिंदु पृथ्वीमें पडताही अन्य असुरनको उत्पन्न करदेगा ॥ ५३ ॥ और चामुंडे रक्तबीजका रुधिरते उत्पन्न भये जे

महादैत्य तिन्हे तुम भक्षण कर्त्तीहुई संग्राममें विचरो इसप्रकार यह दैत्य क्षीण रक्त हुवा नाशको प्राप्त होजायगा और जे रक्तबीजके रुधिरते उत्पन्न भये भयंकर दैत्य हैं ते तुह्मारे करिकै भक्षण कियेहुये नहीं उत्पन्न होंयगे ॥५४॥ तब ऋषि बोले कि हे सुरथराजन् इसप्रकारसे चंडिका कालीके प्रति कह कर त्रिशूलके प्रहार करिकै तिस रक्तबीजको ताडन कर्त्तीभई फिर रक्तबीजके रुधिरको काली मुख करिकै पीतीभई ॥ ५५ ॥

ततोसावाजघानाथगदयातत्रचंडिकाम् ॥ नचास्यावेदनांचक्रे गदापातोल्पिकामपि ॥५६॥ तस्याहतस्यदेहात्तुबहुसुस्राव- शोणितम् ॥ यतस्ततस्तद्वक्त्रेणचामुंडासंप्रतीच्छति ॥५७॥ मुखेसमुद्गतायेस्यारक्तपातान्महासुराः ॥ तांश्चखादाथचामुं- डापपौतस्यचशोणितम् ॥ ५८ ॥ देवीशूलेनचक्रेणबाणैर सिभिरिष्टिभिः ॥ जघानरक्तबीजंतंचामुंडापीतशोणितम् ॥ ॥५९॥सपपातमहीपृष्ठेशस्त्रसंहतितोहतः॥ नीरक्तश्चमहीपाल रक्तबीजोमहासुरः॥ ६० ॥

टीका—ताके अनंतर तिस संग्राममें यह रक्तबीज दैत्य गदाके प्रहार करिके चंडिका जो है ताहि ताडन कर्त्ताभया चंडिका परमानंदस्वरूप है याते ताको गदाका प्रहार कुछभी वेदना नहीं कर्त्ताभया ॥ ५६ ॥ फिर चंडिकाके शस्त्रों करिकै ताडित जो रक्तबीज ताके शरीरते जो बहुत रुधिर झरताभया सो चामुंडा अपना मुख करिके पीतीभई ॥ ५७ ॥ फिर कालीके मुखमें रक्तबीजका रुधिर पडनेते उत्पन्न भये जे महाअसुर तिन्हें चामुंडा काली भक्षण कर्त्तीभई और रक्तबीजका रुधिर पीतीभई॥५८॥फिर चामुंडाने पियोहै रुधिर जाको ऐसो जो रक्तबीज ताहि चंडिका त्रिशूलके प्रहार करिकै और चक्रके प्रहार करिकै और बाणोंके प्रहार करिकै और खड्गोंके प्रहार करिकै और रिष्टियोंके प्रहार करिकै ताडन कर्त्तीभई॥५९॥फिर हे राजन् शस्त्रोंकै समूहते ताडित और रुधिररहित हुवा रक्तबीज मराहुवा पृथ्वीमें पडता भया ॥६०॥

ततस्तेहर्षमतुलमवापुस्त्रिदशानृप॥ तेषांमातृगणोमत्तोननर्तो
सृङ्मदोद्धतः॥६१॥इतिश्रीमार्कण्डेयपुराणेसावर्णिकेमन्वंतरे
देवीमाहात्म्येरक्तबीजवधोनामाष्टमोध्यायः ॥ ८ ॥

टीका—हे सुरथ फिर रक्त बीजके वधके अनंतर संपूर्ण देव अपरिमित हर्षको प्राप्त होतेभये और रक्तबीजसे आदिले दैत्योंको रुधिर पानते मदोत्कट जो ब्रह्माणी ते आदिले मातृगणहैं सो मदोन्मत्त हुवा नाचताभया ॥६१॥ इति श्रीमार्कंडेयपुराणेसावर्णिकेमन्वंतरे देवीमाहात्म्येभाषाटीकायांरक्तबीजवधोनामअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

॥ राजोवाच ॥ विचित्रमिदमाख्यातंभगवन्भवताममं ॥
देव्याश्चरितमाहात्म्यंरक्तबीजवधाश्रितम् ॥ १ ॥ भूयश्चेच्छा-
च्छाम्यहंश्रोतुंरक्तबीजेनिपातिते ॥ चकारशुंभोयत्कर्मनिशुं
भश्चातिकोपनः ॥ २ ॥ ऋषिरुवाच ॥ चकारकोपमतुलंरक्त
बीजेनिपातिते ॥ शुंभासुरोनिशुंभश्चहतेष्वन्येषुचाहवे ॥ ३ ॥
हन्यमानंमहासैन्यंविलोक्यामर्षमुद्वहन् ॥ अभ्यधावन्निशुंभो-
थमुख्ययासुरसेनया ॥ ४ ॥ तस्याग्रतस्तथापृष्ठेपार्श्वयोश्चम
हासुराः ॥ संदष्टोष्ठपुटाःक्रुद्धाहंतुंदेवीमुपाययुः ॥ ५ ॥

टीका—तब सुरथराजा बोलतेभये कि हे भगवन् आपने रक्तबीजके वध विषयक यह देवीके चरित्रोंका विचित्र माहात्म्य मेरेसे कहा॥ १ ॥हेभगवन् देवी ने रक्तबीजको पृथ्वीमें डाले सते क्रोधयुक्त हुये शुंभ और निशुंभ फिर जो संग्राम लक्षण कर्म कर्ते भये सो आपते अधिक जैसे होय तैसे मैं सुना चाहताहूँ॥ २ तब ऋषि बोले कि हे राजन् देवीने रक्तबीजको मार पृथ्वीमें डालेसते और जे दैत्यहैं तिनको संग्रामके विषे मारेसते शुंभासुर और निशुंभ ये बडाक्रोध कर्त्ते भये॥ ३ ॥ताके अनंतर देवी करिके हत अपनी सैन्यको देखकरि क्रोधयुक्त हुवा निशुंभ अपनी मुख्य असुरोंकी सेनाकरि सहित देवीके सन्मुख दौडताभया ॥ ४ ॥ फिर वा निशुंभके अगाडी तथा पिछाडी और दाहिने वामे

वर्त्तमान जे महाअसुर ते क्रोधयुक्त ओठपुट चावते हुवे देवीको मारनेको समीप प्राप्त होतेभये ॥ ५ ॥

आजगाममहावीर्यःशुंभोपिस्वबलैर्वृतः ॥ निहंतुंचंडिकांकोपात्कृत्वायुद्धंतुमातृभिः ॥ ६ ॥ ततोयुद्धमतीवासीद्देव्याः शुंभनिशुंभयोः ॥ शरवर्षमतीवोग्रंमेघयोरिववर्षतोः ॥ ७ ॥ चिच्छेदाऽस्तांछरांस्ताभ्यांचंडिकास्वशरोत्करैः ॥ ताडयामासचांगेषुशस्त्रौघैरसुरेश्वरौ ॥ ८ ॥ निशुंभोनिशितंखड्गं चर्मचादायसुप्रभं ॥ अताडयन्मूर्ध्निसिंहंदेव्यावाहनमुत्तमम् ॥ ॥ ९ ॥ ताडितेवाहनेदेवीक्षुरप्रेणासिमुत्तमम् ॥ निशुंभस्याशुचिच्छेदचर्मचाप्यष्टचंद्रकं ॥ १० ॥

टीका—फिर ताके अनंतर शुंभभी अपनी सेना करिके युक्तहुआ ब्रह्माणी आदि शक्तियोंते युद्ध करिके क्रोधते चंडिकाके मारनेको चंडिकाके समीप प्राप्त होताभया ॥ ६ ॥ ताके अनंतर अत्यंत भयंकर बाणोंकी मेघकीसी तरह वर्षा कर्त्तेहुये जे शुंभ और निशुंभ दैत्यहै तिनका और भगवतीका परस्पर बडाही युद्ध होताभया ॥ ७ ॥ फिर तिन शुंभनिशुंभ दैत्योंकरिकै छोडे हुवे जे बाणहै तिन्हे चंडिका अपने बाणनके समूह करिके काटतीभई याके अनंतर शुंभ निशुंभ जे हैं तिन्हे शस्त्रोंके समूह करिकै रोम रोमकेविषे ताडन कर्त्तीभई ॥ ८ ॥ फिर निशुंभ तीखा और प्रकाशमान खड्ग और प्रकाशमान ढाल लेकरके देवीवाहनसिंहके मस्तकमें ताडन कर्त्ताभया ॥ ९ ॥ फिर निशुंभने देवीके वाहन सिंहसे ताडन कियेसंते चंडिका क्षुरप्रमाण करिकै निशुभका खड्ग जोहै ताहि और आठहैं चंद्राकार लिखित जाकेविषे ऐसी ढाल जोहै ताहि काटतीभई ॥ १० ॥

छिन्नेचर्मणिखड्गेचशक्तिंचिक्षेपसोसुरः ॥ तामप्यस्यद्विधाचक्रेचक्रेणाभिमुखागतां ॥ ११ ॥ कोपाध्मातोनिशुंभोथशूलं जग्राहदानवः ॥ आयातंमुष्टिपातेनदेवीतच्चाप्यचूर्णयत् ॥ १२ ॥

अथादायगदांसोपिचिक्षेपचंडिकांप्रति ॥ सापिदेव्यास्त्रिशूलेनभिन्नाभस्मत्वमागता ॥ १३ ॥ ततःपरशुहस्तंतमायांतंदैत्यपुंगवं ॥ आहत्यदेवीबाणौघैरपातयतभूतले ॥ १४ ॥ तस्मिन्निपतितेभूमौनिशुंभेभीमविक्रमे ॥ भ्रातर्यतीवसंक्रुद्धः प्रययौहंतुमंबिकाम् ॥ १५ ॥

टीका–फिर चंडिकाने निशुंभके खड्ग और ढाल काटेसंते निशुंभ देवीके प्रति शक्ति शस्त्र फेंकताभया फिर सन्मुख आवतीहुई याकी शक्तिकाभी चंडिका चक्र करिकै दो टूक कर्तीभई ॥ ११ ॥ याके अनंतर अत्यंत क्रोधयुक्त हुवा निशुंभ देवीके प्रति त्रिशूल फेंकताभया फिर आतेहुवे तिस त्रिशूलकाभी चंडिका मुष्टिके प्रहार करिकै चूर्ण कर्तीभई ॥ १२ ॥ याके अनंतर फिर निशुंभभी गदा ग्रहण करिकै चंडिकाके प्रति फेंकताभया फिर वह गदाभी देवीके अग्निबीजगर्भ त्रिशूल करिकै खंडितहुई भस्मको प्राप्त होतीभई ॥ १३ ॥ ताके अनंतर फरशी है हाथमें जाके और दैत्योंमें श्रेष्ठ ऐसा आताहुवा निशुंभ जोहै ताहि चंडिका बाणोंके समूह करिकै ताडन कर पृथ्वीकेविषे गिरातीभई ॥ १४ ॥ फिर घोर है पराक्रम जाके विषे ऐसा वह निशुंभ भ्राता पृथ्वीमें पडेसंते अत्यंत क्रोधयुक्त हुवा शुंभ अंबिकाको मारनेको शीघ्र जातोभयो ॥ १५ ॥

सरथस्थस्तथात्युच्चैर्गृहीतपरमायुधैः ॥ भुजैरष्टाभिरतुलैर्व्याप्याशेषंबभौनभः॥ १६ ॥ तमायांतंसमालोक्य देवीशंखमवादयत् ॥ ज्याशब्दंचापिधनुषश्चकारातीवदुस्सहं ॥ १७ ॥ पूरयामासककुभोनिजघंटास्वनेनच ॥ समस्तदैत्यसैन्यानां तेजोवधविधायिना ॥ १८॥ ततः सिंहोमहानादैस्त्याजितेभमहामदैः ॥ पूरयामासगगनंगांतथैवदिशोदश ॥ १९ ॥ ततःकालीसमुत्पत्यगगनंक्ष्मामताडयत् ॥ कराभ्यांतन्निनादेनप्राक्स्वनास्तेतिरोहिताः॥ २० ॥

टीका—फिर वह शुंभ रथमें स्थितहुवा मुद्रिका प्रकारकरिकै ग्रहण किये हैं उत्तम शस्त्र जिनोंकेविषे ऐसी जे बडी ऊंचि अतुल आठभुजा तिन करिकै संपूर्ण आकाशको व्याप्त करताता कालकेविषे शोभायमान होतोभयो ॥ १६ ॥ फिर तिसको आताहुवा देखिके देवी शंख बजातीभई और धनुषकी प्रत्यंचाका बडाही दुःसह शब्दभी कर्त्तीभई ॥ १७ ॥ फिर चंडिका संपूर्ण असुरोंके सैन्यका तेजको नष्ट करनेवाला ऐसा अपनी घंटाका जो शब्द है ता करिकै दशोदिशाँको संवर्द्धमान कर्त्तीभई ॥ १८ ॥ फिर ताके अनंतर दूर कियेहैं हाथियोंके महामद जिनोंने ऐसा जो कंठ गर्ज्जनहै तिन करिकै सिंह आकाश जो है ताहि पूर्ण कर्त्तोभयो और तिसीप्रकार पृथ्वी और दशोदिशा तिन्हे पूर्ण कर्त्तोभयो ॥ १९ ॥ फिर ताके अनंतर चामुंडा काली उछल करिकै हाथोंसे आकाश और पृथ्वी जोहै तिन्हैं ताडन कर्त्तीभई फिर या पृथ्वी और आकाशके ताडनके शब्द करिकै शंख प्रत्यंचा घंटा सिंह इनके जे शब्द थे ते आच्छादित होतेभये ॥ २० ॥

अट्टाट्टहासमशिवंशिवदूतीचकारह ॥ तैःशब्दैरसुरास्त्रेसुःशुंभः कोपंपरंययौ ॥ २१ ॥ दुरात्मंस्तिष्ठतिष्ठेतिव्याजहारांबिकायदा ॥ तदाजयेत्यभिहितंदेवैराकाशसंस्थितैः ॥ २२ ॥ शुंभेनागत्ययाशक्तिर्मुक्ताज्वालातिभीषणा ॥ आयांतीवन्हिकूटाभासानिरस्तामहोल्कया ॥ २३ ॥ सिंहनादेनशुंभस्य व्याप्तंलोकत्रयान्तरम् ॥ निर्घातानिःस्वनोघोरोजितवानवनीपते ॥ २४ ॥ शुंभमुक्ताञ्छरान्देवीशुंभस्तत्प्रहिताञ्छरान् ॥ चिच्छेदस्वशरैरुग्रैःशतशोथसहस्रशः ॥ २५ ॥

टीका—और शिवदूती तासमय बडा कठोर अट्टाट्टहास कर्त्तीभई फिर अट्टाट्टहासते उत्पन्नभये जे शब्दहैं तिन करिकै असुर त्रासको प्राप्त होतेभये और शुंभ अत्यंत कोपको प्राप्त होतोभयो ॥ २१ ॥ फिर हे शुंभदुरात्मन् तू खडारहे खडारहै ऐसे संग्राममकेविषे जब अंबिका कहतीभई तब आका-

शमें स्थितहुये देवोंने जय जय शब्द किया अर्थात् हे अंबिके तुम शत्रुवोंका तिरस्कार करो इस प्रकारसे कहा ॥ २२ ॥ फिर शुंभने आकरिकै ज्वाला करिकै बडी भयंकर ऐसी शांग भगवतीके सन्मुख छोडी अग्निके तुल्यहै कांति जाकी ऐसी आतीहुई शांगको अंबिका अपनी महोल्का शांग करिकै निरस्त कर्त्तीभई ॥ २३ ॥ हे सुरथ तासमय शुंभके कंठ गर्ज्जन करिकै लोकत्रयका मध्य व्याप्त होता भया तोभी ताहि देवीको मारो मारो यह जो शुंभके सैनिकनका शब्दहै सो शुंभका शब्द जोहै ताहि तिरस्कृत कर्त्ताभया ॥ २४ ॥ फिर ता संग्रामकेविषे देवी अपने उग्रबाणों करिकै सौ सौ हजार हजार शुंभके छोडेहुए जे बाणहैं तिन्हैं काटतीभई और शुंभ देवीके छोडेहुये जे बाणहैं तिन्हैं अपने बाणों करिकै काटताभया ॥ २५ ॥

ततःसाचण्डिकाक्रुद्धाशूलेनाभिजघानतम् ॥ सतदाभिहतो भूमौमूर्च्छितोनिपपातह ॥ २६ ॥ ततोनिशुंभःसंप्राप्यचेतनामात्तकार्मुकः॥आजघानशरैर्देवींकालींकेसरिणंतथा ॥२७॥ पुनश्चकृत्वाबाहूनामयुतंदनुजेश्वरः ॥ चक्रायुतेनदितिजश्छादयामासचंडिकाम् ॥ २८ ॥ ततोभगवतीकुद्धादुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी ॥ चिच्छेदतानिचक्राणिस्वशरैःसायकांश्च तान् ॥ २९ ॥ ततोनिशुंभोवेगेनगदामादायचंडिकाम् ॥ अभ्यधावतवैहंतुंदैत्यसेनासमावृतः ॥ ३० ॥

टीका–फिर शुंभको संग्राममें अपने समान देखिके वह चंडिका क्रोध युक्त हुई त्रिशूलके प्रहार करिकै तिस दैत्यको ताडन कर्त्तीभई फिर वह शुंभ त्रिशूलके प्रहार करिकै ताडित मूर्छित हुवा पृथ्वीमें पडताभया ॥ २६ ॥ ताके अनंतर पहिले मूर्छाको प्राप्तहुवा निशुंभ चेतना जो है ताहि प्राप्त होकर ग्रहण कियोहै धनुष जाने ऐसा बाणोंके प्रहार करिकै काली देवी जोहै ताहि ताडन कर्त्ताभया और तिसी प्रकार सिंह जो है ताहि ताडन कर्त्ताभया॥२७॥ और तासमय फिर वह निशुंभ मायावी दशहजार भुजावाला बनिके चक्रके

प्रहार करिकै चंडिका जोहै ताहि ताडन कर्तोभयो ॥ २८ ॥ ताके अनंतर संकटमें पीडाको नष्ट करनेवाली ऐसी दुर्गा भगवती क्रोधयुक्त हुई अपने बाणों करिकै वा दैत्यके चक्र और बाण जे हैं तिन्हैं काटतीभई ॥ २९ ॥ फिर ताके अनंतर निशुंभ वेग करिकै गदा जो है ताहि ग्रहण करिकै दैत्यनकी सेना करिकै युक्त हुवा चंडिका जो है ताहि मारनेको दौडतागया॥३०॥

तस्यापततएवाशुगदांचिच्छेदचंडिका ॥ खड्गेनशितधारेण सचशूलंसमाददे ॥ ३१ ॥ शूलहस्तंसमायांतंनिशुंभममरार्दनम् ॥ हृदिविव्याधशूलेनवेगाविद्धेनचंडिका ॥ ३२ ॥ भिन्नस्यतस्यशूलेनहृदयान्निःसृतोपरः ॥ महाबलोमहावीर्यस्तिष्ठेतिपुरुषोवदन् ॥ ३३ ॥ तस्यनिष्क्रामतोदेवीप्रहस्यस्वनवत्ततः ॥ शिरश्चिच्छेदखड्गेनततोसावपतद्भुवि ॥ ३४ ॥ ततः सिंहश्चखादोग्रदंष्ट्राक्षुण्णशिरोधरान् ॥ असुरांस्तांस्तथाकालीशिवदूतीतथापरान् ॥ ३५ ॥

टीका—फिर आताहुवाही निशुंभकी गदा जो है ताहि चंडिका तीखी धारवाले खड्ग करिकै तत्काल काटतीभई फिर वह दानव त्रिशूल ग्रहण कर्तो भयो ॥ ३१ ॥ फिर त्रिशूल है हाथमें जिसके और देवतानको दुःख देनेवाला ऐसा आताहुवा निशुंभ जो है ताहि चंडिका वेगते फेकाहुवा जो त्रिशूल है ता करिकै हृदयकेविषे बींधतीभई ॥ ३२ ॥ फिर त्रिशूलके प्रहार करिकै भिन्नहुवा जो निशुंभ है ताके हृदयते हे देवि तू कहां जायगी खडी रहै ऐसे कहताहुवा बड़ा पराक्रमी और बड़ा वीर अन्य पुरुष निकसताभया ॥३३॥ फिर रे रे दुष्ट ! तू खडारह खडारहै मन्मयी मायाको प्राप्त होकर तू फिर मेरेकोही मारनेको उद्युक्त हो रहाहै याते मैं तेरेको अबहीं मारूंगी इसप्रकार हँसके निशुंभके हृदयते निकसता हुवा जो निशुंभका अवतार है ताको देवी खड्गके प्रहार करिकै शिर काटतीभई ताके अनंतर निशुंभ रणभूमिकेविषे पड़ताभया ॥ ३४ ॥ ताके अनंतर उग्रदंष्ट्रानकरिकै संपिष्ट है ग्रीवा जिनोंकी

ऐसे जे असुर हैं तिन्हैं सिंह खाताभया और सिंह भक्षित असुरोंते अन्य जे असुर हैं तिन्हैं काली भक्षण कर्त्तीभई तिनोंसेभी अन्य जे हैं तिन्हैं शिवदूती भक्षण कर्त्तीभई ॥ ३५ ॥

कौमारीशक्तिनिर्भिन्नाःकेचिन्नेशुर्महासुराः ॥ ब्रह्माणीमंत्रपूतेनतोयेनान्येनिराकृताः ॥ ३६ ॥ माहेश्वरीत्रिशूलेनभिन्नाःपेतुस्तथापरे ॥ वाराहीतुंडघातेनकेचिच्चूर्णीकृताभुवि ॥ ३७॥ खंडंखंडंचचक्रेणवैष्णव्यादानवाः कृताः ॥ वज्रेणचैंद्रीहस्ताग्रविमुक्तेनतथापरे ॥३८ ॥ केचिद्विनेशुरसुराःकेचिन्नष्टामहाहवात् ॥ भक्षिताश्चापरेकालीशिवदूतीमृगाधिपैः ॥ ३९ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणेसावर्णिके मन्वंतरेदेवीमाहात्म्येनिशुंभवधोनामनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

टीका—और कितनेही महाअसुर कौमारीकी शक्तिके प्रहार करिकै छिन्नभिन्न हुवे नाशको प्राप्त होतेभये और कितनेही अन्य असुर ब्रह्माणीके मंत्रते पवित्र जल करिकै नष्ट करिदिये ॥ ३६ ॥ और तिसीप्रकार अन्य कितनेही असुर माहेश्वरीके त्रिशूलके प्रहार करिकै भिन्नहुवे रणभूमिकेविषे पड़तेभये और कितनेही वाराहीशक्तिके मुखके प्रहार करिकै चूर्णितहुवे रणभूमिकेविषे पड़तेभये ॥ ३७ ॥ फिर वैष्णवीशक्तिने चक्रके प्रहार करिकै खंडपनाको दानव प्राप्त करदिये और तिसीप्रकार कितनेही अन्य दानव ऐंद्रीशक्तिके हस्ताग्र करिकै प्रेरित जो वज्र ताके प्रहार करिकै खंडितहुये नष्ट होतेभये ॥ ३८ ॥ फिर ता संग्रामकेविषे कितनेही तो असुर नष्ट होतेभये और कितनेही तिस संग्रामते डरपके भागजातेभये और कितनेही असुर काली और शिवदूती और सिंह इनोने भक्षण किये ॥ ३९ ॥ इति मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिकेमन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये निशुंभवधोनाम नवमोध्यायः॥९॥

ऋषिरुवाच ॥ निशुंभंनिहतंदृष्ट्वाभ्रातरंप्राणसंमितम् ॥ हन्यमानंबलंचैवशुंभः क्रुद्धोब्रवीद्वचः ॥ १ ॥ बलावलेपाद्दुष्टेत्वंमादु-

गेंगर्वमावह ॥ अन्यासांबलमाश्रित्य युध्यसेयातिमानिनी॥२॥
देव्युवाच ॥ एकैवाहंजगत्यत्रद्वितीयाकाममापरा ॥ पश्यै-
तादुष्टमय्येवविशंत्योमद्विभूतयः ॥३॥ ऋषिरुवाच॥ ततःसम
स्तास्तादेव्योब्रह्माणीप्रमुखालयम् ॥ तस्यादेव्यास्तनौजग्मुरे
कैवासीत्तदांबिका ॥४॥ देव्युवाच ॥ अहंविभूत्याबहुभिरिहरू-
पैर्यदास्थिता ॥ तत्संहृतंमयैकैवतिष्ठाम्याजौस्थिरोभव ॥५॥

टीका—तब ऋषि बोले कि हे सुरथराजन् फिर शुंभ प्राणोंके समान देवी करिके माराहुवा ऐसा निशुंभ भ्राता जो है ताहि देखकर और अपनी सेना देवी करिके हन्यमान देखकर क्रोधयुक्त हुवा वचन बोलताभया ॥ १ ॥ हे दुर्गे दुष्टनी बलके संबंधसे तू गर्व मतकरे जो तू ब्रह्माणीआदि शक्तियोंका बल जो है ताहि आश्रय करिके निरंतर अहंकारवाली हुई युद्ध कर्त्ती है सो सर्वथा दूसरेके बलका आश्रय लेकर युद्धकेविषे तेरेको गर्व करना अनु-चित है ॥ २ ॥ ताके अनंतर देवी बोलतीभई कि हे दुष्ट शुंभ इस जगत्के विषे परमात्मरूप एक मैंहीं हूँ मेरेते अन्य दूसरी कौन है अर्थात् कोई नहीं और ये जे ब्रह्माणी आदि लेकर मेरी विभूति हैं तिन्हें मेरे विषेही प्रवेश होतीहुई तू देख ॥ ३ ॥ तब ऋषि बोले कि हे सुरथराजन् ताके अनंतर ब्रह्माणी है मुख्य जिनोंके विषे ऐसी जे आठ शक्ति हैं वे सब तिस चंडि-काके शरीरमें ऐक्यको प्राप्त होतीभई अर्थात् लीन होतीभई तब एक अं-बिका देवीही अद्वितीय रहतीभई ॥ ४ ॥ फिर देवी बोलती भई हे शुंभ मैं इस रणभूमिके विषे बहुत रूपों करिके जो बहुत्व अंगीकार करा सो बहुत्व समेटलिया अब मैं एकही स्थितहूँ तू अब संग्रामकेविषे स्थिरहो ॥ ५ ॥

ऋषिरुवाच ॥ ततःप्रववृतेयुद्धंदेव्याःशुंभस्यचोभयोः ॥ प-
श्यतांसर्वदेवानामसुराणांचदारुणम् ॥ ६ ॥ शरवर्षैःशितैः
शस्त्रैस्तथास्त्रैश्चैवदारुणैः॥ तयोर्युद्धमभूद्भूयः सर्वलोकभयंकरं
॥ ७ ॥दिव्यान्यस्त्राणिशतशोमुमुचेयान्यथांबिका ॥ बभंज

तानिदैत्येंद्रस्तत्प्रतीघातकर्तृभिः ॥ ८ ॥ मुक्तानितेनचास्त्राणिदिव्यानिपरमेश्वरी ॥ बभंजलीलयैवोग्रहुंकारोच्चारणादिभिः ॥९॥ ततश्शरशतैर्देवीमाच्छादयतसोसुरः॥ सापितत्कुपितादेवीधनुश्चिच्छेदचेषुभिः ॥ १० ॥

टीका–तब ऋषि बोले कि हे सुरथराजन् ताके अनंतर देवी और शुंभ इन दोनोंका परस्पर युद्ध प्रवृत्त होताभया वह कैसा युद्धहुवा कि देखतेहुये संपूर्ण देव तिनको जे भयंकर ऐसा ॥ ६ ॥ फिर बाणोंकी वर्षा करिकै तीखे शस्त्रों करिकै और कठोर अस्त्रों करिकै शुंभका और देवीका संपूर्ण लोकको भय करनेवाला ऐसा बहुत युद्ध होताभया ॥ ७ ॥ याके अनंतर अंबिका शुंभकेविषे जे सेंकडों दिव्याऽस्त्र छोडे तिन्हैं तिनका विध्वंस करनेवाले अस्त्रों करिकै शुंभ काटताभया॥८॥ फिर शुंभने छोडे जे दिव्य अस्त्र हैं तिन्हैं परमेश्वरी हुंकारोच्चारणादि करिकै विनापरिश्रम करिकेही काटतीभई ॥ ९ ॥ ताके अनंतर हजारों बाणों करिकै वह असुर देवी जो है ताहि आच्छादित कर्त्ताभयो तिसकारणते वह भगवती क्रोधयुक्त हुई बाणों करिकै शुंभको धनुष जो है ताहि काटतीभई ॥ १० ॥

छिन्नेधनुषिदैत्येंद्रस्तथाशक्तिमथाददे॥ चिच्छेददेवीचक्रेणतामप्यस्यकरेस्थिताम् ॥११॥ ततःखड्गमुपादायशतचंद्रंचभानुमत् ॥ अभ्यधावततांहंतुंदैत्यानामधिपेश्वरः ॥ १२ ॥ तस्यापततएवाशुखड्गंचिच्छेदचंडिका ॥ धनुर्मुक्तैःशितैर्बाणैश्चर्मचार्ककरामलं ॥१३॥ अश्वांश्चपातयामासरथंसारथिना सह ॥ हताश्वःसतदादैत्यश्छिन्नधन्वाविसारथिः ॥ जग्राहमुद्गरंघोरमंबिकानिधनोद्यतः॥ १४ ॥ चिच्छेदापततस्तस्यमुद्गरं निशितैःशरैः ॥ तथापिसोभ्यधावत्तांमुष्टिमुद्यम्यवेगवान्॥१५॥

टीका–फिर देवीने शुंभका धनुष काटे संते शुंभ. तिसीप्रकार शक्ति शस्त्र ग्रहण कर्त्ताभयो याके अनंतर देवी शुंभके हाथमें स्थित जो शक्ति शस्त्रहै

ताहिवी चक्र करिके काटतीभई ॥ ११ ॥ ताके अनंतर दैत्योंके अधिप जे धूम्रलोचनादिक तिनका ईश्वर शुंभ खड्ग जो है ताहि ग्रहण करिके और सौ हे लिखेहुवे चंद्राकार जाके विषे और प्रकाशमान ऐसा जो ढालहै ताहि ग्रहण करिके ता देवीके मारनेको दौडताभया ॥ १२ ॥ फिर आताहुवा ही जो शुंभहै ताका खड्ग जो है ताहि अत्यंत प्रकाशमान जो ढालहै ताहि चंडिका धनुष करिके छोडेहुवे जे तीखे बाणहैं तिन करिके काटतीभई ॥ १३ ॥ और अश्व जे हैं तिन्हें और सारथि करिके सहित जो रथहै ताहि चंडिका बाणों करिके पृथ्वीमें गिरातीभई फिर मारेगयेहैं अश्व जाके और टूटगयाहै धनुष जाका और विगतहुवाहै सारथि जाका ऐसा वह शुंभदैत्य अंबिकाके मारनेमें उद्युतहुवा भयंकर मुद्गर ग्रहण कर्त्ताभया ॥ १४ ॥ फिर ताके अनंतर प्रहार करनेकी इच्छा कर्त्ताहुवा जो शुंभ है ताका मुद्गर जोहै ताहि सो देवी तीखे बाणों करिके काटतीभई तौभी मूका ऊंचा करिके शुंभ देवीके मारनेको दौडताभया ॥ १५ ॥

समुष्टिंपातयामासहृदयेदैत्यपुंगवः ॥ देव्यास्तंचापिसादेवीतलेनोरस्यताडयत् ॥ १६ ॥ तलप्रहाराभिहतोनिपपातमहीतले ॥ सदैत्यराजःसहसापुनरेवतथोत्थितः ॥ १७ ॥ उत्पत्य चप्रगृह्योच्चैर्देवींगगनमास्थितः ॥ तत्रापिसानिराधारायुयुधेतेनचंडिका ॥ १८ ॥ नियुद्धंखेतदादैत्यश्चंडिकाचपरस्परम् ॥ चक्रतुःप्रथमंसिद्धमुनिविस्मयकारकम् ॥ १९ ॥ ततोनियुद्धंसुचिरंकृत्वातेनांबिकासह ॥ उत्पात्यभ्रामयामासचिक्षेपधरणीतले २० ॥

टीका–फिर वह दैत्यनमें श्रेष्ठ शुंभ देवीके हृदयकेविषे मुष्टिका प्रहार कर्त्ताभया फिर वह शुंभ जोहै ताहिभी करतल करिके वक्षस्थलकेविषे ताडन कर्त्तीभई ॥ १६ ॥ फिर वह दैत्यराज देवीके करतलके प्रहारकरिके ताडितहुवा महीतलकेविषे पडताभया फिर वह दैत्य वेगकरिके तिसी प्रकार संग्रामभूमिमें खडाहोताभया ॥ १७ ॥ फिर देवी जोहे

ताहि ग्रहण करिके महीतलते उड़कर आकाशकेविषे स्थित होताभया तहांभी निराधार हुई भगवती तिस शुंभके साथ युद्धकर्त्तीभई ॥ १८ ॥ फिर तब आकाशमें आरोहण कालकेविषे शुंभ दैत्य और चंडिका ये पहिले सिद्ध और मुनि इनको विस्मय करनेवाला ऐसा परस्पर बाहुयुद्ध कर्त्तेभये ॥ १९ ॥ फिर अंबिका शुंभके साथ बहुत काल युद्ध करिके ताके अनंतर शुंभका पैर पकड उठाके भ्रमातीभई पीछे भ्रमा करिके भगवती शुंभ जोहै ताहि पृथ्वीतलकेविषे फेकतीभई ॥ २० ॥

सक्षितो धरणींप्राप्यमुष्टिमुद्यम्यवेगितः ॥ अभ्यधावतदुष्टात्माचंडिकानिधनेच्छया ॥ २१ ॥ तमायांततंततोदेवीसर्वदैत्यजनेश्वरम् ॥ जगत्यांपातयामासभित्त्वाशूलेनवक्षसि ॥२२॥ सगतासुःपपातोर्व्यां देवीशूलाग्रविक्षतः ॥ चालयन्सकलां पृथ्वींसाब्धिद्वीपांसपर्वताम् ॥ २३ ॥ ततःप्रसन्नमखिलंहतेतस्मिन्दुरात्मनि ॥ जगत्स्वास्थ्यमतीवापनिर्मलंचाभवन्नभः ॥ ॥२४॥उत्पातमेघास्सोल्कायेप्रागासंस्तेशमंययुः ॥ सरितोमार्गवाहिन्यस्तथाशुंभेनिपातिते ॥ २५ ॥

टीका–फिर आकाशते देवी करिकै फेकाहुवा दुष्टात्मा शुंभदैत्य पृथ्वी जोहै ताहि प्राप्त होकरिके मुष्टि उठा करिके चंडिकाको मारनेकी इच्छा करिके दौडताभया ॥ २१ ॥ फिर ताके अनंतर आताहुवा जो संपूर्ण दैत्योंका ईश्वर शुंभहै ताहि भगवती त्रिशूलके प्रहार करिके वक्षस्थलमें वेधन करि पृथ्वीमें गिरातीभई ॥ २२ ॥ वह दैत्य देवीका त्रिशूलके अग्रभाग करिके हत और गये प्राण जाके ऐसाहुवा पर्वतों करिके और समुद्र द्वीपों करिके सहित जो पृथ्वीहै ताहि चलायमान कर्त्ताहुवा पृथ्वीके विषे पडताभया ॥ २३ ॥ फिर देवीने तिस दुरात्मा शुंभको मारे संते ता कारणते संपूर्ण जगत् प्रसन्न होतोभयो और फिर जगत् अत्यंत स्वस्थपनाको प्राप्त होतोभयो और आकाश निर्मल होतोभयो ॥ २४ ॥ और ज्वाला करिके सहित जे

शुंभ मरे पहिले उत्पातके मेघथे वे शांतिको प्राप्त होतेभये देवीने शुंभको पृथ्वीमें गिरायेसंते उत्पथले तिसीप्रकार मार्गवाहिनी नदियां होतीभई ॥ २५ ॥

ततोदेवगणास्सर्वेहर्षनिर्भरमानसाः॥बभूवुर्निहतेतस्मिन्गंधर्वाललितंजगुः॥२६॥अवादयंस्तथैवान्येननृतुश्चाप्सरोगणाः॥ ववुःपुण्यास्तथावातास्सुप्रभोभूद्दिवाकरः॥२७॥जज्वलुश्चाग्नयःशांताःशांतादिग्जनितस्वनाः॥ २८॥ इतिश्रीमा०पु०सावर्णिकेमन्वंतरेदेवीमाहात्म्ये शुंभवधोनामदशमोऽध्यायः॥१०॥

टीका—और वा दैत्यको देवीने मारेसंते तिसकारणते हर्ष करिकै पूर्णहै मन जिनके ऐसे देवगण होतेभये और गंधर्व मनोहर गातेभये ॥ २६ ॥ और तासमय कितनेही अन्य गंधर्व वादित्र बजातेभये और अप्सरावोंके गण नृत्य कर्त्तेभये और तासमय शीतल मंद सुगंध पवन चलतेभये और तिसीप्रकार सूर्य सुप्रभ होताभया ॥ २७ ॥ और आहवनीय अग्नि यज्ञनके निर्मल जलती और दिशावोंकेविषे उत्पन्न ऐसे उत्पातको सूचन करनेवाले जे शब्द ते शांत होतेभये ॥ २८ ॥ इति मार्कण्डेयपुराणेसावर्णिकेमन्वंतरेदेवीमाहात्म्येभाषाटीकायांशुंभवधोनामदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

ऋषिरुवाच ॥ देव्याहतेतत्रमहासुरेंद्रेसेंद्राःसुरावन्हिपुरोगमास्ताम्॥ कात्यायनींतुष्टुवुरिष्टलाभाद्विकासिवक्त्राब्जविकासिताशाः॥१॥देवाऊचुः॥देविप्रपन्नार्तिहरेप्रसीदप्रसीदमातर्जगतोखिलस्य।प्रसीदविश्वेश्वरिपाहिविश्वंत्वमीश्वरीदेविचराचरस्य ॥२॥आधारभूताजगतस्त्वमेकामहीस्वरूपेणयतः स्थितासि। अपांस्वरूपस्थितयात्वयैतदाप्यायतेकृत्स्नमलंघ्यवीर्ये॥३॥ त्वंवैष्णवीशक्तिरनंतवीर्याविश्वस्यबीजं परमासिमाया ॥ संमोहितंदेविसमस्तमेतत्त्वंवैप्रसन्नाभुविमुक्तिहेतुः ॥ ४ ॥ विद्याः समस्तास्तवदेविभेदाःस्त्रियः समस्ताः सकलंजगत्सु ॥ त्वयैकयापूरितमंबयैतत्कातेस्तुतिःस्तव्यपरापरोक्तिः ॥ ५ ॥

टीका--फिर ऋषि बोले कि हे सुरथराजन् चंडिकाने संग्रामकेविषे शुंभासुर मारेसंते अपने इष्टके लाभते प्रसन्नहै मुख जिनोंका ऐसे इंद्र करिके सहित अग्निते आदि लेकर जे देव ते तिस कात्यायनी भगवतीकी स्तुति कर्त्तेभये॥१॥तब देव भगवतीकी स्तुतिके उपयोगी वाक्य बोलतेभये हे शरणागतका दुःख हरनेवाली भगवती तुम प्रसन्नहो हे संपूर्ण जगत्की माता तुम प्रसन्नहो हे विश्वेश्वरि तुम प्रसन्नहो हे देवि तुम लक्ष्मीरूप करिकै जगत्की रक्षा करो और हे देवी तुम चराचर जगत्की व्यापकहो॥ २ ॥ और हे देवी जा कारणते तुम पृथ्वीरूप करिकै स्थितहो तातै जगत्का आधार रूप एक तुमहीहो अन्य नहीं और नहीं उलांघ सकाजाय पराक्रम जाका ऐसी जलोंका स्वरूप करिके स्थित जो है भगवती तुमहो सो तुम करिकै संपूर्ण जगत् बढायाज्ञाताहै ॥ ३ ॥ हे देवि तुम कैसीहो अनंतहै पराक्रम जाको ऐसीहै और विश्वका कारण माया तुमहीहो और जा करिकै अशेष जगत्की विष्णु पालना कर्त्ताहै ऐसी विष्णुकी सामर्थ्यलक्षण वैष्णवी शक्ति तुमही हो हे देवि तुह्मारी मायाने यह सम्पूर्ण जगत् मोहितकिया अर्थात् ममताके वशीभूत किया और तुम प्रसन्नहुई पृथ्वीकेविषे मुक्तिका कारण हो ॥ ४ ॥ और हे देवि श्रुति स्मृति पुराण इनते आदि लेकर जे विद्याहैं वे तुह्माराही अंशहैं और ब्रह्माणीते आदि लेकर जे संपूर्ण शक्तिहैं वे तुह्माराही अंशहैं और संपूर्ण यह जगत् तुह्मारे करिकै पूर्ण है हे भगवति स्तुति और स्तुत्य इनके भेदमें स्तुति होती है हे भगवति एकत्वके विषे तुह्मारी क्या स्तुति करीजाय ॥ ५ ॥

सर्वभूतायदादेवीभुक्तिमुक्तिप्रदायिनी ॥ त्वंस्तुतास्तुतयेकावाभवंतिपरमोक्तयः ॥ ६ ॥ सर्वस्यबुद्धिरूपेणजनस्यहृदिसंस्थिते ॥ स्वर्गापवर्गदेदेविनारायणिनमोस्तुते ॥७॥ कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनी॥ विश्वस्योपरतौशक्ते नारायणिनमोस्तुते॥८॥सर्वमंगलमांगल्येशिवेसर्वार्थसाधिके।शरण्येत्र्यंबकेगौरिनारायणिनमोस्तुते ॥९॥ सृष्टिस्थितिविनाशानां-

शक्तिभूतेसनातनि॥गुणाश्रयेगुणमयेनारायणिनमोस्तुते ॥१० ॥

टीका—फिर हे भगवति भुक्तिमुक्तिकी देनेवाली तुम विश्वरूपहो इस प्रकारसे जब तुम स्तुति कीगई तब तुम्हारी स्तुतिके अर्थ कौनसी श्रेष्ठ उक्तियां हैं कि जिन करिकै तुम स्तुति कीजातीहो अर्थात् नहीं ॥ ६ ॥ हे देवि संपूर्ण प्राणियोंके हृदयकेविषे स्थितहै स्वर्ग मोक्षकी देनेवाली हे नारायणि तेरे अर्थ नमस्कार है ॥ ७ ॥ क्षण मुहूर्त्त अहोरात्र पक्ष मास ऋतु अयन संवत्सर इन आदि कालरूप करिकै मनुष्यादिकनको बाल्य तरुण वृद्ध अवस्था देनेवाली तिसी प्रकार संसारके अन्तमें रुद्ररूप ऐसी हे नारायणि तेरे अर्थ नमस्कार है ॥ ८ ॥ और हे सर्व मंगलोंका मंगलरूप हे कल्याण करनेवाली हे शरणागतवत्सल हे त्रिनेत्रे हे गौरि हे नारायणि तेरे अर्थ नमस्कार है ॥ ९ ॥ और जगत्का रचना पालन और संहार इनको करनेवाली हे शक्तिरूप और हे सनातनि हे गुणनका आश्रय हे गुणमयि हे नारायणि तेरे अर्थ नमस्कार है ॥ १० ॥

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ॥ सर्वस्यार्तिहरेदेविनारायणिनमोस्तुते॥११॥ हंसयुक्तविमानस्थेब्रह्माणीरूपधारिणि॥ कौशांभःक्षरिकेदेविनारायणिनमोस्तुते॥ १२ ॥ त्रिशूलचंद्राहिधरेमहावृषभवाहिनि ॥ माहेश्वरीस्वरूपेणनारायणिनमोस्तुते ॥ १३ ॥ मयूरकुक्कुटवृतेमहाशक्तिधरेनघे ॥ कौमारी रूपसंस्थानेनारायणिनमोस्तुते ॥ १४ ॥ शंखचक्रगदाशार्ङ्गगृहीतपरमायुधे॥ प्रसीदवैष्णवीरूपेनारायणिनमोस्तुते ॥१५॥

टीका—हे शरणागत ऐसे गरीब और दुःखीओंको दुःखोंते रक्षा करनेमें तत्पर हे सर्वलोकका दुःख हरनेवाली हे नारायणि तेरे अर्थ नमस्कारहै ॥ ११ ॥ हे हंसयुक्त विमानमें स्थित ब्रह्माणीका रूप धारण करनेवाली और हे कुशोदकका शत्रुवोंपर सेचन करनेवाली हे नारायणि तेरे अर्थ नमस्कारहै ॥ १२ ॥ और माहेश्वरी स्वरूप करिकै हे त्रिशूल

चंद्रको धारण करनेवाली हे महावृषभवाहिनि हे नारायणि तेरे अर्थ नमस्कारहै ॥ १३ ॥ मयूर और कुक्कुट इन करिकै युक्त और महाशक्ति को धारण करनेवाली और पापों करिकै रहित और कुमारशक्तिकासाहै शरीरका अवयव जाके ऐसी जो नारायणि तुमहो सो तुह्मारे अर्थ नमस्कारहै ॥ १४ ॥ और शंख चक्र गदा शार्ङ्ग धनुष येग्रहण किये हैं परम आयुध जाने ऐसी वैष्णवीरूप हे नारायणि तुम प्रसन्नहो तुमारे अर्थ नमस्कारहै ॥ १५ ॥

गृहीतोग्रमहाचक्रेदंष्ट्रोद्धृतवसुंधरे॥वराहरूपिणिशिवेनारायणि नमोस्तुते ॥ १६ ॥ नृसिंहरूपेणोग्रेणहंतुंदैत्यान्कृतोद्यमे ॥ त्रैलोक्यत्राणसहितेनारायणिनमोस्तुते ॥ १७ ॥ किरीटिनि महावज्रेसहस्रनयनोज्ज्वले ॥ वृत्रप्राणहरे चैंद्रिनारायणिनमोस्तुते॥ १८ ॥ शिवदूतीस्वरूपेणहतदैत्येमहाबले॥ घोररूपे महारावेनारायणिनमोस्तुते॥ १९ ॥ दंष्ट्राकरालवदनेशिरोमालाविभूषणे ॥ चामुंडेमुंडमथनेनारायणिनमोस्तुते॥२०॥

टीका—और ग्रहण कियोहै उग्रचक्र जाने और दंष्ट्रावों करिकै उठाईहै पृथ्वी जाने और वराहके रूपको धारण करनेवाली और कल्याणरूपिणी ऐसी जो हे नारायणि तुमहो तुमारे अर्थ नमस्कारहै ॥ १६ ॥ और उग्र जो नृसिंह रूपहै ता करिकै दैत्य जेहैं तिन्हैं मारनेको कियोहै उद्यम जाने और त्रैलोक्यकी रक्षा करिकै सहित ऐसी जो हे नारायणि तुमहो तुह्मारे अर्थ नमस्कारहै ॥ १७ ॥ और मुकुटको धारण करनेवाली और बडाहै वज्र जिसका और हजार नेत्र जेहैं तिन करिकै प्रकाशमान और वृत्रासुरका प्राण हरनेवाली ऐसी ऐंद्रीशक्तिरूप जो हे नारायणि तुमहो सो तुह्मारे अर्थ नमस्कार है ॥ १८ ॥ और शिवदूती स्वरूप करिकै माराहै दैत्योंका महासैन्य जाने और घोरहै रूप जाको और बडाहै शब्द जाका ऐसी जो हेनारायणि तुमहो तुह्मारे अर्थ नमस्कारहै ॥ १९ ॥ और दंष्ट्रावोंकरिकै भयंकरहै मुख जाको

और नरमुंडोंकी मालाकाहै आभूषण जिसके ऐसी चंडमुंडको मारनेवाली चामुंडारूप जो हेनारायणि तुमहो सो तुह्मारे अर्थ नमस्कारहै ॥ २० ॥

लक्ष्मिलज्जेमहाविद्येश्रद्धेपुष्टेस्वधेध्रुवे ॥ महारात्रिमहामाये नारायणिनमोस्तुते ॥ २१ ॥ मेधेसरस्वतिवरेभूतिबाभ्रवि तामसि ॥ नियतेत्वंप्रसीदेशेनारायणिनमोस्तुते ॥ २२ ॥ सर्वतःपाणिपादांतेसर्वतोक्षिशिरोमुखे ॥ सर्वतःश्रवणघ्राणे नारायणि नमोस्तुते ॥ २३ ॥ सर्वस्वरूपेसर्वेशेसर्वशक्तिस मन्विते ॥ भयेभ्यस्त्राहिनोदेविदुर्गेदेविनमोस्तुते ॥ २४ ॥ एतत्तेवदनंसौम्यंलोचनत्रयभूषितम् ॥ पातुनः सर्व भीतिभ्यः कात्यायनि नमोस्तुते ॥ २५ ॥

टीका—और लक्ष्मी लज्जा महाविद्या श्रद्धा पुष्टि स्वधा ध्रुवा महारात्रि महामाया इनरूप जो हे नारायणि तुमहो सो तुह्मारे अर्थ नमस्कार है ॥२१॥ और मेधारूप सरस्वतीरूप और श्रेष्ठ ऐश्वर्यरूप कृष्णकी भगिनीरूप और तामसी शक्तिरूप और अदृष्टरूप और समर्थ ऐसीजो हे नारायणि तुमहो से प्रसन्नहो तुह्मारे अर्थ नमस्कारहै ॥ २२ ॥ और चारो तरफहैं हाथ पैर अवयव जाके और चौतरफहैं नेत्र और शिर और मुख जाके और चौतरफहैं कान और नाक जाके ऐसी जो हे नारायणि तुमहो सो तुह्मारे अर्थ नमस्कारहै ॥ २३ ॥ और संपूर्ण जगत्है स्वरूप जाको और सबकी स्वामिनी और संपूर्ण शक्तियों करिकै समन्वित ऐसी जो हेदेवि तुमहो सो भयोंते हमारी रक्षा करो हे दुर्गेदेवि तुह्मारे अर्थ नमस्कारहो ॥२४॥ और तीन नेत्रों करिकै अलंकृत जो तुह्मारा यह सुंदर मुखहै सो संपूर्णभयोंते हमारी रक्षाकरो हेकात्यायनि तुह्मारे अर्थ नमस्कारहो ॥ २५ ॥

ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् ॥ त्रिशूलंपातुनोभीते र्भद्रकालिनमोस्तुते ॥ २६ ॥ हिनस्तिदैत्यतेजांसिस्वनेना-पूर्ययाजगत् ॥ सावंटापातुनोदेविपापेभ्योनःसुतानिव ॥२७॥

असुरासृग्वसापंकचर्चितस्तेकरोज्ज्वलः ॥ शुभायखड्गोभवतु चंडिकेत्वांनतावयम् ॥ २८ ॥ रोगानशेषानपहंसितुष्टादसि कामान्सकलानभीष्टान् ॥ त्वामाश्रितानांनविपन्नराणांत्वामाश्रिताह्याश्रयतांप्रयांति॥ २९ ॥ एतत्कृतंयत्कदनंत्वयाद्यधर्मद्विषांदेविमहासुराणाम् ॥ रूपैरनेकैर्बहुधात्ममूर्तिंकृत्वाऽम्बिकेतत्प्रकरोतिकान्या ॥ ३० ॥

टीका—और ज्वालावों करिकै उग्र और बड़ा भयंकर और संपूर्ण असुरोंका हिंसक ऐसा जो है भद्रकालि तुह्मारा त्रिशूलहै सो हमारी भयते रक्षा करो तुह्मारे अर्थ नमस्कार हो ॥ २६ ॥ और जो तुह्मारी घंटा अपना शब्द करिकै जगत् जो है ताहि पूर्ण कर दैत्यनके तेज जे हैं तिन्हें नष्ट कर्त्तीभई सो तुह्मारी घंटा पापोंते पुत्रोंकीसी तरह हमारी रक्षा करो ॥ २७ ॥ और असुरोंका रुधिर और मेद रूप जो कीच ता करिकै व्याप्त ऐसे तुह्मारे हाथमें जो उज्वल खड्ग सो जगत्का और हमारे कल्याणके अर्थहो हे चंडिके हम तुह्में प्रणाम कर्त्ते हैं ॥ २८ ॥ और हे भगवती तुम आराधन करिकै प्रसन्न हुई तुह्मारे आश्रित जे मनुष्य हैं तिनका संपूर्ण रोग नष्ट कर्त्तीहो और तिनको संपूर्ण मनोवांछित अर्थ देतीहो और हे देवी तुह्मारे आश्रित जे नर हैं तिनके विपत्ति नहींहै और तुह्मारे आश्रित जे नरहैं वे तुह्मारी कृपाते राजत्व देवत्व पदवीको प्राप्त होते हैं ॥ २९ ॥ फिर हे देवी इससमय ब्रह्माणीते आदि अनेक रूपों करिकै बहुत प्रकारकी अपनी मूर्त्ति जो है ताहि करिकै धर्मके द्वेषी ऐसे असुर जे हैं तिनका जो नाश यह तुमने किया सो यह असुरोंका नाश तुह्मारेते अन्य स्त्री कौन करनेको समर्थहै अर्थात् कोई नहीं॥ ३० ॥

विद्यासुशास्त्रेषुविवेकदीपेष्वाद्येषुवाक्येषुचकात्वदन्या ॥ ममत्वगर्तेतिमहांधकारेविभ्रामयत्येतदतीवविश्वम्॥ ३१ ॥ रक्षांसियत्रोग्रविषाश्चनागायत्रारयोदस्युबलानियत्र ॥ दावानलो यत्रतथाब्धिमध्येतत्रस्थितात्वंपरिपासिविश्वम् ॥ ३२ ॥ वि-

श्वेश्वरीत्वंपरिपासिविश्वंविश्वात्मिकाधारयसीतिविश्वम् ॥
विश्वेशवंद्याभवतीभवंतिविश्वाश्रयायेत्वयिभक्तिनम्राः ३३दे-
विप्रसीदपरिपालयनोऽरिभीतेर्नित्यंयथासुरवधादधुनैवसद्यः॥
पापानिसर्वजगतांप्रशमंनयाशुउत्पातपाकजनितांश्चमहोपस-
र्गान् ॥ ३४ ॥ प्रणतानांप्रसीदत्वंदेविविश्वार्तिहारिणि ॥
त्रैलोक्यवासिनामीड्येलोकानांवरदाभव॥ ३५॥

टीका–और हे देवि आन्वीक्षिकीते आदिले चतुर्दश विद्याके होतेसंते और ज्ञानके प्रकाशक मनुस्मृत्यादिक धर्मशास्त्रोंके होतेसंते और आदि वाक्योंके होतेसंते अर्थात् वैदिक पुराणोंके होतेसंते बढा है अंधकार जाके विषे ऐसा ममतारूपी जो गर्त्तहै ताके विषे यह विश्व जो है ताहि तुम भ्रमाती हो सो तुमते अन्य देवी कौनहै अर्थात् कोई नहीं ॥ ३१ ॥ और हे देवि जहां दैत्यहैं और जहां उग्रहैं विष जिनोंमें ऐसे सर्पहैं और जहां शत्रुहैं और जहां चोरोंके समूह हैं और तिसीप्रकार जहां समुद्रके विषे दावानल अग्निहै तहां पड़ेहुये जे मनुष्यहैं तिनकी तुम सर्वत्र स्मरण करीहुई तहां तहां स्थित हुई रक्षा कर्त्तीहो ॥३२॥ और हे देवि तुम विश्वेश्वरीहो याते विश्वकी रक्षा कर्त्तीहो और तुम विश्वात्मिकाहो याते विश्वको धारण कर्त्तीहो और ब्रह्मादिक जे हैं तिन करिकैभी तुम स्तुति करने योग्य हो और हे भगवती जे तुह्मारे विषे भक्ति करिकै नम्र हैं वे जगत्के धारण करनेवाले हैं ॥ ३३ ॥ और हे देवि तुम हमारे ऊपर प्रसन्न होवो जैसे शुंभासुरके वधते हमारी पालना करी तिसीप्रकार अगाडी होनेवाले शत्रुभयते नित्य हमारी रक्षा करो और संपूर्ण जगत्के पाप जे हैं तिन्हैं शीघ्र नाशको प्राप्त करो और उत्पातनका फल दान काल करिकै उत्पन्न भये जे उपद्रव तिन्हैं शीघ्र नाशको प्राप्त करो ॥ ३४ ॥ हे विश्वका दुःख हरनेवाली भक्ति करिकै नम्र जे हैं तिनके ऊपर प्रसन्नहो हे त्रैलोक्यवासियों करिकै स्तुति करने योग्य देवि तुम लोकोंको मनोवांछित वरदान देनेवाली होवो ॥ ३५ ॥

देव्युवाच ॥ वरदाहंसुरगणावरंयंमनसेच्छथ ॥ तंवृणुध्वंप्रयच्छामिजगतामुपकारकम् ॥३६ ॥ देवाऊचुः ॥ सर्वबाधाप्रशमनंत्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ॥ एवमेतत्त्वयाकार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ॥ ३७ ॥ देव्युवाच ॥ वैवस्वतेंतरे प्राप्तेअष्टाविंशतिमेयुगे ॥ शुंभोनिशुंभश्चैवान्यावुत्पत्स्येतेमहासुरौ॥३८॥ नंदगोपगृहेजातायशोदागर्भसंभवा ॥ ततस्तौनाशयिष्यामि विंध्याचलनिवासिनी ॥ ३९ ॥ पुनरप्यतिरौद्रेणरूपेणपृथिवीतले ॥ अवतीर्यहनिष्यामिवैप्रचित्तांश्चदानवान् ॥ ४० ॥

टीका—तब देवी बोलतीभई कि हे देवगणो मैं तुह्मारेको वरदान देनेवाली हूँ सो जो तुम जगत्का उपकार करनेवाला वर मन करिकै इच्छा कर्ते हो सो मांगो मैं दूंगी ॥ ३६ ॥ तब देव बोलतेभये हे संपूर्ण त्रैलोक्यकी स्वामिनी तुह्मे त्रैलोक्यके संपूर्ण दुःखका विनाश करना योग्य है और ऐसेही जगत्का उपकारक जो हमारे वैरियोंका विनाशहै सो करना योग्यहै ॥ ३७ ॥ तब देवी बोलतीभई हे देवो तुम श्रवण करो मैंने जगत्के उपकारके अर्थ ये पराक्रम किये अब फिर वैवस्वत मन्वन्तरके मध्यमें आनेवाली अट्ठाईसवी युगचौकडी प्राप्त होतेसंते अर्थात् द्वापर कलियुगकी संधिके विषे अन्य शुंभ और निशुंभ ये दो महाअसुर उत्पन्न होंगे ॥ ३८ ॥ ताके अनंतर नंद गोपिका गृहके विषे उत्पन्न भई यशोदाके गर्भते है जन्म जाको ऐसी मैं विंध्याचलके विषे निवास कर्त्तीहुई तिन दोनों शुंभ और निशुंभ दैत्योंको नष्ट करूंगी ॥ ३९ ॥ फिर उसी अट्ठाईसवी चौकडीमें द्वापरके अनन्तर कलियुगके विषे बडा भयंकर रूप करिके फिरभी पृथ्वीतलमें अवतार लेकर वैप्रचित्ति नाम जे दानवहैं तिन्हें मारूंगी ॥ ४० ॥

भक्षयंत्याश्चतानुग्रान्वैप्रचित्तान्महासुरान् ॥ रक्तादंताभविष्यंतिदाडिमीकुसुमोपमाः॥४१॥ ततोमांदेवताःस्वर्गेमर्त्यलोकेचमानवाः॥स्तुवंतोव्याहरिष्यंतिसततंरक्तदंतिकाम् ॥४२॥

भूयश्चशतवार्षिक्यामनावृष्ट्यामनंभसि ॥ मुनिभिःसंस्तुता
भूमौसंभविष्याम्ययोनिजा ॥ ४३ ॥ ततःशतेननेत्राणांनिरी
क्षिष्यामियन्मुनीन् ॥ कीर्तयिष्यंतिमनुजाःशताक्षीमितिमां
ततः ॥ ४४ ॥ ततोहमखिलंलोकमात्मदेहसमुद्भवैः॥ भरिष्या
मिसुराःशाकैरावृष्टेःप्राणधारकैः ॥ ४५ ॥

टीका—और वैप्रचित्तिनाम उग्र महाअसुर जे हैं तिन्हे भक्षण कर्ताहुई का मेरा दाडयूके पुष्पके समान रक्तदांत होंयगे ॥ ४१ ॥ ताकारणते स्वर्गलोकके विषे देवता और भूलोकके विषे मनुष्य ये मेरी निरंतर स्तुति कर्तेहुवे मेरेको रक्तदंतिका नाम करिके कहैंगे ॥ ४२ ॥ फिर शतवर्षपर्यन्त वर्षा नहींहोने करिके नदी तडागादिकमेंभी जल नहींहोतेसंते मुनियों करिके स्तुति करीहुई अयोनिज प्रकट हूँगी ॥ ४३ ॥ ताके अनंतर शत नेत्रन करिके मुनि जेहैं तिन्हे मैं देखूंगी ताकारणते मनुष्य मेरेको शताक्षी कहैंगे ॥ ४४ ॥ ताके अनंतर संपूर्ण लोक जो है ताहि अपने शरीरते उत्पद्यमान और वृष्टि होनेतक प्राणोंके धारक ऐसे जे शाकहैं तिनकरिके मैं पोषण करूंगी॥४५॥

शाकंभरीतिविख्यातिं तदायास्याम्यहंभुवि ॥ तत्रैवचवधि-
ष्यामिदुर्गमाख्यंमहासुरम् ॥ ४६ ॥ पुनश्चाहंयदाभीमंरूपं
कृत्वाहिमाचले ॥ रक्षांसिभक्षयिष्यामिमुनीनांत्राणकारणात्॥
॥४७॥तदामांमुनयःसर्वेस्तोष्यंत्यानम्रमूर्तयः ॥ भीमादेवीति
विख्यातंतन्मेनामभविष्यति ॥ ४८ ॥ यदारुणाख्यस्त्रैलोक्ये
महाबाधांकरिष्यति ॥ तदाहंभ्रामरंरूपंकृत्वासंख्येयषट्पदम्
॥ ४९ ॥ त्रैलोक्यस्यहितार्थायवधिष्यामिमहासुरम् ॥ भ्रा-
मरीतिचमांलोकास्तदास्तोष्यंतिसर्वतः ॥५०॥

टीका—तब पृथ्वीके विषे मैं शाकंभरी यह जो संज्ञाहै ताहि प्राप्तहूँगी फिर तहांही दुर्गनामा जो महाअसुरहै ताहि मारूंगी ॥ ४६ ॥ और हेदेवो फिरभी जब मैं हिमाचलके विषे घोररूप करिके मुनि जो हैं तिनकी रक्षाके

कारणते राक्षस जेहैं तिन्हैं भक्षण करूंगी ॥ ४७ ॥ तब आसमन्तात् नम्र है मूर्ति जिनोंकी ऐसे वसिष्ठादिक मुनि मेरी स्तुति करेंगे और ताकारणते भीमादेवी यह विख्यात मेरा नाम होगा ॥४८॥ और हे देवो त्रिलोकीके विषे जब अरुणनामा महासुर बडी पीडा करेगो तब मैं असंख्येय हैं भ्रमर जाके विषे ऐसो भ्रामररूप जोहै ताहि करिकै त्रिलोकीके हितके अर्थ अरुणासुर जोहै ताहि मारूंगी तब लोक सर्वत्र भ्रामरीनाम करिकै मेरी स्तुति करैंगे ॥ ४९ ॥ ५० ॥

इत्थंयदायदाबाधादानवोत्थाभविष्यति ॥ तदातदावतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम् ॥५१॥ इतिश्रीमार्कंडेयपुराणेसावर्णिके मन्वंतरेदेवीमाहात्म्ये नारायणीस्तुतिर्नामैकादशोऽध्यायः॥११॥

टीका—और हे देवो जब जब लोकोंको दानवोंते पीडा उत्पन्न होगी तब तब अवतार लेकर शत्रुवोंका नाश करूंगी ॥ ५१ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वंतरेदेवीमाहात्म्ये टीकायां नारायणीस्तुतिर्नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

देव्युवाच ॥ एभिःस्तवैश्चमांनित्यंस्तोष्यतेयःसमाहितः ॥ तस्याहंसकलांबाधांनाशयिष्याम्यसंशयम् ॥ १ ॥ मधुकैटभनाशंचमहिषासुरघातनम् ॥ कीर्तयिष्यंतियेतद्वद्वधंशुंभनिशुंभयोः ॥ २ ॥ अष्टम्यांचचतुर्दश्यांनवम्यांचैकचेतसः॥ स्तोष्यंतिचैवयेभक्त्याममामाहात्म्यमुत्तमम् ॥ ३ ॥ नतेषांदुष्कृतंकिंचिद्दुष्कृतोत्थानचापदः ॥ भविष्यतिनदारिद्र्यंनचैवेष्टवियोजनम् ॥ ४ ॥ शत्रुतोनभयंतस्यदस्युतोवानराजतः॥ नशस्त्रानलतोयौघात्कदाचित्संभविष्यति ॥ ५ ॥

टीका—फिरभी देवी बोलतीभई कि हे देवो इन स्तोत्रों करिकै एकाग्रचित्त हुवा जो कोई नित्य मेरी स्तुति करेगा तिसकी निस्संदेह संपूर्ण बाधा मैं नष्टकरूंगी ॥ १ ॥ और मधुकैटभका है नाश जाके विषे और महिषासुर-

का घात जाके विषे और तिसीप्रकार शुंभ निशुंभका है वधप्रतिपादन जाके विषे ऐसे जो मेरो उत्तम माहात्म्य ताहि अष्टमी और चतुर्दशी और नवमी इन तिथियोंके विषे जे कोई पुरुष एकाग्र चित्तहुवे भक्ति करिके सुनेंगे अथवा पाठ करेंगे तिनका संपूर्ण पाप नष्टहोगा और पापोंते उठी जे आपत्ति है वे सब नष्ट होगी और तिनके कभी दरिद्रता नहींहोगी और कभी पुत्र धनादिकोंते वियोग नहींहोगा ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ और तिनको शत्रुते और चोरते और राजते कभी भय नहीं होगा और शस्त्रते और अग्निते और जलके प्रवाहते कभी तिन्होंका घात नहीं होनेका ॥ ५ ॥

तस्मान्ममैतन्माहात्म्यंपठितव्यंसमाहितैः॥ श्रोतव्यंचसदाभक्त्यापरंस्वस्त्ययनंमहत् ॥ ६ ॥ उपसर्गानशेषांस्तुमहामारीसमुद्भवान् ॥ तथात्रिविधमुत्पातंमाहात्म्यंशमयेन्मम ॥७॥ यत्रैतत्पठ्यतेसम्यङ्नित्यमायतनेमम ॥ सदानतद्विमोक्ष्यामिसांनिध्यंतत्रमेस्थितम् ॥ ८ ॥ बलिप्रदानेपूजायामग्निकार्ये महोत्सवे ॥ सर्वंममैतच्चरितमुच्चार्यंश्राव्यमेवच ॥ ९ ॥ जानताजानतावापिबलिपूजांतथाकृताम् ॥ प्रतीक्षिष्याम्यहंप्रीत्यावह्निहोमंतथाकृतम् ॥ १० ॥

टीका—ताकारणते एकाग्रचित्त पुरुषोंको प्रकृष्ट कल्याणकारक पूजनीय ऐसा मेरा माहात्म्य जोहै सो भक्ति करिके सदा श्रवण करने योग्यहै ॥६॥ और मेरा माहात्म्य जोहै ताहि श्रवण कर्तेहुये और पठन कर्तेहुये जे पुरुषहैं तिनके महामारीते उत्पन्न भये जे संपूर्ण उपद्रव तिन्हें मेरा माहात्म्य दूर करैहै और तिसीप्रकार अध्यात्म अधिभूत अधिदैव अर्थात् शरीरोत्पन्न व्याध्यादिक और प्रेतादिजनित भयभ्रमादिक और देवकृत दारिद्र्यादिक ये तीन प्रकारको जो उत्पातहै ताहि मेरा माहात्म्य दूर करैहै ॥ ७ ॥ और जहां मेरे मंदिरके विषे मेरा माहात्म्य पुरुषों करिके शुद्धरीतिसे पढाजाताहै उस स्थानको मैं नहीं छोडोगी और उस गृहके विषे मेरा सांनिध्य

स्थितहै॥८॥और महानवमी इत्यादिक तिथियोंके विषे छाग मेषादि पशुवों- करिकै जो देवनिमित्तक बलिदान तासमयके विषे और हवनकालके विषे और पुत्रजन्मविवाहादिक महोत्सवोंके विषे संपूर्ण मेरा माहात्म्य मनुष्योंके पढने योग्यहै और श्रवण करने योग्यहै ॥ ९ ॥ और ता प्रकार करिकै गुरूपदिष्ट कर्त्तव्यता जोहै ताहि जानता और नहीं जानता जो भक्ति- मान् पुरुषहै ता करिकै किया जो बलिदान और पूजा और तिसीप्रकार अ- ग्निके विषे तिलमध्वादिक हवन तिन्हे मैं प्रीतिकरिकै स्वीकार करूंगी ॥ १०॥

शरत्कालेमहापूजाक्रियतेयाचवार्षिकी ॥ तस्यांममैतन्माहा- त्म्यंश्रुत्वाभक्तिसमन्वितः ॥ ११ ॥ सर्वबाधाविनिर्मुक्तोधनधा- न्यसुतान्वितः ॥ मनुष्योमत्प्रसादेनभविष्यतिन्संशयः॥१२॥ श्रुत्वाममैतन्माहात्म्यंतथाचोत्पत्तयःशुभाः ॥ पराक्रमंचयुद्धे- षुजायतेनिर्भयःपुमान्॥ १३ ॥ रिपवःसंक्षयंयांतिकल्याणंचो- पपद्यते ॥ नंदतेचकुलंपुंसांमाहात्म्यंममश्रृण्वताम् ॥ १४ ॥ शांतिकर्मणिसर्वत्रतथादुःस्वप्नदर्शने ॥ ग्रहपीडासुचोग्रासु माहात्म्यंश्रृणुयान्मम ॥ १५ ॥

टीका—जो आश्विनशुक्लप्रतिपदाते लेकर शरत्कालके विषे महापूजा क- रीजाती और जो चैत्रशुक्ल प्रतिपदाते लेकर वार्षिकी पूजा करीजातीहै ताके विषे मेरा यहजो चरित्रत्रयलक्षणमाहात्म्यहै ताहि भक्तियुक्त हुवा मनुष्य सुनकर मेरी कृपाते संपूर्ण बाधा करिकै विनिर्मुक्त और धन धान्य सुत करिकै युक्तहोगा इसमें संदेह नहीं ॥ ११ ॥ १२ ॥ और मेरा यह माहात्म्य जोहै ताहि गुरुते सुनकर और तिसीप्रकार जगत्का अभ्युदय करनेवाली ब्रह्माण्या दि शक्तिरूप जे मेरी उत्पत्तिहैं तिन्हैं और मेरे वीरपराक्रम जे हैं तिन्हैं सुनकर पुरुष युद्धनके विषे निर्भय होताहै ॥ १३ ॥ और मेरा माहात्म्य जोहै ताहि सुनतेहुवे जे पुरुषहैं तिनके शत्रु नाशको प्राप्त होतेहैं और तिनके मंगल उत्पन्न होताहै और तिनका कुल समृद्धिको प्राप्त होताहै ॥ १४ ॥

और उपद्रवोका संपूर्ण शांतिकर्मके विषे और तिसीप्रकार दुष्टस्वप्न दीखनेमें और बहुत अनिष्ट ग्रहों करिके जे पीडाहै तिनमें पुरुष मेरा माहात्म्य जो है ताहि सुनें ॥ १५ ॥

उपसर्गाःशमंयांतिग्रहपीडाश्चदारुणाः॥दुःस्वप्नंचनृभिर्दृष्टंसुस्वप्नमुपजायते ॥ १६ ॥ बालग्रहाभिभूतानांबालानांशांतिकारकम् ॥ संघातभेदेचनृणांमैत्रीकरणमुत्तमम् ॥ १७॥ दुर्वृत्तानामशेषाणांबलहानिकरंपरम् ॥ रक्षोभूतपिशाचानांपठनादेवनाशनम् ॥१८॥ सर्वंममैतन्माहात्म्यंममसन्निधिकारकम्॥ सर्वंकृत्स्नमेतदादिमध्यावसानलक्षणं ॥ १९ ॥ पशुपुष्पार्घधूपैश्चगंधदीपैस्तथोत्तमैः ॥ विप्राणांभोजनैर्होमैः प्रेक्षणीयैरहर्निशम् ॥ २० ॥

टीका—फिर मेरे माहात्म्यके श्रवणते उपद्रव शांतिको प्राप्त होताहै और शनि आदि ग्रहों करिके जे कठोर पीडा हैं ते शांत होतीहैं और मनुष्योंने देखा जो खोटा स्वप्न है सो श्रेष्ठस्वप्न होताहै ॥ १६ ॥ और श्मशानमें रहनेवाले ऐसे पूतनाते आदि लेकर जे बालग्रह तिन करिके पीडित जे बालक तिनके मेरा माहात्म्यश्रवण शांतिका कारणहै और एक कार्य करनेवाले पुरुषोंके समूहमें भेद होतिसंते मेरा माहात्म्यका श्रवणही उत्तम मैत्रीका साधन है ॥ १७ ॥ फिर मेरा माहात्म्य कैसाहै कि संपूर्ण दुष्टोंके बलकी हानि करनेवाला और पठनमात्रते रक्षो भूत पिशाच इनको दूर करनेवाला ॥ १८ ॥ और सर्वं कृत्स्नं एतत् इसप्रकार आदि मध्य अंतमें है चिन्ह जाके विषे ऐसा मेरा यह संपूर्ण माहात्म्य मनुष्यको मेरे समीप प्राप्त करनेवालाहै॥१९॥ और पशु पुष्प अर्घ्य और धूप इन करिकै और गंध दीप इन करिकै और तिसीप्रकार ब्राह्मणोंको तरह तरहके उत्तम जिमानो करिकै और हवनोंकरिकै और तिसीप्रकार हरवखत नृत्य गीतादिकनकरिकै ॥ २० ॥

अन्यैश्चविविधैर्भोगैःप्रदानैर्वत्सरेणया ॥ प्रीतिर्मेक्रियतेसास्मि-

न सकृदुच्चरितेश्रुते ॥ २१ ॥ श्रुतंहरतिपापानितथारोग्यं प्रयच्छति ॥ रक्षांकरोतिभूतेभ्योजन्मनांकीर्तनंमम ॥ २२ ॥ युद्धेषुचरितंयन्मेदुष्टदैत्यनिबर्हणम् ॥ तस्मिञ्छ्रुतेवैरिकृतं भयंपुंसांनजायते ॥ २३ ॥ युष्माभिःस्तुतयोयाश्चयाश्चब्रह्म- र्षिभिः कृताः ॥ ब्रह्मणाचकृतायास्ताःप्रयच्छंतुशुभांगतिम् ॥ ॥ २४ ॥ अरण्येप्रांतरेवापिदावाग्निपरिवारितः ॥ दस्युभिर्वा वृतःशून्येगृहीतोवापिशत्रुभिः॥२५॥सिंहव्याघ्रानुयातोवावने वावनहस्तिभिः ॥ राज्ञाक्रुद्धेनचाज्ञप्तोवध्योबंधगतोपिवा ॥ ॥२६॥ आघूर्णितोवावातेनस्थितःपोतेमहार्णवे॥ पतत्सुचापि शस्त्रेषुसंग्रामेभृशदारुणे ॥ २७ ॥ सर्वाबाधासुघोरासुवेदनाभ्य र्दितोपिवा ॥ स्मरन्ममैतच्चरितंनरोमुच्येतसंकटात् ॥ २८ ॥

टीका—और तिसीप्रकार तरह तरहके अन्य भोगों करिकै और तिसी- प्रकार मेरी प्रीतिके अर्थ दानों करिकै जो संपूर्ण कामनाको देनेवाली प्रीति करी जातीहै सो प्रीति एकवार उच्चारण किया और श्रवण किया जो मेरा माहात्म्य है ताके विषे भक्तिकरिके भक्तोंने करीजातीहै ॥ २१ ॥ फिर श्रवण कियाहुवा मेरा माहात्म्य पाप जे हैं तिन्है दूरकर्त्ताहै और तिसीप्रकार सेवन करनेवालोंको आरोग्य देताहै और मेरे जे ब्रह्माणी आदि रूप करिके प्रादुर्भाव है तिनका जो कीर्तन सो भक्तोंकी भूत पिशा- चादिकनसे रक्षा कर्त्ताहै ॥ २२ ॥ और मेरा जो दुष्ट दैत्यनको हनन करने- वाला चरित्र होताभया ताके श्रवण करेसंते श्रवण करनेवाले पुरुषोंको युद्ध- नके विषे वैरि करिके भय नहीं होताहै ॥ २३ ॥ और हे देवो जे तुमने मेरी स्तुति करीहै और ताके पहिले सुमेधा मार्कण्डेय इत्यादि ब्रह्मर्षियोंने जे मेरी स्तुति करीहै और मधु और कैटभ इन दैत्योंके भयते ब्रह्माने जे मेरी स्तुति करी है वे स्तुति मनुष्यों करिके पढीहुई मनुष्य जे हैं तिनके अर्थ शुभगति जो है ताहि देगी ॥ २४ ॥ अरण्यके विषे जो वर्त्तमान और तिसीप्रकार म-

तुम्योंकरिकै शून्य मार्गके विषे वर्त्तमान और तिसीप्रकार दावाग्नि करिकै चौतरफ रुकाहुवा और तिसीप्रकार चौरों करिके रोकाहुवा और तिसी प्रकार उद्यानमें शत्रुवों करिके ग्रहण कियाहुवा वनमें मारनेंको सिंह भगेरो करिके अनुयातहुवा और तिसीप्रकार हाथियों करिके मारनेंको पीछे दौडा गया हुवा और क्रोधयुक्त राजाने यह मारने योग्यहै इसप्रकार आज्ञा दिया हुवाभी और तिसीप्रकार कैदीखानामें प्राप्तहुवा और तिसीप्रकार समुद्रके विषे नौकामें स्थित पवन करिके व्याकुल हुवा और बडे भयंकर संग्रामके विषे शस्त्रोंके पडतेसंतेभी वर्त्तमानहुवा और तिसीप्रकार सम्पूर्ण वेदना जे हैं तिनके विषे तिस दुःखका अनुभवोंके विषे वर्त्तमान जो मनुष्य सो मेरा यह माहात्म्य जो है ताहि स्मरण करताहुवा संकटते छूटजाय२५।२६।२७।२८॥

ममप्रभावात्सिंहाद्यादस्यवोवैरिणस्तथा ॥ दूरादेवपलायंते स्मरतश्चरितंमम॥२९॥ऋषिरुवाच॥ इत्युक्त्वासाभगवतीचंडि काचंडविक्रमा ॥ पश्यतामेवदेवानांतत्रैवांतरधीयत ॥ ३० ॥

टीका—और मेरे प्रभावते सिंह व्याघ्रादिक और चौर और तिसीप्रकार शत्रु ये सब मेरा चरित्र स्मरण कर्ताहुवा जो पुरुष है ताकेसकासते डरपके भाग जातेहैं ॥ २९ ॥ तब ऋषि बोले हे सुरथराजन् प्रचंड है पराक्रम जाको ऐसी चंडिका देवतावोंके प्रति इस प्रकार कहकर देवतावोंके देखतेहुवेंही तहां अंतर्धान होतीभई ॥ ३० ॥

तेपिदेव्यानिरातंकाः स्वाधिकारान्यथापुरा ॥ यज्ञभागभुजः सर्वेचक्रुर्विनिहतारयः ॥ ३१ ॥ दैत्याश्चदेव्यानिहतेशुंभेदे- वरिपौयुधि ॥ जगद्विध्वंसकेतस्मिन्महोग्रेतुलविक्रमे ॥ निशुंभे चमहावीर्येशेषाःपातालमाययुः ॥ ३२ ॥ एवंभगवतीदेवीसा नित्यापिपुनःपुनः ॥संभूयकुरुतेभूपजगतःपरिपालनम्॥३३॥ तयैतन्मोह्यतेविश्वंसैवविश्वंप्रसूयते ॥ सायाचिताचविज्ञानं तुष्टाऋद्धिंप्रयच्छति ॥३४॥ व्याप्तंतयैतत्सकलंब्रह्मांडंमनुजे-

नृ सकृदुच्चरितेश्रुते ॥ २१ ॥ श्रुतंहरतिपापानितथारोग्यं प्रयच्छति ॥ रक्षांकरोतिभूतेभ्योजन्मनांकीर्तनंमम ॥ २२ ॥ युद्धेषुचरितंयन्मेदुष्टदैत्यनिबर्हणम् ॥ तस्मिञ्छ्रुतेवैरिकृतं भयंपुंसांनजायते ॥ २३ ॥ युष्माभिःस्तुतयोयाश्चयाश्चब्रह्मर्षिभिः कृताः ॥ ब्रह्मणाचकृतायास्ताःप्रयच्छंतुशुभांगतिम् ॥ ॥ २४ ॥ अरण्येप्रांतरेवापिदावाग्निपरिवारितः ॥ दस्युभिर्वा वृतःशून्येगृहीतोवापिशत्रुभिः ॥२५॥ सिंहव्याघ्रानुयातोवावने वावनहस्तिभिः ॥ राज्ञाक्रुद्धेनचाज्ञप्तोवध्योबंधगतोपिवा ॥ ॥२६॥ आघूर्णितोवावातेनस्थितःपोतेमहार्णवे॥ पतत्सुचापि शस्त्रेषुसंग्रामेभृशदारुणे ॥ २७ ॥ सर्वाबाधासुघोरासुवेदनाभ्यर्दितोपिवा ॥ स्मरन्ममैतच्चरितंनरोमुच्येतसंकटात् ॥ २८ ॥

टीका—और तिसीप्रकार तरह तरहके अन्य भोगों करिकै और तिसीप्रकार मेरी प्रीतिके अर्थ दानों करिकै जो संपूर्ण कामनाको देनेवाली प्रीति करी जातीहै सो प्रीति एकवार उच्चारण किया और श्रवण किया जो मेरा माहात्म्य है ताके विषे भक्तिकरिके भक्तोंने करीजातीहै ॥ २१ ॥ फिर श्रवण कियाहुवा मेरा माहात्म्य पाप जे हैं तिन्है दूरकर्त्ताहै और तिसीप्रकार सेवन करनेवालोंको आरोग्य देताहै और मेरे जे ब्रह्माणी आदि रूप करिके प्रादुर्भाव है तिनका जो कीर्त्तन सो भक्तोंकी भूत पिशाचादिकनसे रक्षा कर्त्ताहै ॥ २२ ॥ और मेरा जो दुष्ट दैत्यनको हनन करनेवाला चरित्र होताभया ताके श्रवण करेसंते श्रवण करनेवाले पुरुषोंको युद्धनके विषे वैरि करिके भय नहीं होताहै ॥ २३ ॥ और हे देवो जे तुमने मेरी स्तुति करीहै और ताके पहिले सुमेधा मार्कण्डेय इत्यादि ब्रह्मर्षियोंने जे मेरी स्तुति करीहै और मधु और कैटभ इन दैत्योंके भयते ब्रह्माने जे मेरी स्तुति करी है वे स्तुति मनुष्यों करिके पढीहुई मनुष्य जे हैं तिनके अर्थ शुभगति जो है ताहि देगी ॥ २४ ॥ अरण्यके विषे जो वर्त्तमान और तिसीप्रकार म-

दुष्टोंकरिके शून्य मार्गके विषे वर्त्तमान और तिसीप्रकार दावाग्नि करिके चौतरफ रुकाहुवा और तिसीप्रकार चोरों करिके रोकाहुवा और तिसी प्रकार उद्यानमें शत्रुवों करिके ग्रहण कियाहुवा वनमें मारनेंको सिंह भगेरो करिके अनुयातहुवा और तिसीप्रकार हाथियों करिके मारनेंको पीछे दौडा गया हुवा और क्रोधयुक्त राजाने यह मारने योग्यहै इसप्रकार आज्ञा दिया हुवाभी और तिसीप्रकार कैदीखानामें प्राप्तहुवा और तिसीप्रकार समुद्रके विषे नौकामें स्थित पवन करिके व्याकुल हुवा और बडे भयंकर संग्रामके विषे शस्त्रोंके पडतेसंतेभी वर्त्तमानहुवा और तिसीप्रकार सम्पूर्ण वेदना जे हैं तिनके विषे तिस दुःखका अनुभवोंके विषे वर्त्तमान जो मनुष्य सो मेरा यह माहात्म्य जो है ताहि स्मरण करताहुवा संकटते छूटजाय२५।२६।२७।२८॥

ममप्रभावात्सिंहाद्यादस्यवोवैरिणस्तथा ॥ दूरादेवपलायंते स्मरतश्चरितंमम॥२९॥ऋषिरुवाच॥ इत्युक्त्वासाभगवतीचंडिकाचंडविक्रमा ॥ पश्यतामेवदेवानांतत्रैवांतरधीयत ॥ ३० ॥

टीका—और मेरे प्रभावते सिंह व्याघ्रादिक और चौर और तिसीप्रकार शत्रु ये सब मेरा चरित्र स्मरण कर्ताहुवा जो पुरुष है ताकेसकासते डरपके भाग जातेहैं ॥ २९ ॥ तब ऋषि बोले हे सुरथराजन् प्रचंड है पराक्रम जाको ऐसी चंडिका देवतावोंके प्रति इस प्रकार कहकर देवतावोंके देखतेहुवेंही तहां अंतर्धान होतीभई ॥ ३० ॥

तेपिदेव्यानिरातंकाः स्वाधिकारान्यथापुरा ॥ यज्ञभागभुजः सर्वेचक्रुर्विनिहतारयः ॥ ३१ ॥ दैत्याश्चदेव्यानिहतेशुंभेदेवरिपौयुधि ॥ जगद्विध्वंसकेतस्मिन्महोग्रेतुलविक्रमे ॥ निशुंभेचमहावीर्येशेषाःपातालमाययुः ॥ ३२ ॥ एवंभगवतीदेवीसानित्यापिपुनःपुनः ॥संभूयकुरुतेभूपजगतःपरिपालनम्॥३३॥ तयैतन्मोह्यतेविश्वंसैवविश्वंप्रसूयते ॥ सायाचिताचविज्ञानं तुष्टाऋद्धिंप्रयच्छति ॥३४॥ व्याप्तंतयैतत्सकलंब्रह्मांडंमनुजे-

श्वर ॥ महाकाल्यामहाकालेमहामारीस्वरूपया ॥ ३५ ॥

टीका–फिर ताके अनंतर देवी करिके मारेगयेहैं शत्रु जिनोंके ऐसे वे देवभी जैसे पहिले निर्भयथे तिसीप्रकार निर्भयहुवे यज्ञोंके भाग भोगतेहुये अपने जे अधिकार अर्थात् व्यापार तिन्हे कर्तेभये॥ ३१॥ फिर हे राजन् देवीने जगत्का विध्वंस करनेंवाला देवतावोंके प्रबलशत्रु शुंभको युद्धके विषे मारेसंते और निशुंभको मारेसंते फिर शेषदैत्य भयभीत हो पातालको भागजाते भये ॥ ३२ ॥ हेराजन् भगवती नित्यभीहै परंतु इसप्रकार वारंवार अवतार लेकर जगत्का परिपालन कर्तीहै ॥ ३३ ॥ और तिसी करिके यह जगत् रचाजाताहै और तिसी करिके मोहाजाताहै सो भगवती भक्तोंकरिकै प्रार्थितहुई भक्तोंके प्रति ज्ञान देतीहै और प्रसन्नहुई संपत्ति देतीहै ॥ ३४ ॥ फिर हेराजन् महामारीस्वरूप जो महाकालीहै ता करिकै प्रलयकालके विषे यह संपूर्ण ब्रह्मांड व्याप्त होताहै ॥ ३५ ॥

सैवकालेमहामारीसैवसृष्टिर्भवत्यजा॥ स्थितिंकरोतिभूतानांसैवकालेसनातनी॥३६॥ भवकालेनृणांसैवलक्ष्मीर्वृद्धिप्रदागृहे॥ सैवाभावेतथालक्ष्मीर्विनाशायोपजायते ॥ ३७ ॥ स्तुतासंपूजितापुष्पैर्धूपगंधादिभिस्तथा ॥ ददातिवित्तंपुत्रांश्चमतिंधर्मेगतिंशुभाम्॥३८॥ इति मार्कंडेयपुराणेसावर्णिकेमन्वंतरेदेव्याश्चरितमाहात्म्यं भगवतीवाक्यंनामद्वादशोध्यायः ॥ १२ ॥

टीका–और वह नित्य भगवती प्रलयकालके विषे महामारी कहीजातीहै और सृष्टिकालमें सर्गशक्ति कही जातीहै और वही जगत्का पालन कर्तीहै याते पालनशक्ति कहीजातीहै ॥ ३६ ॥ और वही मनुष्योंके घरोमे संपत्तिकालके विषे लक्ष्मीके वृद्धिको देनेवालीहै फिर वही आपत्कालके विषे लक्ष्मीका नाशके अर्थ अलक्ष्मी होजातीहै ॥ ३७ ॥ और हेराजन् वह भगवती मनुष्यों करिकै स्तुति करीहुई और तिसीप्रकार पुष्प गंध धूप इत्यादिकों करिकै पूजितहुई तिन भक्त मनुष्योंके अर्थ धन और पुत्र और धर्म

के विषे श्रेष्ठ बुद्धि और शुभगति ये सर्ववस्तु देतीहै ॥ ३८ ॥ इति श्रीमार्कंडेयपुराणेसावर्णिकेमन्वंतरे देवीमाहात्म्ये भाषाटीकायांद्वादशोध्यायः॥१२॥

ऋषिरुवाच ॥ एतत्तेकथितंभूपदेवीमाहात्म्यमुत्तमम् ॥ एवंप्रभावासादेवीययेदंधार्यतेजगत् ॥ विद्यातथैवक्रियते भगवद्विष्णुमायया ॥ १ ॥ तयात्वमेषवैश्यश्चतथैवान्येविवेकिनः॥मोह्यंतेमोहिताश्चैवमोहमेष्यंतिचापरे॥ २ ॥ तामुपैहि महाराजशरणंपरमेश्वरीम्॥आराधितासैवनृणांभोगस्वर्गापवर्गदा ॥ ३ ॥ मार्कंडेयउवाच ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वासुरथः सनराधिपः ॥ प्रणिपत्यमहाभागंतमृषिंसंशितव्रतम् ॥ ४ ॥ निर्विण्णोतिममत्वेनराज्यापहरणेनच ॥ जगामसद्यस्तपसे सचवैश्योमहामुने ॥ ५ ॥

टीका—फिर ऋषि बोलतेभये हेसुरथराजन् तुह्मारे अर्थ सर्ववस्तुका साधन देवीका श्रेष्ठ माहात्म्य कहा सो देवी ऐसी है के जा करिके यथायोग्य कालके विषे यह जगत् रचाजाताहै और पालन कियाजाताहै और संहार कियाजाताहै ॥ १ ॥ और तिस प्रकार भगवद्विष्णुकी माया चंडिका करिकेही ज्ञान उत्पादन कियाजाताहै और ताकरिके तुम और यह वैश्य और तिसी प्रकार अन्य जे विवेकीहैं ते सब मोहेजातेहैं और मोहितहैं और मोहकों प्राप्त होंगें ॥ २ ॥ हेराजन् ऐसी भगवतीकी तुम शरण प्राप्तहो वही भगवती मनुष्यों करिके आराधन करीहुई मनुष्योंको भोग और स्वर्ग और मोक्ष देनेंवालीहै ॥३॥ तब मार्कण्डेयऋषि बोलतेभये कि हे जैमिने इस प्रकार सुमेधाऋषिका वचन सुनकर सुरथ राजा संपादन कियोहै व्रत जाने ऐसा महाभाग सुमेधाऋषि जोहै ताहि प्रणाम करिके पुत्र मित्र कलत्रादिनमें अति मोह करिके और शत्रुवों करिके राज्यके हरनेसे दुःखितहुवा तपके अर्थ वनको जाताभया और तिसीप्रकार वह वैश्यभी जाताभया ॥ ४ ॥ ५ ॥

संदर्शनार्थमंबायानदीपुलिनमास्थितः ॥ सचवैश्यस्तपस्ते

पेदेवीसूक्तंपरंजपन् ॥ ६ ॥ तौतस्मिन्पुलिनेदेव्याःकृत्वामू-
र्तिमहीमयीम् ॥ अर्हणांचक्रतुस्तस्याःपुष्पधूपाग्नितर्पणैः॥७॥
निराहारौयताहारौतन्मनस्कौसमाहितौ ॥ ददतुस्तौबलिंचैव
निजगात्रासृगुक्षितम् ॥८॥ एवंसमाराधयतोस्त्रिभिर्वर्षैर्यतात्म
नोः ॥ परितुष्टाजगद्धात्रीप्रत्यक्षंप्राहचंडिका ॥ ९ ॥ देव्यु-
वाच ॥यत्प्रार्थ्यतेत्वयाभूपत्वयाचकुलनंदन॥मत्तस्तत्प्राप्यतां
सर्वंपरितुष्टाददामितत् ॥ १० ॥

टीका—फिर वहां जाके देवीको प्रत्यक्ष करनेंके वास्ते नदीके तटपर सु-
रथराजा और वैश्य देवीसूक्त जपता हुवा, तप कर्तेभये ॥ ६ ॥ फिर वे तिस
तटके विषे भगवतीकी मृन्मयी मूर्त्ति बनाके पुष्प धूप होम तर्पण इन करिकै
तिसकी पूजा कर्तेभये ॥ ७ ॥ फिर हविष्य भोजन करनेंवाले और निवृत्त
किया है विषयोंते मन जिनोंने और ताके विषेही ध्यान करनेंको है मन जि-
नोंका और सावधान ऐसे जे सुरथराजा और वैश्य वे भगवतीके अर्थ अपने
शरीरके मांसकी बलि देतेभये ॥ ८ ॥ इसप्रकार भगवतीके विषे मन लगाये
तीन वर्षोंकरिके भगवतीका सम्यक् प्रकार आराधन कर्ते जे सुरथराजा
और समाधिनामा वैश्य तिनके तप करिकै प्रसन्न हुई जगतोंका धारण कर-
नेंवाली चंडिका प्रत्यक्ष होकर बोलतीभई ॥ ९ ॥ देवी बोलतीभई कि हे
सुरथराजन् और हे समाधि वैश्य जो तुम याचना कर्तेहो सो संपूर्ण वस्तु मे-
रेते प्राप्तहो मैं प्रसन्नहुई सब वस्तु दुंगी ॥ १० ॥

मार्कंडेयउवाच ॥ ततोवव्रेनृपोराज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मनि ॥
अत्रैवचनिजंराज्यंहतशत्रुबलंबलात् ॥ ११ ॥ सोपिवैश्यस्त
तोज्ञानंवव्रेनिर्विण्णमानसः ॥ ममेत्यहमितिप्राज्ञःसंगविच्युति-
कारकम् ॥ १२ ॥ देव्युवाच ॥ स्वल्पैरहोभिर्नृपतेस्वंरा-
ज्यंप्राप्स्यतेभवान् ॥ हत्वारिपूनस्स्वलितंतवतत्रभविष्यति ॥
॥ १३ ॥ मृतश्चभूयःसंप्राप्यजन्मदेवाद्विवस्वतः ॥ साव

र्णिकोनोमममनुर्भवान्भुविभविष्यति ॥ १४ ॥ वैश्यवर्यत्वया-
यश्चवरोस्मत्तोभिवांच्छितः ॥ तंप्रयच्छामिसंसिद्धयैतवज्ञानं
भविष्यति ॥ १५ ॥

टीका—तव मार्कण्डेय ऋषि बोले हे जैमिने ताके अनंतर सुरथराजा अगले जन्मके विषे भगवतीके सकाशते अचल राज्य मांगतोभयो और फिर इसी अपनें नगरके विषे नष्ट हुवाहे शत्रुबल जाके विषे ऐसो अपनो राज्य मांगतो भयो ॥ ११ ॥ ताके अनंतर फिर वह बुद्धिमान् वैश्यभी संसारके दुःखों करिके उद्विग्नचित्तहुवा यह धनादि मेरा हे और इनका मैं स्वामी हूँ इसप्रकारके अध्यास करिकै उत्पन्न जो संग है ताको नष्ट करनेंवालो ऐसो ज्ञान भगवतीके सकाशते मांगतोभयो ॥ १२ ॥ फिर देवी बोलती भई कि हे सुरथ राजन् थोडेसे दिनो करिके शत्रुको मार तुम अपनें राज्यको प्राप्त होंगे फिर तहां तुह्मारा अचल राज्य होगा ॥ १३ ॥ और मरता ही फिर सूर्यके सकाशते सवर्णाके विषे जन्म लेकर पृथ्वीके विषे तू सावर्णिनामा मनु होगा ॥ १४ ॥ और हे वैश्यवर्य तुमनें जो मेरेसे वरदान मांगा तांहि परमरूपकी प्राप्तिके अर्थ देतीहूं तेरेको ज्ञान होगा ॥ १५ ॥

21337 S N...

मार्कंडेयउवाच ॥ इतिदत्वातयोर्देवीयथाभिलषितंवरम् ॥
बभूवांतर्हितासद्योभक्त्यातांभ्यामभिष्टुता ॥ १६ ॥ एवंदेव्या
वरंलब्ध्वासुरथःक्षत्रियर्षभः ॥ सूर्याज्जन्मसमासाद्यसावर्णिर्भवि
तामनुः ॥ १७ ॥ इतिश्रीमार्कंडेयपुराणेसावर्णिकेमन्वंतरेदेवी
माहात्म्ये सुरथवैश्ययोर्वरप्रदानंनामत्रयोदशोध्यायः ॥१३॥

टीका—तब मार्कंडेयऋषि बोलतेभये कि हे जैमिने तिनोकरिके भक्तिते स्तुति किईहुई देवी इसप्रकार सुरथराजाको और समाधिवैश्यको जैसा वांछितथा वैसा वर देकर उसी वखत अंतर्द्धान होतीभई ॥ १६ ॥ इसप्रकार क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ सुरथराजा भगवतीके सकाशते वरको प्राप्तहोकर ताके

अनंतर सूर्यके सकाशते सवर्णामें जन्मको प्राप्त होकर सावर्णिनामा मनु होगा ॥ १७ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणेसावर्णिकेमन्वंतरेदेवीमाहात्म्येभाषाटीकायां त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

राठदेशांतर्गतलघुजवणायचाख्यग्रामनिवासिनाश्रीमत्पण्डितबदरीप्रसादात्मजेनपण्डितमथुरारामशर्म्मणामुंबापुर्य्याम् खशरखगक्ष्मामितेवत्सरेसप्तशत्या भाषाटीकानिर्मिता ॥

इदं पुस्तकं श्रीकृष्णदासात्मजखेमराजेन मुंबय्यां स्वकीये
" श्रीवेङ्कटेश्वर " मुद्रणालये मुद्रयित्वा प्रकाशितम् ।
शके १८१५ संवत् १९५०

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
खेमराज श्रीकृष्णदास
" श्रीवेङ्कटेश्वर " छापाखाना—मुम्बई.